पता : ८/१७ पूर्वी पटेलनगर
नई दिल्ली-८

मूल्य : साढ़े सात रुपये

संस्करण : प्रथम, १९७२
सम्पादन-नियोजन : श्रीकान्त व्यास
आवरण : ज्योतिष दत्त गुप्ता
प्रकाशक : लिपि प्रकाशन, एफ ३/२४, कृष्णनगर, दिल्ली-५१
मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

DOOSARA DARWAZA by Dr. Lakshmi Narain Lal
Short Plays *Rs. 7.50*

जगदीशचन्द्र माथुर
को सप्रेम

मेरा अपना रंगमंच

मेरे लिए रंगमंच उस यौवन की तरह है, जो एक गहरे अनुराग के साथ, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की छाप ग्रहण करने के लिए ललकता है। इतना ही नहीं, मेरे लिए यह रंगमंच मेरी निजी चेतना-सा वन गया है। मैं इसे उस तरह नहीं देख-समझ पाता, जैसे रंग समीक्षक या कोई कला पारखी इसे देखता है। इसके विपय में विचार-विवेचन कर कुछ निष्कर्ष निकाल कर, कुछ स्थापनाएं कर वह जिस तरह इससे मुक्त हो जाता है, मैं नहीं हो पाता। यह हर क्षण मुझमें वसा रहता है, फल में सुगंधि की तरह, यौवन में उछाह और भोग में अनुभव की तरह, और रूप में मादकता की तरह। मैं वारहा इससे मुक्ति चाहता हूं—एक क्षण के लिए छुटकारा, पर मैं इससे निस्संग तक नहीं हो पाता। यह मेरे लिए नरक है। यही मेरे लिए स्वर्ग है। यह पग-पग पर मेरा स्वाभिमान खंड-खंड करता है, यह हर क्षण मुझे महिमा-मंडित करता है।

यह मुझमें अंधकार जगाता है। मेरे भीतर छुपे हुए न जाने कितने युगों की कुंठाएं-वासनाएं उजागर करता है और मुझे भयभीत कर देता है, पर दूसरे ही क्षण यह मुझे मेरे व्यक्तित्व को नए अर्थ देने लगता है और ऐसा एहसास देता है कि मनुष्य इतना ही नहीं है, जितना हम उसे भोगते हैं—वल्कि यह दोनों संदर्भों में समुद्र में डूवे हुए पहाड़ की उस दिखती हुई महज़ चोटी की याद दिलाता है।

नाटक में जो कुछ लिखा होता है, जितने जीवन संदर्भ उसमें उभरे होते हैं और इनके अनुसार जितना कुछ रंगमंच में उभरकर आता है, वह सब समुद्र की सतह पर दिखते हुए उस पहाड़ की चोटी की तरह है, जिसका नौवां हिस्सा पानी के गर्भ में अदृश्य है और सिर्फ एक भाग दृश्य है।

वही अदृश्य, वही अप्रकट, वही अनाहद् रंगमंच की वह मोहिनी है, जो सारी कलाओं के जादू और सारत्व को अपने में समेटकर हमारे आवेशों और उद्वेगों का प्रतिनिधित्व करती है।

इसीलिए नाटक में जो कहा गया है, जो उसकी सम्पूर्णता—यानी रंगमंच से प्रकट है, उससे महत्तर, अर्थवान वह है, जो छोड़ दिया गया है।

एलिफेन्टा की प्रसिद्ध त्रिमूति देखी है न! बंबई के 'गेटवे आफ इंडिया' से उस पहाड़ी तक, जिसके गर्भ में त्रिमूर्ति की रचना हुई है, एक लम्बा, छूटा हुआ-सा समुद्र के जल का मात्र फैलाव है—अगर यह इतना फासला बंबई महानगर से एलिफेन्टा के बीच में न होता, तो वह मूर्ति होती तो, पर उसमें जो अनाहद् अनिर्वचनीय मोहिनी है, सारत्व है, दिव्यता है, वह शायद न होती।

इसी सहजता और कठोरता से रंगमंच की परिकल्पना शुरू होती है। और, शायद इसकी यात्रा भी। इस यात्रा में रथ ही यात्रा है, रथ ही अश्व है, अश्व ही सारथी है, सारथी ही रथ में बैठा हुआ है। वही चल रहा है, वही चला रहा है। वही वह भीड़ है, दर्शक-रसरंजक समाज, जो रथ में है और रथ से बाहर दोनों ओर रास्ते में जो उसे देख-सुन रहा है—वही हूं मैं—चाहे मुझे नाटककार कहिए, चाहे रंगमंच, चाहे वही रथ, चाहे वही यात्रा, चाहे वही दर्शक समाज। कोई अन्तर नहीं पड़ता। तत्व वही एक है, अलग-अलग स्थितियों में वही अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है—यह बात जिस तरह आध्यात्मिक सत्य पर लागू होती है, ठीक उसी तरह रंगमंच पर।

लोग कला का विरोध करते हैं—प्लेटो से लेकर आज तक। रंगमंच का विरोध तो लोग बहुत ही करते हैं। मेरे समय में इस विरोध ने बड़ा

हास्यास्पद रूप धारण कर रखा है। बहुत से लोग इस पर दया दिखाते हैं, उससे भी अधिक लोग इसे परम्परा के नाम पर केवल इतिहास के रूप में लेते हैं और इस पर बड़े-बड़े लेख लिखते हैं और आए दिन परिसंवाद और व्याख्यान देते हैं। जैसे यह कोई भव्य भवन है, या कोई मरा हुआ महापुरुष जिसका नाम लेना हमारा अनिवार्य धर्म है। इसे अप्रासंगिक बनाने में वे कुछ भी उठा नहीं छोड़ते।/रंगमंच एक जीवित प्राणी है, जीवंत, जीवनधर्मी कला है, वे विरोधी लोग इस सत्य तक को स्वीकार करने में जरा भी न हिचकेंगे, पर इसे वे कभी न अनुभव करेंगे न किसी को करने देंगे। इसके लिए वे रंगमंच का 'संग्रहालय' बनाएंगे। इसे पश्चिम और संस्कृत, यहां तक कि मध्ययुग से जोड़ेंगे और अपने समय के रंगमंच को न कभी स्वायत्त कला के रूप में देखेंगे न जीवित क्रिया के रूप में।

इस भयानक-सूक्ष्म विरोध के सामने इसे केवल कला के लिए तथा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के रूप में ग्रहण करने के लिए विवश हो उठते हैं। यही विरोधी की विजय है। यही वह चाहता है कि हम अनिवार्यत: गये-बीते नारों का सहारा लें और अपने समय के जीवित रंगमंच की परिकल्पना और सौन्दर्यबोध से कट जाएं।

आज का सत्य यह है, और इसे हमें हर क्षण अनुभव करना चाहिए कि हमारा हिन्दी रंगमंच अपने स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्ध करने में सफल हो चुका है, और वह आज अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उपयोग करने के बारे में सोचता है।

मेरे समय में लोग रंगमंच के स्वतंत्र अस्तित्व का उपयोग दो रूपों में कर रहे हैं—पहला ऐतिहासिक संदर्भों में, दूसरा अति आधुनिक रूप में, अर्थात् समसामयिक। अथवा, वर्तमान संदर्भ उनमें गायब है। इसका व्यावसायिक लाभ चाहे जितना हो, इससे रंगमंच का लाभ नहीं है।

सच बात यह है कि भारतवर्ष और इसके जीवन को न जाने कितने वर्षों से सुन्दर सुदूर से देखने के हम आदी हो गए हैं। और यह कितना आसान और बचकाना तरीका है कि मनचाही चीज को मनचीते रूप से

केवल दूर से ही देखा जा सकता है। उस सुन्दर सुदूर में जीवन कितना हल्का मनोरंजक भी है, क्योंकि उसमें रमने का मतलब है, अपने से सर्वथा भिन्न स्थिति तथा वास्तविकता में रहना—दूसरे स्तर पर अपनी ही एक विशेष मनः स्थिति की छाया में रहना। ऐसी रहस्यमयी छाया, जो किसी तरफ भी कोई तनाव ही पैदा नहीं कर सकती, न कोई विरोध। दूसरी ओर अतिआधुनिकता—जो अनेक स्रोतों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों माध्यमों से परिचय हमें दे रहा है, वह भी हमारी मानसिक स्थिति के बहुत अनुकूल पड़ रहा है। ऐब्सर्ड, अनाटक, ऊलजलूल की ऐसी परिकल्पना हमें मुफ्त में ही मिलती है, जिसके लिए काफ्का से लेकर कामू, सार्त्र और आइनेस्को को अपार पीड़ा, पागल करने वाला अस्तित्वबोध और भयानक मानसिक संघर्ष और संताप भोगना पड़ा है। हमारे लिए अतिआधुनिकता जहां एक सुविधाजनक स्थिति है उनके लिए यही एक अनिर्वचनीय नरक है। इसलिए हमारी अतिआधुनिकता जहां मात्र एक अर्थहीन प्रयोग है, मात्र शैली, वहां उनके लिए एक अपरिहार्य जीवनबोध है—जिसका अनुभव उन्होंने अपने यथार्थ के साक्षात्कार से किया है, उससे हमारी तरह भागकर नहीं।

ऐसी दशा में हमारा रंगमंच अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उपयोग कैसे कर रहा है, यह आपके सामने है। इस पर जरा गंभीरता से गौर कीजिए। सोचिए, और तब बताइए कि रंगमंच क्या है—मेरा और आपका रंगमंच—ऐसा रंगमंच जिसके लिए हर कोई यह अनुभव कर लालायित हो, यह कहना चाहे कि यह है मेरा रंगमंच—मेरा अपना निजी रंगमंच—जैसा मेरा अपना प्यार, जीवन के अनुभव के साझीदार होते हैं और सबके साथ मिल कर एक ही भावना की लहर में खो जाते हैं। परदा उठता है और अपने समय, देशकाल तथा अपने निजी यथार्थ, जो हर क्षण, चारों तरफ तरह-तरह के रूपों और स्तरों से विद्यमान है, आवेशों और उद्वेगों तथा भवितव्यों का एक अनन्त, अबाध दृश्य हमारी आंखों के सामने मूर्त हो उठता है। भारतवर्ष की मुक्ति न तो इतिहास प्राण-दर्शन के रहस्यवाद में

है, न इसके वैराग्यवाद या भक्तिवाद में। इसकी मुक्ति है—अपने ही यथार्थ को उसकी सम्पूर्णता में अनुभव किया जाए या उससे साक्षात्कार किया जाए। आज मानवीय गौरव की भावना की आवश्यकता है जो नई पुरानी दोनों की एकाकार शक्तियों के कूड़े-कचरे में कहीं लुप्त हो गई है।

हमारा वर्तमान समय और इसका यथार्थ एक भयंकर दृश्य प्रस्तुत कर रहा है—जहां मनुष्य एक ही साथ तीन युगों में जी रहा है—मध्ययुग, आधुनिक युग और भविष्य युग। हमारा गहन तीव्र और प्रत्यक्ष संबंध मनुष्य के इसी आधुनिक युग—उसके वर्तमान से ही है—जहां वह अपने नामों से नहीं वरन् अपने उपनामों से जाना जा रहा है—जहां वह मनुष्य की अपेक्षा पद, धन, व्यवस्था, तंत्र, मशीन तथा उपभोग की चीज़ों से ज़्यादा संबंध जोड़ने को अभिशप्त हो रहा है और वह लगातार मनुष्य से दूर हटता जा रहा है।

मानव ही मानव के लिए सबसे अधिक कौतुक का विषय रहा है। मेरा रंगमंच यहीं से शुरू होता है। मानव अपने और अपने परिवेश के साथ निरंतर संघर्ष करता है—क्योंकि हर मनुष्य में कहीं न कहीं एक प्रेरकशक्ति होती है, जो उसे हमेशा क्रियाशील रखती है, और उसमें कहीं न कहीं एक आदर्श होता है, जो उसे मन्त्र की तरह, सुन्दरता की तरह बेधे रहता है—मेरे रंगमंच का इसी बिन्दु से प्रारंभ होता है।

—लक्ष्मीनारायण लाल

केवल तुम और हम

पात्र

- जया
- रीता
- हेमा
- मालती तथा कुछ लड़कियां

मंच

लड़कियों के एक होस्टल का वाहरी कमरा। शाम के साढ़े छः वज रहे हैं। किनारे दीवार में पब्लिक टेलीफोन लगा है। एक वेंच तथा कुछ कुर्सियां रखी हैं। गोल मेज़ पर कुछ पत्र-पत्रिकाएं रखी हैं। पर्दा उठते ही, या प्रकाश आते ही दृश्य में प्रकट होती हैं—टेलीफोन के लिए क्यू में खड़ी कुछ लड़कियां। पृष्ठभूमि में पॉप संगीत कभी-कभी सुनाई दे जाता है।

पहली लड़की : (फोन लिये) हाय उल्लू, तुझे यहां आना था न ? क्या···हूं···यस···हां···अरे अंधे-बहरे, यहां आज इंटर गर्ल्स होस्टल पॉप म्यूज़िक कंसर्ट था।···क्या··· क्यों था·· ?

दूसरी लड़की : मुझे दे मैं बताती हूं। (फोन लेकर) जी हां, सुनिए क्यों था। पहली बात—हम लोग भारतीय संगीत से ऊब चुके हैं। पिछले पच्चीस सालों से वही एक राग विलम्बित लय और तीन ताल में अलापा जा रहा है···अ-आ···आ···आ···आ···आ आ···आ ! और दूसरी बात—आज पढ़ाई-लिखाई में न टीचरों की दिलचस्पी है···न हमारी··· ।

तीसरी लड़की : अबे, टेलीफोन कर रही हो या हमारे हिस्ट्री टीचर की तरह बूर्जुआ क्रान्ति पर हमें बोर कर रही हो !

दूसरी लड़की : लो, विश्वशांति के लिए फोन मिलाओ !

चौथी लड़की : फोन नहीं, हॉट लाइन !

तीसरी लड़की : चुप्प बे ! ···हेलो···डैडी···अरे आज तुम अब तक क्लब नहीं गए। कमाल है, जल्दी जाइए···ताकि ममी भी कहीं घूम आएं। जी हां, नहीं तो उनके ब्लड प्रेशर का क्या होगा ! (फोन पर हाथ रखकर सहसा) ओफ् मीना, बब्बी, रुक, साथ चलते हैं छः नंबर बस से। वही राजेश खन्ना मार्का हीरो मिलेगा···साले को आंख मारेंगे ! (फोन पर) हेलो···जी डैडी, मैं देर से घर आऊंगी।···अयं, यहां···वही जो रोज़ होता है···हें हें हें !

चौथी लड़की : प्लीज़,कटशार्ट···! कम टू द प्वाइंट !

तीसरी लड़की : चुप्प ! जब मिसेज़ गुप्ता लिटरेचर पढ़ाते-पढ़ाते अपने घर की बातें करने लगती हैं, तब उन्हें नहीं चिल्लातीं

…'प्लीज़ कट शार्ट…कम टु द प्वाइन्ट' !

चौथी लड़की : अच्छा वावा, रागदरवारी में अपना ख्याल जारी रखो।

तीसरी लड़की : अबे मेरे लौंडे का फोन इंगेज़्ड है…वरना मैं डैडी को फोन करती ! डैडी-ममी तो इत्ते विज़ी हैं कि वे जानते भी नहीं, कि मैं किस क्लास में हूं। जैसा कालेज वैसा घर…!

अव चौथी लड़की फोन मिलाती है।

चौथी लड़की : हेलो,…क्या कहा ?…ह्वाट ?…ज़रा ज़ोर से, यहां वहुत शोर है !

पहली लड़की : लगता है, लौंडा वहरा है।

दूसरी लड़की : वहरा या वेयरा ?

शेष लड़कियां संगीत पर वदन हिला रही हैं।

चौथी लड़की : ओ के…कल…यस…वहीं, ठीक सवा दस वजे।

पांचवीं लड़की : अव तो हो गया, हटो भी…या एकनॉमिक्स की टीचर की तरह चरित्र-संगठन पर उपदेश दोगी !

चौथी लड़की : नहीं हटती, अव करो शोर !

सव लड़कियां समवेत स्वर में आ आ आ आ करती हैं। चौथी लड़की गुस्से से दूर हटती है।

चौथी लड़की : देखना, अपना गुस्सा मैं कल उतारूंगी। अपने कालेज के फ्रेंड से वोलूंगी वह तेरह नम्वर की वस पर पत्थर मारेगा। कंडक्टर से झगड़ा होगा। ड्राइवर को वह पीटेगा। फिर वह वस सर्विस कैंसिल। देखूंगी तुम लोग घर कैसे जाओगी !

पहली लड़की : अजी, दोस्तों की टैक्सियों में जाएंगे !

दूसरी लड़की : और घर पहुंचना कोई ज़रूरी है !

तीसरी लड़की : डियर कालेज बन्द करा दो···पढ़ाई से बोर हो गई।

पांचवीं लड़की : मैं तो सारी दुनिया से बोर हो गई। (**फोन पर**) हेलो सतीश, मैं आज 'डेट' नहीं कर सकती। तुम्हीं बताओ आज उमस कित्ती है !

फोन रखती है। छठी लड़की फोन उठाती है।

चौथी लड़की : प्लीज़ मीना, मान जाओ मेरी डार्लिंग ! तुझे राजेश खन्ना की कसम !

पहली लड़की मुस्कराती हुई जाने लगती है।

तीसरी लड़की : हाय मीना, रुको छः नम्बर की बस से साथ चलेंगे, वहीं राजेश खन्ना मार्का हीरो मिलेगा···

पहली लड़की कुर्सी पर बैठ गई है। दूसरी लड़की फोन कर रही है।

छठी लड़की : ममी, मैं ज़रा देर से घर आऊंगी। बड़ी आंटी के यहां विश्वनाथ अंकल की सालगिरह है न···प्लीज़ ममी।

पहली लड़की : टियूं टियूं टियूं टियूं··· (**गिटार की नकल**)

दूसरी लड़की : झिम झिम झिम झिम··· (**ड्रम की आवाज़ की नकल**)

तीसरी लड़की : टक टक टक टक··· (**बैंगो की आवाज़ की नकल**)

पांचवीं लड़की : रों रों रों रों रों (**एकार्डियन की आवाज़ की नकल**)

छठी लड़की : छिम छिम छिम छिम (**प्लेट्स की आवाज़ की नकल**)

तीसरी लड़की फोन करती है। दूसरी चली जाती है।

तीसरी लड़की : हाय ! इन्तजार करना, आ रही हूं।

जाती है। चौथी लड़की फोन करती है।

चौथी लड़की : वोय मोटे ! प्लाज़ा के पीछे टैक्सी स्टैंड पर। वहां

मुंह लटकाए खड़े रहना। वाई··· !

जाती है। पांचवीं फोन लेती है।

पांचवीं लड़की : हेलो, फैट ! मैं आज 'डेट' पर नहीं आ सकती ! मुझे कहीं और जाना है। चुप्प वे !

पॉप संगीत छा जाता है। लड़कियां चली जाती हैं। थोड़ी ही देर में जया आती है। उसके हाथ में गिटार है। वह फोन उठाती है और नंबर मिलाती है।

जया : हेलो जॉनी ! मैं यहां इन्तज़ार कर रही हूं। जल्दी आओ। डियर, तो मैं क्या करूं ? मैं कुछ नहीं जानती। जल्दी आओ।

फोन रखती है। रीता आती है।

रीता : हाय जया !

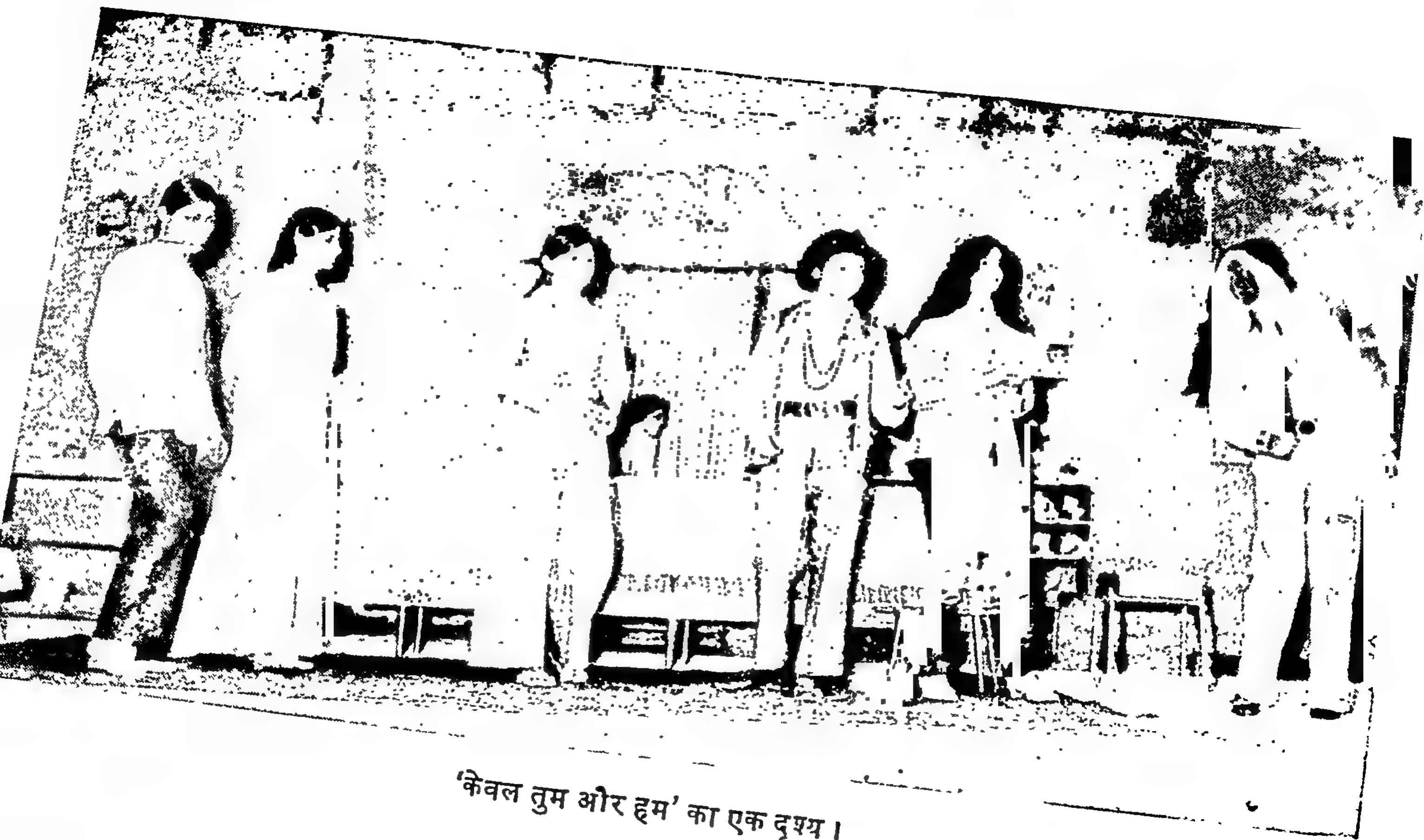
जया : (**गाती है**) 'यू डोन्ट हैव टू से यू लव मी' ! हाय ! एलविस प्रीसले का यह पॉप संगीत कितना जमा !

रीता : डोटी वेस्ट का 'फॉरएवर योर्स' भी खूब जमा !

जया : यार, तुम्हारे होस्टल की लड़कियां कितनी बेवकूफ हैं—उन्हें इतने बड़े 'पॉप सिंगर' एलविस प्रीसले का नाम नहीं पता !

रीता : जब से हमारे होस्टल की वार्डन मिसेज़ घई हुई हैं, वहां की सारी हवा बिगड़ गई। साढ़े सात बजे होस्टल के दरवाज़ों पर ताले लग जाते हैं—बताओ कोई लड़की न कहीं 'डेट' कर सकती है न किसी ब्वाय फ्रेंड के साथ रह सकती है।

जया : हमारे होस्टल के दरवाज़े साढ़े दस बजे रात तक आफ़िशियली खुले रहते हैं और वैसे साढ़े बारह बजे



'केवल तुम और हम' का एक दृश्य ।

तक ! हमारी वार्डन मिस खन्ना अभी पेरिस से लौटी हैं। हमारे कालेज में पढ़ाई नहीं पालिटिक्स होती है—मर्द बनाम औरत की पालिटिक्स।

हेमा आती है।

हेमा : हाय रीता, जया भादुड़ी !

जया : डोन्ट काल मी 'जया भादुड़ी' ! छी, 'गुड्डी' फिल्म में वह कितनी बचकानी हरकतें करती है।

रीता : हेमा, होस्टल जा रही हो ?

हेमा : साले, अभी कौन होस्टल जाता है। मेरा लौंडा आ रहा है। ज़रा कनाटिंग करने जाऊंगी उसके साथ। कल यूनिवर्सिटी में स्ट्राइक होने वाली है !

हेमा फोन करती है।

हेमा : (फोन पर) हेलो टोनू·· छिक छिक छुक छू···यस, डा डा डा रूं रूं रूं·· कम इमीडियटली ! डब्लू० होस्टल के गेट पर।

फोन रखती है।

रीता : मुझे टेलीफोन करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। लौंडा कार लिये हुए गेट पर आधे घंटे से मेरे इन्तज़ार में उल्लू के पट्ठे की तरह बैठा है।

जया : मेरा टोटू बेहद 'बिज़ी' है। पूरे फर्म का मैनेजिंग डाइरेक्टर है। मगर अभी दौड़ा आ रहा होगा। छू छू छू !

रीता : देखना, कहीं अपने फर्म में तुझे 'रिसेप्शनिस्ट' न बना दे। लू लू···लू लू ! ग्लीन कांपबेल का वह गाना··· 'इट इज़ ओनली मेकबिलीव'···हाय !

जया : ग्लीन कांपबेल नहीं, 'ग्लेन कैम्बेल'···।

रीता : आई बेट् !

जया : वाज़ी !

हाथ मारती हैं। जया 'जूनियर स्टेट्समैन' पत्रिका दिखाती है। रीता हार जाती है।

रीता : आई एम सॉरी !

जया : तुम्हारे होस्टल और कालेज की हवा ही बैकवर्ड है।

हेमा : अच्छा बताओ, संसार के पांच मशहूर पॉप सिंगर के नाम !

रीता : सैन्टाना'' जार्ज हैरिसन'''!

हेमा : हट वे साले, जार्ज हैरिसन बीटिल सिंगर है !

जया : अच्छा, तुम बताओ'''!

हेमा : पांच नाम ? सैन्टाना'''एलविस प्रीसले'''डान'''पाल मेकार्टने ''।

जया : पांचवां नाम'''जया माइकेल'''।

रीता : मेरा नाम'''किलोपेट्रा'''लाचिक लाचिक लाचिक'''।

हेमा : माई नेम सालमा'''टियूं टियूं टियूं ट्इयूं !

जया : खासी गर्ल'''ओई कोमोवा'''ओई कोमोवा !

तीनों मुंह से आवाजें निकालती हुई शोर मचाती हैं। दौड़ी हुई मालती आती है।

मालती : बंद करो शोर ! हमारी प्रिंसिपल मिसेज़ दास नाराज़ हो रही हैं।

जया : आपकी तारीफ ?

मालती : तुम लोग यहां से जातीं क्यों नहीं ?

रीता : अबे चुप रह साले !

हेमा : हम लोग किस वाहियात गर्ल्स कालेज के होस्टल में आ गए ? इससे कहो'''यह यहां से फौरन फूट जाए'''!

रीता : हम लोग अपने-अपने ब्वाय फ्रेंड का इन्तज़ार कर रहे हैं।

जया : चलो, तुझे भी ले चलें !

हेमा : पता चल जाएगा कितनी खूबसूरत हो !

रीता : खूबसूरत नहीं, स्मार्ट !

तीनों बेहूदे ढंग से हंसती हैं।

मालती : कीप क्वायट ! हमारे वार्डन की तबियत खराब है !

जया : हाय, साली अंग्रेज़ी बोलती है !

रीता : कालेज की 'चमचागर्ल' है !

हेमा : टें···यं···यें···ऊं ! टंग्रं···

रीता : छी छू छी छू···छीछू छीछू···।

जया : जुक जुक छिक छुरु !

मालती : शटअप !

लड़कियां मुंह बनाए चुप खड़ी रह जाती हैं।

जया : अच्छा चलिए, हम आपसे महाभारत की चौपाइयां सुनेंगे।

रीता : महाभारत की या रामायण की ?

जया : दोनों में कुछ फर्क है क्या ?

हेमा : अबे, क्या फर्क पड़ता है !

जया : अच्छा चलिए, कोई भजन सुनाइए ?

रीता : पूजा आरती···वन टू थ्री···।

तीनों गा उठती हैं।

जय जगदीश हरे !
ॐ जय जगदीश हरे···!
संतन के दुख दूर करे
क्यों तू गुस्सा करे···

ॐ जय जगदीश हरे…!
तू दिन-रात पढ़े
क्यों नहि प्रेम करे…
ॐ जय जगदीश हरे…।

मालती : चलो प्रिंसिपल के पास !

जया : होगी तेरी प्रिंसिपल। मेरी प्रिंसिपल है मिसेज़ चटर्जी… 'माई फेयर लेडी !' वह कहती है, 'मुझे वाइस-चांसलर होना है' ! हिप्-हिप् हुर्रे !

रीता : मेरे कालेज का नाम है माडर्न लेडी कालेज। हमारी प्रिंसिपल हमें कभी नहीं बुलाती। उसके पास इत्ता वक्त ही नहीं !

मालती : हेमा, तू तो इसी कालेज की है न, तुझे चलना होगा !

हेमा : हुश ! मेरा ब्वाय फ्रेंड आ रहा है…मुझे उसके साथ जाना है।

जया : हाय, इसके भी कोई ब्वाय फ्रेंड होता !

जया : कौन जाने हो ही। ऐसी लड़कियां बड़ी घुटी होती हैं।

हेमा : यह तो दिन-रात पढ़ती है और प्रिंसिपल-टीचरों की चमचागिरी करती है।

रीता : तभी तो इसका ब्लड प्रेशर हाई है !

मालती : तुम लोग बकवास नहीं बन्द करोगी ?

जया : अच्छा बाबा, तुम्हीं करो बकवास ! चलो शुरू हो जाओ !

मालती : या तो प्रिंसिपल के पास चलो वरना गेट पर जाकर इन्तज़ार करो !

रीता : यह क्या बकवास कर रही है ?

हेमा : मालती, मेरी प्यारी सखी, जा तू अपने कमरे में घोंट लगा, हम लोग यहां शोर नहीं करेंगे !

जया : वाह ! शोर क्यों नहीं करेंगे। हमें किसी का डर पड़ा है। मेरा टोटू इस शहर के सबसे बड़े गुंडे हरीसिंह का दोस्त है !

रीता : श्रोह दादा हरीसिंह···? उसको तो मेरे 'डैम' ने एक दिन इतना मारा···इतना मारा कि उसे हाथी मेरे साथी याद श्रा गया···जैसे राजेश खन्ना ने उस विलेन को पीटा था।

हेमा : हाय, बड़ा ज़ालिम है वह गुंडा हरीसिंह। एक दिन कालेज की दो लड़कियों को दिन-दहाड़े जीप में उठा ले गया !

रीता : श्ररे मेरे 'डैम' के नाम से वह थर-थर कांपता है।

इस बीच मालती एक कुर्सी पर बैठकर कोई पत्रिका पढ़ने लगी है।

जया : देखो, देखो···यह यहां भी पढ़ने लगी।

रीता : मैं ज़रा बाहर देख श्राऊं श्रपने 'डैम' को···।

जया : मेरा टोटू गेट पर श्राते ही हार्न बजाएगा···किं किं किं कीं !

रीता बाहर जाती है।

हेमा : मेरा टोनू श्रावाज़ लगाएगा···इश्राहू !

मालती : श्रो हो हो···क्या जंगली प्रेमी मिला है !

जया : श्ररे, यह तो कुछ श्रौर भी बोलती है !

मालती : मालूम है, यह पॉप संगीत मैंने श्रार्गनाइज़ किया था।

हेमा : यस···दैट्स राइट !

जया : रियली ? वंडरफुल ! ···समझती भी है, पॉप म्यूज़िक क्या बला है ?

मालती : 'पॉप' माने 'पॉपुलर' !

जया : दैट्स राइट ! किसी फेमस पॉप सिंगर का नाम बता

सकती हो ?

मालती : नोट कीजिए—सान्ताना, रेयरअर्थ, ग्लेन कैम्बेल, वर्ट वेकरेच, एलविस प्रीसले, डान···।

जया : बस···बस···ओह गॉड !

रीता आती है।

रीता : अभी तक ईडियट नहीं आया।

जया : अरे···यह चिड़िया तो जितनी ऊपर है उतनी ही ज़मीन के नीचे ! इसी ने पॉप म्यूज़िक आर्गनाइज़ किया था।

रीता : पर इसकी शकल तो हॉल में कहीं दिखी नहीं !

हेमा : यह बैकग्राउन्ड में थी। थी असली यही !

जया : इसे सारे पॉप सिंगर के नाम मालूम हैं···। अभी धड़ा-धड़ बताने लगी।

रीता : हमें इसी ने बुलाया ?

मालती : यस मैडम !

जया : कुछ गुनगुना रही है !

रीता : माई डार्लिंग, ज़रा ज़ोर से···।

हेमा : यस मालती···कम आन !

मालती : जय जगदीश हरे, ॐ जय जगदीश हरे !
संतन के दुख छन में दूर करे···ॐ जय जगदीश हरे !

जया : नानसेन्स !

रीता : माई लिटिल बेबी, मैं सुनाती हूं···याद कर ले ! (गाती है) 'लव इज़ जस्ट ए फोर लेटर्ड वर्ड···'

मालती : यस लिटिल वर्ड !

सब साश्चर्य मालती को देखने लगती हैं। और चुपचाप सलाह करती हैं उसे तंग करने के लिए।

जया : कितनी खूबसूरत !

रीता : हाय, मेरी नीलम परी !

हेमा : हुकुम की बेगम !

उसके चारों ओर कुर्सियां खींचकर बैठ जाती हैं।

जया : तुम्हारे दांत कितने खूबसूरत हैं,···कितने हैं···तीस या बत्तीस। जरा मुंह खोलो ··गिनें तो···।

मालती : यह क्या बदतमीजी है ?

तीनों उसे पकड़कर उसका मुंह खोलती हैं। दांत गिनने के बजाय उसके मुंह में कुछ डाल देती हैं।

मालती : थू···थू ··नानसेन्स···आवारा···!

जया : बिगड़ती क्यों हो ? लो मेरे दांत गिन लो !

मालती : तेरे मुंह से सिगरेट की बदबू आती है।

रीता : हाय, सब्जपरी के मुंह में तो दूध भरा है !

मालती : मैं अभी रिपोर्ट करती हूं प्रिंसिपल से !

जया : मालूम है हरीसिंह गुंडे का नाम···दिन-दहाड़े उठवा दूंगी यहां से। बड़ी सती सावित्री बनती है !

हेमा : हाय, इसकी कमर तो देखो !

तीनों उसकी कमर में चिकोटी काटती हैं। वह भागती है। दोनों ओर दरवाजे पर लड़कियां खड़ी हो जाती हैं।

जया : इस कमरे से बाहर नहीं जा सकतीं।

रीता : कसम खाओ···हमारी रिपोर्ट नहीं करोगी।

हेमा : मेरी कोई शिकायत नहीं !

मालती : करूंगी···सारी रिपोर्ट करूंगी। यह मेरा कालेज है··· मेरा होस्टल।

है। हमारे स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय को लकवा मार गया है।

रीता : सुन वेटी, सारे देश और समाज के ठेकेदार और व्यापारी अदल-वदल आयेराम-गयेराम हैं। इन्हीं के भाई-भतीजे, साले-वहनोई हमारी सरकार चलाते हैं। हमारे प्रिंसिपल, प्रोफेसर, टीचर, वाइस-चांसलर इन्हीं के गुलाम हैं।

हेमा : हमारे पापा लोग केवल नौकरी करना जानते हैं···यही शिक्षा मिली है उन्हें···और हमारी मम्मी लोगों की चिंता है वज़न कैसे घटाया जाए···यही था उनकी शिक्षा का सार !

जया : निवंध का सार यह है—विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और तेजी से वढ़नी चाहिए क्योंकि असेम्वली-पार्लियामेंट में अनुशासनहीनता वढ़ रही है। स्कूल-कालेजों में अखाड़े खोदे जा रहे हैं।

रीता : इस शून्य को भरने के लिए हमारे पास पॉप म्यूज़िक है, डिस्कोथिक है, मेरिजुआना है···एल० एस० डी० है···। शिक्षा मंत्रालय गंभीरता से विचार कर रहा है। कमीशन रिपोर्ट दे रहा है। ओम् शांति, ओम् शांतिः !

जया : हम तुझे एक शर्त पर छोड़ सकते हैं।

रीता : मतलव, पट्टी खोल सकते हैं !

हेमा : वोल···शर्त मंजूर है। सिर हिलाकर वता।

जया : शर्त यह···कि तू अपने प्रेमी का नाम वता।

रीता : यस···कोई लव अफेयर ज़रूर रहा होगा इसका··· वरना इत्ता उठक-वैठक नहीं करती !

हेमा : सिर हिलाकर···उस प्रेमी का नाम वताएगी ?

स्वीकृति में मालती सिर हिलाती है।

जया : हमारी सारी शर्तें मंजूर हैं न ?···अभी इसे [illegible] करो।

वह मुक्त हो जाती है।

रीता : कोई रिपोर्ट नहीं करेगी ना ?

मालती : नहीं।

हेमा : अपना सब अफेयर बताएगी ना ?

मालती : बताऊँगी।

जया : तूने प्रेम किया है किसी से ?

मालती : किया है।

रीता : वह अभी जिन्दा है ?

मालती : जिन्दा है।

हेमा : वह इसी शहर का है ?

मालती : इसी शहर का।

जया : क्या है उसका नाम और पता ?···शरमाती क्यों है ? बता !

मालती : मेरा प्रेमी है हरीसिंह ?

जया : कौन हरीसिंह ?

मालती : वही मशहूर गुंडा—दादा हरीसिंह।

हेमा : झूठ बोलती है। इसकी यह हिम्मत !

रीता : हमें बेवकूफ बनाती है !

मालती : बिल्कुल सच कहती हूं—वही है मेरा 'ब्वाय फ्रेंड' !

जया : उससे दोस्ती कैसे हुई ?

मालती : उससे मेरी मुलाकात अचानक एक पार्क में हुई। रात के दस बजे थे। मैं एक टीचर के साथ सनीमा देखकर उस पार्क में टहल रही थी।

जया : टीचर या लेडी टीचर ?

मालती : टीचर···जी० एस० पाठक···हिस्ट्री पढ़ाने वाले !

हेमा : हाय, देखो कितनी चालाक है···सब बातें बना रही है। पाठक जी इसे लेकर सनीमा जाएंगे···श्रौर पार्क में टहलेंगे। श्रहा हा!

रीता : तुझे जलन हो रही है न?

मालती : मैंने देखा, चम्वेली की झाड़ी के पास एक व्यक्ति रिवाल्वर ताने किसी के इन्तजार में खड़ा है। मैं चीख पड़ी। उसने मुझे भाग जाने का इशारा किया। पाठक जी मुझे छोड़कर भागे। वह हंस पड़ा। मेरे पास आया। वोला, 'जिसे मारने श्राया था, श्रव उसे माफ किया।' उसने मुझे एक रेस्त्रां में काफी पिलाई। श्रपना परिचय दिया। मुझे टैक्सी में विठाकर होस्टल छोड़ने, श्राया श्रौर हमारी दोस्ती हो गई! उसने मुझे तुम सबके दोस्तों के बारे में बताया है।

जया : हाय कितनी घुटी हुई लड़की है!

रीता : वावा रे, हरीसिंह गुंडा इसका व्वाय फ्रेंड!

हेमा : कित्ती छिपी रुस्तम निकली!

मालती : मैं उसके लिए प्राण दे सकती हूं।

जया : जा, जा, वड़ी श्राई जान देने!

मालती : वह मेरे लिए कहीं कुछ भी कर सकता है।

रीता : मेरा 'डैम' भी मेरे लिए कुछ कर सकता है।

मालती : उसने वताया है—वह किसी लड़की को कहीं ले जा सकता है।

हेमा : हमारे व्वाय फ्रेंड्स तुम्हारे मिस्टर पाठक की तरह बुज़दिल नहीं।

जया : तुम्हारा हरीसिंह के साथ रिश्ता डर-भय का है—हमारे रिश्ते मुहव्वत, लव, प्रेम के हैं।

रीता : हरीसिंह श्राए मुझे उठा ले जाने के लिए, मैं उसे वह

मजे चखाऊं कि वह जेल में नजर आए !

हेमा : मेरे टोनू के नाम से वह थरथर कांपता है। मेरा टोनू होम मिनिस्ट्री के अंडर सेक्रेटरी का लड़का है।

रीता : मेरा 'टैम' आई० जी० इन्टेलिजेन्स का भतीजा है।

जया : मेरा टोटू प्राक्टर प्रोफेसर सिंह का कज़िन है।…हम पर कोई और आंख तक नहीं उठा सकता। और हमारी मुहब्बत में इतनी ताकत है कि हमारी जान भले जाए, मगर हम किसी और के साथ नहीं जा सकते।

मालती : यही मेरी सच्चाई है।

रीता : तू डरपोक लड़की, सच्चाई की बात करती है? कोई डांट दे तो बकरी की तरह उसके पीछे-पीछे चली जाएगी। मेंअं…मेंअं…मेंअं…

मालती : मेरे हरीसिंह के पीछे-पीछे कोई भी लड़की चुपचाप चली जाएगी।

जया : जैसे तू चली गई दुम दबाए। बी आर माडर्न गर्ल्स, ब्रेव, डिटरमिन्ड…।

हेमा : हम जान दे सकते हैं…किसी और के सामने घुटने नहीं टेक सकते। हम सीता-सावित्री की तरह बेवकूफ बुज़दिल नहीं कि कोई रावण हमें भगा ले जाए। हम उसके सिर तोड़ देंगे !

सन्नाटा।

मालती : हरीसिंह यहां आज मुझसे मिलने आ रहा होगा… आज हमारी 'डेट' है।

जया : यहां ?

रीता : 'डेट' ?

हेमा : इस कमरे में ?

मालती : दरअसल तभी मैं यहां से तुम लोगों को हटाने के लिए

आई थी। हम यहां, इस जगह वैठकर वातें करते हैं—फिर हम कहीं वाहर जाते हैं घूमने।

जया : कितनी अजीव वात है···तू हमें साफ-साफ वता सकती थी। हम चुपचाप चले जाते।

रीता : इसमें इस कदर वहानेवाजी की क्या ज़रूरत थी ?

हेमा : तूने कभी मुझे नहीं वताया।

मालती : ये वताने की वातें हैं क्या ?

जया : हां इत्ते नटोरियस गुंडे के साथ दोस्ती, यह कोई वताने की वात है !

मालती : अव मैं जा सकती हूं न ? वस मेरा हरीसिंह आ रहा होगा। वक्त हो गया···आज वाहर ही मिल लूंगी···अच्छा !

चली जाती है। तीनों लड़कियां एक दूसरे का मुंह देखने लगती हैं।

जया : फन्टास्टिक !

रीता : इन्क्रेडिवुल !

हेमा : कमाल !

तीनों कुर्सियों पर वैठकर विचार करती हैं।

जया : उस गुंडे से हमारी शिकायत तो नहीं करेगी ?

रीता : करे भी हमें क्या डर ?

हेमा : साली को साले के साथ जेल में ठुंसवा दूंगी, हां !

जया : क्या हिम्मत है साली में !

रीता : ऊपर से कित्ती सीधी दिखती है !

हेमा : चमचाछाप लड़की !

रीता : गऊ मार्का सरसों का तेल !

जया : वोर···वोर···वोर !

हेमा : कहीं जी नहीं लगता।

रीता : मुझे चारों तरफ दमघोंटू सन्नाटा महसूस होता है !

जया : (मस्त होकर) चिक चिक चिकनिक
चिक चिक चिकनिक
चिकनिक चिकनिक !

हेमा : मेरे ममी-डैडी में हर रात झगड़ा होता है। ममी को शक है, डैडी का किसी लड़की से 'अफेयर' है !

रीता : मेरी ममी को मेरी शक्ल से नफरत है—तभी मुझे होस्टल में रख दिया !

जया : मुझे कहा जाता है—मैं बदचलन हूं !

हेमा : मैं बर्बाद हूं !

रीता : मैं सबके लिए मर गई हूं !

जया : मैं बी० ए० में चार सालों से फेल हो रही हूं !

रीता : मुझे सबसे नफरत है !

हेमा : मुझे किसी की परवाह नहीं !

जया : मेरी ममी को शिकायत है कि मेरे डैडी बिल्कुल बेकार के शौहर हैं। उनमें न धन कमाने की ताकत है, न आगे बढ़ने की हिम्मत। और मेरे डैडी ममी से कहते हैं 'तुझसे शादी करके मैं मर गया···खत्म हो गया!' और दोनों मिलकर मुझसे कहते हैं—'न मैं शादी के लायक हूं···न पढ़ने के···न नौकरी के !'

रीता : हूं ! शादी ! द लीगल प्रॉस्टीट्यूशन !

हेमा : हूं पढ़ाई—द ग्रेट बोरडम !

जया : नौकरी—द हॉरिबुल ब्यूरोक्रैसी !

हंसती हैं।

जया : शीऽऽ···धीरे-धीरे !

रीता : मेरा 'डैम' गेट पर आ गया होगा, मैं चलती हूं !

हेमा : मेरा टोनू भी !

जया : मैं अपने टोटू की कार की आवाज़ पहचानती हूं !

रीता : आज कहीं हमारे तीनों की भेंट हरीसिंह के साथ हो गई तो···!

जया : मैं तो उस गुंडे की ओर आंख तक नहीं उठाऊंगी !

रीता : उसे कभी देखा है ?

जया : मैं क्यों ?

हेमा : मैंने भी साले को कभी नहीं देखा।

दरवाज़े पर तेज़ दस्तक ।

जया : वही है, वही !

रीता : हम लोग इस रास्ते से निकल जाएं।

उस दरवाज़े पर भी तेज़ दस्तक ।

रीता : कौन हो सकता है ?

हेमा : होगा कोई बास्टर्ड !

तभी तेज़ी से दरवाज़ा खुलता है—हरीसिंह का प्रवेश ।

हरीसिंह : हाय, चिड़िया लोग ! आई ऐम हरीसिंह—हाय ! नमस्ते करो !

हेमा : हाय !

रीता : नमस्ते !

जया : नॉनसेन्स !

हरीसिंह : नमस्ते करो !

हेमा-रीता डरकर हाथ जोड़ती हैं। जया हंस रही है।

हरीसिंह : बंद करो हंसी ! मुझे जानती नहीं ? कहां है मेरी मालती ?

हेमा : जी, जी, यहीं थी आपके इन्तज़ार में।

रीता : बाहर खड़ी होगी !

हेमा : आप तशरीफ रखिए, हम उसे ढूंढ़ लाते हैं।

हरीसिंह : रुको ! कहां भगाया मेरी मालती को ?

जया : **(अलग से, जनान्तिक—'एसाइड'—में)** हुश्रं, बड़ा आया हरीसिंह बन के ! मालती की तलाश में आया है ! झूठा, दगाबाज़…फरेबी…!

रीता : हम बेकसूर हैं !

हेमा : हमने उसे नहीं भगाया !

हरीसिंह : मगर वह है कहां ?

जया : **(एसाइड)** वह भाड़ में गई। लोग हमें तरह-तरह से डराने आते हैं । डाकू…गुंडा, नौकरी…इम्तहान…शादी…इज़्ज़त…!

हरीसिंह : खबरदार, कमरे से बाहर जो कदम रखा !

जया : **(एसाइड)** देखो-देखो…इस गुंडे की आवाज़ में ज़नानापन है। साला खुद डरा हुआ है। डरा हुआ ही दूसरे को डराता है !

हरीसिंह : ऐ…चल इधर !

जया : तमीज़ से बोलो !

हरीसिंह : कहां है मेरी मालती ?

जया : होस्टल के चौकीदार से पूछो ।

रीता और हेमा डरी हुई हैं। जया को चुप रहने के इशारे करती हैं।

हरीसिंह : अपने-अपने ब्वाय फ्रेंड के नाम बताओ !

रीता : डैम !

हेमा : टोनू !

जया : कोई ब्वाय फ्रेंड नहीं।

हरीसिंह : वह टोटू कौन है ?

जया : तुम कौन हो ?

हरीसिंह : ओह ! तुम कौन हो ?

जया : जो तुम हो !

हरीसिंह : मगर मैं क्या हू ?

जया : जो हो तुम !

हरीसिंह : इतना गुस्सा !

जया : नफरत !

हेमा : विद्रोह !

रीता : अस्वीकार !

जया : (हंसती है।)

हरीसिंह : ब्रेव···स्मार्ट···ऐंग्री ! सुनो, तुम तीनों को आज मेरे साथ 'डेट' करना होगा। चलो, बाहर मेरी जीप खड़ी है ! चलती हो कि नहीं ?

हेमा : कहां ?

रीता : कैसे ?

हरीसिंह : मैंने तुम्हें देखा है, तरह-तरह के लड़कों से 'डेट' करते हुए। डिस्कोथिक्स, 'सेलर', 'तवेला' में नशे में झूमते और बुझे हुए। अजीबोगरीब पोशाकों में पॉप म्यूज़िक, जैम सेशन में धुत्त। पश्चिम की शर्मनाक नकल !

जया : हम यहीं की उपज हैं।

हरीसिंह : चलो मेरे साथ !

जया : नहीं ! मत जाओ इसके साथ !

हरीसिंह पिस्तौल तान लेता है।

जया : यह पिस्तौल झूठी है। मत डरो ! मत जाओ !

हरीसिंह : शटअप !

जया : यू शटअप !

हरीसिंह दोनों लड़कियों को संग

लेकर जाने लगता है। जया संघर्ष करती है।

जया : लड़ो, यह झूठ है! मारो, यह झूठ है!

हरीसिंह जया को धक्का देकर लड़कियों के साथ चला जाता है।

जया : (उठती हुई) कायर! बुज़दिल! नकलची! हर विश्वास महज़ एक फैशन! हम कौन हैं? कायर हम हैं या वह गुंडा हरीसिंह? बुज़दिल महज़ हम हैं या हमारे डैडी-ममी? नकलची केवल हम हैं या हमारे कालेज, टीचर्स···किताबें···लेक्चर्स···?

दोनों लड़कियां वापस आती हैं। दौड़ती हुई, डरी हुई।

हेमा : हरीसिंह न जाने कहां एकाएक गायब हो गया!

रीता : वह कहीं छिप गया है!

हेमा : मेरा डैम भी अब तक नहीं आया।

रीता : मेरा टोनू भी मर गया।

हेमा : शायद बाहर उसे मालती मिल गई हो!

रीता : चलो, अब भाग चलें!

जया : (एसाइड) हमेशा भागते ही रहना होगा।

हेमा : ना बाबा, वह मालती के साथ बाहर होगा।

रीता : हाय! कैसी-कैसी बातें कर रहा था!

जया : (एसाइड) महज़ बातें···महज़ बातें!

रीता : दरवाज़े बन्द कर लो!

बन्द करती हैं।

हेमा : ईश्वर ने हमें बचा लिया।

जया : तो इन्हें अब ईश्वर में भी विश्वास हो गया। बताओ ना कौन-सा ईश्वर···अमेरिकन, ब्रिटिश या फ्रेंच?

रीता : जया डियर, तुम कुछ नहीं समझतीं। प्लीज़, माइंड कर गई क्या ?

हेमा : हम तो उसके साथ यूं ही चले गए, वरना यहां खामखा स्कैंडल होता।

जया : मतलब हम लोग किसी के भी साथ यूं ही चले जाते हैं !

वन्द दरवाजे पर दस्तक।

हेमा : वही है···वही।

रीता : इस बार वह हमें घसीटकर ले जाएगा।

हेमा : हम दरवाज़ा नहीं खोलेंगे !

जया : वह दरवाज़ा तोड़ देगा !

दरवाज़ा तेजी से खुलता है। मालती का प्रवेश।

हेमा : हाय, तू कहां थी ?

रीता : तेरा वह गुंडा कहां है ?

मालती : (मज़े में) च ला ग या।

हेमा : यह कैसे बोल रही है ?

रीता : लगता है, उसके साथ इसने पी है।

जया : यह सब बनावटी है···झूठ है !

मालती : मरिजुआना··चरस···एल० एस० डी०···!

हंसती है। दोनों डरकर भागती हैं। जया उसे पकड़ लेती है।

जया : बन्द करो यह बकवास !

रीता : यह होश में नहीं है।

हेमा : यह पागल हो गई है। गुंडे ने इसे ·।

जया : मालती···आई नो यू !

मालती : आई ऐम किलोपेट्रा, संताना, रेअरअर्थ, प्रीसले, खासी

गर्ल···हा हो !

झपटती है। दोनों चीखकर टेबुल के नीचे छुप जाती हैं। जया उसे फिर पकड़ती है।

मालती : (**तड़पती हुई**) मैं उड़ रही हूं···ज़मीन की ग्रेविटी से बाहर, चांद की ओर, ऊपर···और ऊपर। मेरी उंगलियों से फूल झड़ रहे हैं···कीड़े निकल रहे हैं—एक प्याला रोमांस··एक प्याला पॉप म्यूज़िक···एक प्याला ब्वाय फ्रेंड···एक प्याला डायवर्शन, विद्रोह··· अमेरिका···फ्रांस !

जया : (**ज़ोर से**) हरीसिंह !

मालती : क्या ?

जया : तू झूठी है···। बोल, तूने हरीसिंह बनकर इन्हें क्यों डराया ?

मालती : तुम सबने मुझे क्यों डराया ?

जया : हम सबको किसने डराया ?

मालती स्थिर खड़ी रह जाती है।

हेमा : ओह ! यह खुद बनी थी हरीसिंह !

रीता : झूठी···बदमाश !

जया : यह देखो मूंछ···यह पिस्तौल···यह चाकू !

मालती के साथ दोनों स्थिर हो जाती हैं। जया एक कुर्सी पर खड़ी होकर जैसे गिटार बजाने लगती है।

जया : बोलो, यह संगीत कैसा है ? यह क्या है धुन ? भारतीय या वेस्टर्न सिम्फनी···जार्ज हैरिसन···या अली अकबर ? वह हरीसिंह गुंडा कौन था ? हम या तुम ? या हमारे चारोंओर दमघोंटू, अर्थहीन परिवेश···जहां

हम जैसे एक प्याला काफी पीते हैं…उसी तरह एक प्याला ब्वाय फ्रेंड !

पृष्ठभूमि से गिटार का संगीत उठने लगता है।

जया : जागो-जागो मेरी प्रानसखियो…हेमा…रीता… जोनू …शशि… मालती…रेखा… पूनम… चांद…रेनू …लवी…मोना… प्रेमा !

विंग के दोनों ओर से नाटक के शुरू की वे सारी लड़कियां संगीत की लय पर जर्क करती हुई मंच पर आती हैं। उनके संग धीरे-धीरे हेमा-रीता भी 'जर्क' करने लगती हैं।

जया : हे हे हे ! च चा च चा चा !
वह झूठा था हरीसिंह
जैसे हमारे टोटू टोनू डैम झूठे थे
सच केवल तुम हो…तुम…
केवल तुम और हम…

सभी : केवल तुम और हम
केवल तुम और हम…!

पॉप संगीत और उस समूह नृत्य से सारा वातावरण भर जाता है।

पर्दा।

दूसरा दरवाज़ा

पात्र

- एक पुरुष
- पहला युवक
- दूसरा युवक
- पहली युवती
- दूसरी युवती

मंच

एक कमरा। सामने एक बेंच। दायें और बायें दो दरवाज़े। बेंच पर एक पुरुष पुराने अखबारों को लिये बैठा पढ़ रहा है—बल्कि पृष्ठों को उलट रहा है। बीच-बीच में सहसा उठकर दायें दरवाज़े से भीतर झांकने की कोशिश करता है, फिर तेज़ी से लौटकर बेंच पर बैठ जाता है। अखबार का अंबार उठाकर बायें दरवाज़े से बाहर निकल जाना चाहता है, पर डरकर फिर बेंच पर आ बैठता है। दोनों दरवाज़ों के बीच बड़ा अशांत दिखता है। धैर्य से बेंच पर लेट जाता है। फिर उठता है। फिर दोनों दरवाज़ों पर झांकता है।

सहसा तभी दायें दरवाज़े से पहला युवक जैसे धक्के खाकर निकलता है और लड़खड़ाकर फर्श पर गिर पड़ता है। उसके हाथ के काग़ज़ात ज़मीन पर बिखर जाते हैं। वह घबराहट में अपने कागज़ात इकट्ठे करने लगता है।

पुरुष : चोट तो नहीं लगी ? कुछ मदद करूं ?

पहला युवक : (चुप। कागजात संभाल रहा है।)

पुरुष : आपको किसी ने धक्का दिया ? मेरा मतलब आप···

पहला युवक : (अपने कपड़े ठीक कर रहा है।)

पुरुष : ये कपड़े आपके ही थे ? मेरा मतलब आप···।

पहला युवक : आप से मतलब ?

पुरुष : लीजिए, जिसका डर था वही हुआ। आप तो खामखा नाराज़ हो गए। मैं तो सिर्फ यह पूछ रहा था···

पहला युवक : आप यहां बैठे क्यों थे ?

पुरुष : समझ लीजिए, मैंने आपको गिरते नहीं देखा, बस्स !

पहला युवक : आप हैं कौन ?

पुरुष : देखिए, यह सवाल मैंने आपसे नहीं किया। मैंने सिर्फ यह जानना चाहा कि भीतर से आपको किसी ने धक्का दिया ?

पहला युवक : आपको यह शुबहा कैसे हुआ ?

पुरुष : यह मेरा अनुभव है।

पहला युवक : अनुभव ?

पुरुष : अखबारों में विज्ञापन छपते हैं—वानटेड···आवश्यकता है···इतने डॉक्टरों की···इन्जीनियरों की···अध्यापकों की···सहायकों की···संपादकों की···न्यूज़ रीडरों की क्लर्कों की···। आवश्यक योग्यताएं—एक-दो-तीन। विशेष योग्यताएं एक और दो—प्रिफरेन्स विल बी गिवन टू···।

पहला युवक : आपकी तबियत तो ठीक है ?

पुरुष : यही तो मैं आपसे पूछ रहा था—चोट तो नहीं आई ?

पहला युवक : नॉनसेन्स !

पुरुष : भई, मैं किसी से नहीं कहूंगा कि आप यहां इस तरह

गिर पड़े। मुझे पता है, चोट तभी महसूस होती है, जब कोई देख लेता है। विश्वास रखिए, मैंने आपको नहीं देखा।

पहला युवक : लेकिन मैंने तो आपको देखा !

पुरुष : बताइए भला, इस संयोग के लिए क्या करूं ? ज़्यादा से ज़्यादा अब यही हो सकता है कि आप फिर से आइए। चलिए, आइए। अब यही एक मानसिक उपचार है।

पहला युवक : (टाई की नॉट ठीक करता है।)

पुरुष : और एक सिगरेट पी लीजिए। जी हल्का हो जाएगा।

पहला युवक : मैं सिगरेट नहीं पीता।

पुरुष : बहुत अच्छे विद्यार्थी रहे होंगे कालेज में।

पहला युवक : थ्रू आउट फर्स्ट क्लास रहा है मेरा।

पुरुष : बधाई। कांग्रेचुलेशन। अब तो कुछ जी हल्का हुआ ?

पहला युवक : आप इन्टरव्यू में आए थे ?

पुरुष : जी हां, वही तो मैं कह रहा था। विज्ञापन—फिर इंटरव्यू, इंटरव्यू, और हर इंटरव्यू के अंत में ऐसा लगता है, किसी ने पीछे से धक्का देकर बाहर निकाल दिया। देखिए न, यहां गले पे कितने निशान हैं उन हाथों के। घुटने देखिए...। अक्सर खुजली मच जाती है यहां। खुजलाने में मजा भी आता है। हां, आपको भी आएगा, धीरज रखिए।

पहला युवक : मुझे नौकरी मिल जाएगी।

पुरुष : अगर उनका कोई चमचा न हुआ।

पहला युवक : चमचा ? ह्वाट डू यू मीन वाई चमचा ? ...

पुरुष : यस सर...जी हाँ, चरणस्पर्श.. यस सर...जी हां, चरणस्पर्श। नहीं समझे ? भई, जैसे चाय के प्याले में चीनी मिलाने के लिए चम्मच की जरूरत होती है न,

वैसे एक चमचा होता है···

पहला युवक : पता नहीं।

पुरुष : ये चमचे चारों ओर हवा में इस तरह हर वक्त मौजूद रहते हैं जैसे आक्सीजन में हाइड्रोजन। आप एम० ए० हैं या एम० एस-सी० ?

पहला युवक : बी० एस०-सी० इंजीनिरिंग !

पुरुष : अच्छी डिग्री है। सम्हालकर रखिए। थोड़ा नमक लगाकर चाटा कीजिए, हाज़मा ठीक रहेगा।

पहला युवक : आपको तमीज़ नहीं ?

पुरुष : दरअसल यही देखना चाहता था, आपको गुस्सा आता है या नहीं ?

पहला युवक : बंद कीजिए बकवास !

पुरुष : ओह ! वेरी स्मार्ट।

पहला युवक : थैंक्यू !

तेजी से जाने लगता है, तभी उसी दरवाज़े से उसी तरह दूसरा युवक आ गिरता है।

पुरुष : देखिए···देखिए···देखिए···। ओह, आई ऐम सॉरी ! हमें देखना नहीं चाहिए। जी, हमने बिल्कुल नहीं देखा आपको इस तरह गिरते हुए···यकीन कीजिए।

पहला युवक : आप···

पुरुष : जी आप भी !

दूसरा युवक : आप···

पहला युवक : आई एम सॉरी !

पुरुष : अब बताइए, मैं क्या कहूं···कैसे पूछूं और बिना पूछे रहा भी नहीं जाता, मगर कुछ कहा भी नहीं जाता। देखिए, मैं तुक तो जोड़ सकता हूं। पर आपसे कुछ पूछने

का तुक नहीं पा रहा हूं। आप पूछिए···इन्हें भी धक्का दिया गया ?

पहला युवक : किसने धक्का दिया ?

दूसरा युवक : हां, किसने ?

पहला युवक : मैंने इंटरव्यू में ऐसा कुछ नहीं कहा।

दूसरा युवक : मैं तो अपने जवाबों में बहुत काम और क्वायट था ···समझिए पेशेंस पर कमांड था मुझे।

पहला युवक : डिसिप्लिन और कांफीडेंस मेरे ब्लड में है।

दूसरा युवक : उन्होंने पूछा—'यह नौकरी क्यों करना चाहते हैं?' मैंने उत्तर दिया—'मुझे यही सबसे ज़्यादा पसंद है।'

पहला युवक : मैंने उत्तर दिया—'यही मेरे जीवन का उद्देश्य है।'

पुरुष : मेरा ख्याल है, यह जवाब कुछ ज़्यादा ही था।

दूसरा युवक : मेरी आवाज़ में शुरू से आखिर तक शराफत थी।

पहला युवक : मेरे जवाब उन्हें बेहद पसंद आते थे।

पुरुष : सबने एक ही किताब पढ़ रखी है—'हाऊ टू सक्सीड इन लाइफ एंड इंटरव्यू।'

पहला युवक : हमें किसी से क्या मतलब !

दूसरा युवक : हमें अपने काम से काम।

पहला युवक : हमारा अपना एक लक्ष्य है।

दूसरा युवक : दैट्स राइट।

पुरुष : वह लक्ष्य है महज नौकरी···दफ्तरों में बुड्ढे होने की तनख्वाह पाना।

पहला युवक : यह कौन है ?

दूसरा युवक : हमें औरों से क्या मतलब ?

पहला युवक : इक्ज़ैक्टली !

विराम।

दूसरा युवक : मगर मुझे बड़ा अजीब लगा।

पहला युवक : मुझे अब तक बड़ा अजीब लग रहा है।

पुरुष : यह पहला मौका था न, तभी...।

पहला युवक : मैंने उनके सारे सवालों के जवाब दिए।

दूसरा युवक : मुझे सारे जवाब बिल्कुल ज़बानी याद थे।

पहला युवक : मुझे तो सारे सवालात पहले से ही मालूम थे।

पुरुष : ऐसे ही होता है।

दूसरा युवक : क्या बकता है ?

पहला युवक : बेकार !

दूसरा युवक : क्या हमें यहां इन्तज़ार करना होगा ?

पहला युवक : ऐसा कुछ कहा तो नहीं गया। इससे पूछा जाए ..

दूसरा युवक : आप पूछिए।

पहला युवक : आप ही पूछिए ना !

दूसरा युवक : नहीं आप...।

पुरुष : अजी, आप आप में गाड़ी छूट जाएगी।

पहला युवक : आपको यहां रुकने के लिए कहा गया ?

पुरुष : मुझे ?

दूसरा युवक : आप भी इंटरव्यू दे आए हैं ?

पुरुष : हां, देता रहा हूं, करीब ग्यारह सालों से।

दूसरा युवक : मेरा मतलब इस इंटरव्यू से है।

पुरुष : अब मैं इन्टरव्यू नहीं देता। आप शौक से कह सकते हैं, मैं बुलाया नहीं जाता। ओवरएज। पर मुझे भाग्य में विश्वास है...एक ज्योतिषी ने लिखकर दिया है—'ओवरएज के बावजूद एक दिन आप नौकरी में रख लिए जाएंगे।' आपको यकीन हो या ना, उसमें बता रखा है...जब राहु की दशा खत्म होकर सूर्य अपने घर से निकलकर दाएं वाले घर में प्रवेश करेगा तो एक दिन अचानक ऐसा होगा कि इंटरव्यू में सारे कैंडीडेट

जब रिजेक्ट कर दिए जाएंगे तो बिना इंटरव्यू के मैं रख लिया जाऊंगा।

पहला युवक : वाह !

पुरुष : अजी, मुझे सब रहस्य मालूम है। मसलन, मुझे यहां तक पता है—'आपसे पहला सवाल यह पूछा गया होगा कि आपके पिता क्या हैं ?'

दोनों : दैट्स राइट !

पुरुष : यह भी पूछा गया होगा—आप शादीशुदा हैं या···?

पहला युवक : यह तो एप्लीकेशन फार्म में बता दिया गया है।

दूसरा युवक : अनमैरिड !

पुरुष : देखिए ना, एप्लीकेशन फार्म कोई नहीं पढ़ता। न डिग्रियों को देखा जाता है न डिप्लोमे। जी हां। और यह भी पूछा गया होगा—'आपके जीवन का लक्ष्य क्या है ?'

पहला युवक : जी हां, मैंने बताया—'भारत का एक आदर्श नागरिक !'

दूसरा युवक : यही उत्तर तो मैंने भी दिया।

पुरुष : बिल्कुल ! इससे बढ़कर आदर्श उत्तर और क्या हो सकता है ? सुनिए, यह भी पूछा गया होगा, कि आप क्रांति में विश्वास रखते हैं या सुधार में ?

पहला युवक : जी, सुधार में···यहां तक कि मैंने सर्वोदय का नाम लिया।

दूसरा युवक : मैंने पार्लियामेंट्री डिमोक्रेसी कहा।

पुरुष : देखिए ना, फिर आप लोगों को धक्का देकर क्यों निकाला गया ?

पहला युवक : देखिए महाशय जी, आपने कहा था, यह धक्के वाली बात आप कभी नहीं कहेंगे।

दूसरा युवक : ये हमारी निजी बातें हैं। और दरअसल धक्का तो किसी ने नहीं दिया।

पहला युवक : बिल्कुल।

पुरुष : अजी···मैं अपनी बात कह रहा हूं—ऐसा बार-बार महसूस हुआ कि किसी ने गर्दन चांपकर बेरहमी से धक्का दिया।

दूसरा युवक : पता नहीं।

विराम।

पहला युवक : अब चलना चाहिए।

दूसरा युवक : गुडबाई!

पहला युवक : आप नहीं चलेंगे?

दूसरा युवक : चलिए, मैं आता हूं।

पहला युवक बायें दरवाजे पर जाता है और भयभीत पीछे मुड़ता है।

दूसरा युवक : क्या हुआ? बात क्या है?

पहला युवक : मुझे अजीब डर लगा···अजीब भयानक···डरावना!

दूसरा युवक : क्या?

पहला युवक : मैं कुछ बयान नहीं कर सकता।

पुरुष : आप तो इस कदर कांप रहे हैं।

पहला युवक : इधर जाना खतरनाक है।

पहला युवक बेंच पर जा बैठता है।

पुरुष : अजी मैं देखता हूं।

उठकर जाता है।

पुरुष : अरे···कमाल है···इधर तो ऐसा कुछ भी नहीं। बाहर बरामदा है···बरामदे के बाहर लान है। लान के ऊपर नीला आसमान···लान के चारों ओर फूल-पौधों के पेड़ पर दो कौए बैठे मजे से कांव-कांव कर रहे हैं। मेरा

ख्याल है यह मिस्टर एक्स 'पेरानौइया' के मरीज हैं।

पहला युवक : शटअप। आई एम नॉट मिस्टर एक्स !

पुरुष : अच्छा 'वाई' सही।

पहला युवक : कीप क्वायट !

पुरुष : अच्छा अच्छा, मिस्टर 'ज़ेड' सही।

पहला युवक : आई से, शटअप !

सन्नाटा।

पुरुष : मिस्टर आप ही देख लीजिए...यह तो खामखा मुझ पर लाल-पीले हो रहे हैं।

पहला युवक : अगर तुम सामने पड़ गए होते तो यहां बेहोश गिरते।

दूसरा युवक : ऐसा !

पहला युवक : हां हां, ऐसा।

पुरुष : अजी वहम है इनका...वही पेरानौइया।

पहला युवक : तुम चुप रहते हो या नहीं !

पुरुष : तो आप से तुम पर आ गए। सच है, डर इंसान को करीब ला देता है। यकीन रखिए, मैं भाषण नहीं दूंगा।

पहला युवक : (**भयभीत है।**)

पुरुष : जाइए साहब, आप देखिए, वरना इनका वहम दूर न होगा। जाइए ना, डरते क्यों हैं ?

दूसरा युवक : अजी कैसा डर...मैं एन० सी० सी० में कैप्टन रहा हूं।

पुरुष : शावाश ! कुइक मार्च...लेफ्ट राइट...लेफ्ट...।

पहला युवक : बंद करो मज़ाक !

दूसरा युवक दरवाज़े पर बढ़ता है।
वह जैसे आहत हो चीख पड़ता है।

पुरुष : अरे !

दूसरा युवक : (**भयभीत**) हू हू हू हू हू.. हू... !

पहला युवक : (**चीखता है**) पुलिस...पुलिस !

पुरुष : (संभालता है) आइए…आइए…यहां बैठिए…। बहुत चोट लग गई। लीजिए रूमाल से बांध लीजिए।

पहला युवक : किस चीज़ से मारा ?

दूसरा युवक : लोहे के रॉड से…।

पुरुष : लोहे के रॉड से ? पर मैंने नहीं देखा।

पहला युवक : तुम अन्धे हो।

पुरुष : हो सकता है।

पहला युवक : अब जाओ तुम !

पुरुष : क्यों नहीं · क्यों नहीं। (सहसा) पर मैं किसी के कहने से क्यों जाऊं ? मैं एक आज़ाद इंसान हूं। मैं किसी का नौकर नहीं।

पहला युवक : अच्छा, आप अपनी ही खुशी से जाइए !

पुरुष : मेरी खुशी मेरी है।

दूसरा युवक : (चीखता है) तो खुदकुशी करो ना !

पुरुष : वाह वाह वाह ! मुझे अभी नौकरी लेनी है।

पहला युवक : आप तो किसी के नौकर नहीं।

पुरुष : वह मेरी खुशी है…बल्कि मेरी आज़ादी है…मैं चाहूंगा तभी नौकरी करूंगा। आप नहीं समझे। मेरी खुशी… मेरा चाहना…मेरी आज़ादी (सहसा) ओह, आपको बहुत दर्द हो रहा है। मैं कहता हूं, यह दर्द आपके चाहने न चाहने पर मुनहसर करता है। आप न चाहें तो यह दर्द नहीं होगा।

दूसरा युवक : आपने देखा था…कितने लोग थे ?

पहला युवक : तादाद नहीं गिन पाया। कित्ते लोग थे ?

दूसरा युवक : सिर्फ कुछ शक्लें देखीं·· पहचानना चाहा तभी यह चोट…।

पहला युवक : किसी ने बाकायदा मारा ?

दूसरा युवक : कुछ नहीं कह सकता···बस्स ।

पहला युवक : कित्ता अजीब है !

पुरुष : अजी, लोग कहेंगे यह बच्चों की कहानियां हैं···और हंसेंगे ! (विराम) मगर हां, मैं कहे देता हूं—मैं अब तक विचलित नहीं । मुझे भरोसा है, यकीन है, विश्वास है—दिस इज़ माई फेथ···जो भाग्य में होता है वही होता है। इस क्षण आपको एक दैवी चोट पहले से निश्चित थी···।

दूसरा युवक : दैवी नहीं···हाड़-मांस के लोग । जाकर देखते क्यों नहीं ?

पुरुष : मैं किसी का गुलाम नहीं । जाऊंगा तो अपनी इच्छा से ·· ना जाऊंगा तो भी अपनी मर्ज़ी से। यहां मैं अपनी मर्ज़ी से ही आया था। आप लोग यहां बुलाने से आए थे। मतलब समझ लीजिए, हां।

सन्नाटा।

पहला युवक : आपकी वह इच्छा कब होगी ?

पुरुष : मेरी मर्ज़ी···जब मैं चाहूंगा।

पहला युवक : कब चाहेंगे ?

पुरुष : दिस इज़ नन ऑफ़ योर बिज़नेस !

दूसरा युवक : डैम···!

सन्नाटा।

पुरुष : कोई मुझसे अगर यह पूछता है कि मेरी इच्छा क्या है···कब होगी—मैं इसे अपनी निजी स्वतंत्रता पर सरासर आक्रमण समझता हूं।

दोनों युवक एक किनारे खड़े हो गए हैं। पुरुष फिर अपनी बेंच पर जा बैठता है।

पहला युवक : मैं अपने घर से बिल्कुल ठीक वक्त पर चला था। मुझे ऐसा कोई अंदेशा नहीं था।

दूसरा युवक : मैं अपनी घड़ी देखकर चला था, और सीधे यहीं आया।

पहला युवक : न मेरी किसी से दुश्मनी है न दोस्ती।

दूसरा युवक : मुझे तब तक अपने जीवन का लक्ष्य याद था।

पहला युवक : मुझे अब सब कुछ धुंधला नज़र आ रहा है।

दूसरा युवक : मुझे सीधे डाक्टर के पास जाना होगा।

पहला युवक : क्या हम पुलिस को फोन नहीं कर सकते ?

दूसरा युवक : हमें यहां चारों ओर से काट दिया गया है।

पहला युवक : और यह महाशय अपने को आज़ाद कहते हैं !

पुरुष : देखिए, आज़ादी एक मानसिक सत्य है। अगर मैं आपके कहने में आता तो अपनी आज़ादी से हाथ धो बैठता।

पहला युवक : क्या हम तीनों मिलकर मुकाबिला नहीं कर सकते ?

पुरुष : किसी से मिलने के मतलब हैं अपने व्यक्तित्व की विशेषता खोना।

दूसरा युवक : भाड़ में जाओ !

पुरुष : किसी के कहने से क्यों जाऊं ?

दायें दरवाज़े से ठहाका मारकर हंसती हुई पहली युवती का प्रवेश।

पुरुष : अरे, हंसना तो बंद करो। आजकल की लड़कियां भी कमाल हैं !

पहला युवक : अरे रे रे !

दूसरा युवक : अजीब है !

पहली युवती : पूछते हैं...'आप किसी जगह टिकती क्यों नहीं ?' मैंने वह जवाब दिया कि साले मुंह देखते रह गए।

पहला युवक : क्या जवाब दिया ?

पहली युवती : मुंहतोड़ जवाब !

दूसरा युवक : बताइये न !

पहली युवती : 'बेशर्म, हर लड़की कॉल गर्ल नहीं हो सकती।'

पुरुष : मगर इसके पहले उन्होंने पूछा होगा, 'आपका एक्सपीरियेंस क्या है ?'

पहली युवती : मेरा एक्सपीरियेंस यह है कि डिग्री और योग्यता कुछ नहीं है…असल चीज़ है… कोई कितना झुक सकता है…कोई कितना बिक सकता है।

पहला युवक : आपमें कितना साहस है !

दूसरा युवक : बड़ी बोल्ड है।

पहली युवती : इत्ती चापलूसी की ज़रूरत मुझे नहीं। ऐसा एक दिन अपने आप हो जाना पड़ता है।

पहला युवक : मगर तब नौकरी ?

दूसरा युवक : भविष्य ?

पहली युवती : मुझे नौकरी और भविष्य नहीं, परिवर्तन चाहिए।… नहीं समझे ? वे लोग भी नहीं समझे…इसे कोई नहीं समझता। घर में अपनी बोरियत से बचने के लिए मैंने एम० ए०, बी० टी०, बी० एड०, फिर लाइब्रेरी डिप्लोमा किया। नौकरियां कीं… लेकिन एक से दूसरे में कोई फर्क नहीं। जैसे बी० ए० और एम० ए० में कोई फर्क नहीं। जैसे एक पुरुष से दूसरे पुरुष में कोई फर्क नहीं… जैसे एक नौकरी से दूसरी नौकरी में कोई फर्क नहीं। और उदाहरण दूं ?

पुरुष : हां, चुप रहने से तो अच्छा ही है, आप बोलती रहें। आखिर आप लोगों के जीवन का मात्र लक्ष्य है—दूसरों को प्रभावित करना, बस !

पहली युवती : यह बौड़म आदमी कौन है ?

दोनों युवक हंसने लगते हैं।

पहला युवक : इस गुस्सा नहीं आया।

दूसरा युवक : कैसा नार्मल आदमी है !

पुरुष : हां हां, आप लोग कुछ भी कहें, कुछ भी करें, मैं अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को हाथ से जाने नहीं दूंगा। याद रखिए, स्वतंत्रता मेरे लिए धर्म है।

पहली युवती : अर्थात्, धर्म तुम्हारे लिए राजनीति है।

पुरुष : यह आपकी स्वतंत्रता है।

पहली युवती : स्वतंत्रता मेरे लिए महज़ राजनीति है।

पुरुष : कोई और बात कीजिए।

पहली युवती : और बातें महज़ मौसम की हो सकती हैं।

पुरुष : मौसम भगवान की माया है !

पहला युवक : और इस कमरे का वातावरण ?

पुरुष : यहां उसकी इच्छा के बिना एक पता नहीं हिलता।

दोनों युवक युवती से अलग पूरी स्थिति चुपचाप बताते हैं। युवती पूरी स्थिति को समझती है।

पुरुष : मुझे पता है, आप लोग चुपचाप क्या खिचड़ी पका रहे हैं। मुझ पर इसका कोई असर नहीं। मेरी जो मर्ज़ी होगी वही करूंगा।

पहली युवती : आपकी मर्ज़ी या इच्छा का मालिक कौन है, मेरा मत-लब इसे आपके भीतर कौन पैदा करता है ?

पुरुष : (हंसता है।) देखिए आप मुझे बातों में फंसाने की कोशिश मत कीजिए…मैं सारा चक्कर समझता हूं। आप यही साबित करना चाहती हैं न कि मनुष्य की इच्छा का संबंध उसकी बाहरी परिस्थियों से—ऑब्जेक्टिव रियल्टी से है ?

पहली युवती : नहीं ।

पुरुष : भाग्य में ही कर्म है और कर्म में ही भाग्य है।

पहली युवती : बौड़म साला!

पुरुष : देखिए, यह पहले से निश्चित था कि हम लोग यहां इस तरह इकट्ठा होंगे और आप मुझे अपशब्द कहेंगी।

पहला युवक : फिर आप स्वतंत्र कहां है···अगर सब कुछ इस तरह पहले से निश्चित है?

पुरुष : यही तो बात है जनाब, तभी मैं स्वतंत्र हूं।

दूसरा युवक : बड़ा अजीब है!

पहला युवक : इसका अटूट विश्वास देखो।

पहली युवती : विश्वास नहीं, अंधविश्वास!

पुरुष : छोड़िए, इन बातों में क्या रखा है! यह बताइये, और क्या-क्या पूछा गया आपसे?

पहली युवती : आप यहां खड़े होइए फिर बताऊं···चलिए उधर।

पहली युवती बेंच पर बैठ जाती है और वह जैसे पुरुष से इंटरव्यू लेने लगती है।

पहली युवती : आपका नाम?

पुरुष : लिखा है, पढ़ लीजिए।

पहली युवती : अपना नाम बताने में शर्माती हैं?

पुरुष : ऐसा ही समझ लीजिए।

पहली युवती : आपकी उमर?

पुरुष : वह भी लिखा है—कालम नम्बर तीन में।

पहली युवती : शादी के बारे में आपके क्या ख्यालात हैं?

पुरुष : शादी अच्छी चीज है, इससे इंसान की सेहत ठीक रहती है।

पहली युवती : आप पहले टीचर थीं···फिर एक एडवरटाइजिंग फर्म में थीं···फिर कुछ दिनों बेकार रहीं···फिर रिसर्च

करने लगी···आपके रिसर्च का सब्जेक्ट क्या था ?

पुरुष : चीन का प्राचीन इतिहास···।

पहली युवती : ह्वाट नानसेन्स···यह सब्जेक्ट आपको किसने दिया ?

पुरुष : बस, मिल ही गया।

पहली युवती : अच्छा हुआ आपने रिसर्च छोड़ दिया।

पुरुष : जी, उस टीचर से मेरी शादी हो गयी, जो मेरा गाइड था।

दोनों युवक हंसते हैं।

पुरुष : देखिए, ये लोग ही-ही कर रहे हैं। मुझे शरम आती है।

पहली युवती : आर्डर आर्डर···

पुरुष : बस···बस···खत्म !

पहला युवक : शी···शोर नहीं। वे लोग दरवाज़े पर झांक रहे हैं !

दूसरा युवक : (**भयभीत**) सावधान ! वे लोग कमरे में घुस आ सकते हैं। मत देखो उधर। आओ, हम लोग दीवार की ओर···

दोनों दीवार की ओर मुंह करके चुपचाप खड़े हो जाते हैं।

पहली युवती : कमाल है, आपको मेरे सारे सवालात मालूम हैं !

पुरुष : (**भयभीत**) शी ! ···

पहली युवती : (**हंसती है।**)

तीनों : शी !!

सन्नाटा।

पुरुष : (**सहसा**) लेकिन हमें···इस तरह चुप नहीं रहना चाहिए···।

दोनों : शी !!

पहली युवती बायें दरवाज़े पर झांकती है।

पहली युवती : हां हां, मैंने भी देखा।

तीनों : कौन हैं वे ? क्या हैं ?

पहली युवती : वे लोग बुला रहे हैं मुझे !

पहला युवक : नहीं नहीं···नहीं !

दूसरा युवक : मत जाओ···वे हत्यारे हैं !

पुरुष : शी ! ···चुप रहो। वे शायद वही लोग है जो हत्या की राजनीति में विश्वास करते है।

तीनों : शी ! !

सन्नाटा।

पहली युवती : ओह, तुम भी इत्ते डर गए ? कहां गई तुम्हारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता ?

पुरुष : इस समय यही है मेरी इच्छा।

पहली युवती : इच्छा से डरा भा जाता है ?

पहला युवक : (धीरे से) शी ! ! ···कोई झांक रहा है !

दूसरा युवक : उधर मत देखो।

पहली युवती : वे इशारे कर रहे हैं।

सन्नाटा। भीतर से बेतरह रोती हुई दूसरी युवती आती है।

सभी : अरे···क्या हुआ ?

पुरुष : मेरा ख्याल है, पहले इन्हें खूब रो लेने दिया जाए।

पहली युवती : बको मत !

पुरुष : आप किसी की आजादी पे डाका डालना चाहती है ?

पहली युवती : प्लीज़ सुनिए तो···शांत होइए···डोंट बी चाइल्ड।

दूसरी युवती : उन लोगों ने मेरा अपमान किया। जो जो कहा, मानती गई, फिर भी !

पहला युवक : (आपस में) क्या-क्या कहा होगा ?

दूसरा युवक : (परस्पर) हां, क्या कहा होगा ?

दूसरी युवती : मैंने किससे-किससे दोस्ती की। उनसे सिफारिश कराई।

पहली युवती : अब सिर्फ एक ही चीज़ है—भय।

पुरुष : सबकी आज़ादी लूटना चाहती हो!

पहली युवती : कैसी आज़ादी? बताओ यहां कौन है आज़ाद?

पुरुष : कौन आज़ाद नहीं है?

पहली युवती : उल्लू के पठ्ठे! दिन-रात चारित्रिक पतन देखते-देखते जड़ होते जा रहे हैं···यही है हमारी आज़ादी!

दोनों युवक : शी!!

सन्नाटा।

पहली युवती : बंद करो रोना!

दूसरी युवती : मेरी मां विधवा है·· मेरे दो छोटे-छोटे भाई हैं। मेरे लिए नौकरी जीवन-मरण का सवाल है।

पहली युवती : पर बुनियादी सवाल कुछ और है—तुम समझतीं क्यों नहीं?

दूसरी युवती : मेरी समझ में और कुछ नहीं आता।

पहली युवती : हमें नौकरी और शादी के अलावा और कुछ बताया नहीं गया।

सन्नाटा।

पुरुष : आपने उन्हें बताया—शादी अच्छी चीज़ है, इससे सेहत अच्छी रहती है···इस पर उन्होंने क्या कहा?

पहली युवती : आपको तो सब मालूम है।

पुरुष : मुझे सिर्फ आपके जवाब मालूम हैं···उनके रिएक्शन नहीं।

पहली युवती : उन्होंने कहा—'देखिए न, हम सब शादी-शुदा हैं, पर हमारी सेहत नहीं···किसी को ब्लड प्रेशर है, किसी को हाई ट्रबल, किसी को पेप्टिक अल्सर। मैंने कहा—

'आप सब बेईमान हैं—इसीलिए बीमार हैं।'

पुरुष : आपने ऐसे ऊटपटांग उत्तर दिए तभी इसकी यह दशा हुई। आपका गुस्सा उन्होंने इस गरीब लड़की पर उतारा।

पहली युवती : तुम हमें लड़ाना चाहते हो।

पुरुष : पर यह हकीकत है।

दूसरी युवती : वे लोग बेहद गुस्से में थे।

पहली युवती : तुमने चप्पल क्यों नहीं दे मारा?

दूसरी युवती : तूने आग लगाई, वरना मुझे नौकरी मिल जाती!

पहली युवती : झूठ। यह इंटरव्यू फार्स था!

दूसरी युवती : नहीं, नहीं।

पहली युवती : नौकरी पहले ही किसी को दे दी गई है।

दूसरी युवती : चुड़ैल···!

दूसरी युवती पहली युवती पर टूट पड़ती है और पागलों की तरह उसे नोचने लगती है।

पहली युवती : (अपने को बचाती हुई) मारो, मारो, इस दगाबाज को!

दोनों युवक पुरुष पर पिल पड़ते हैं। चीख और शोर से सारा वातावरण भर जाता है। तभी बायें दरवाजे पर से कई मुखों से एक भयानक स्वर—'हप्प' फूटता है। सब भयभीत मूर्तिवत् खड़े रह जाते हैं।

पुरुष : हमें ईश्वर को याद करना चाहिए। सिर्फ वही हमें बचा सकता है।

पहला युवक : ईश्वर क्या है?

दूसरा युवक : हमने एक कैलेंडर में उसका चित्र देखा था।

पुरुष : उसके असंख्य हाथ और मुख हैं।

पहली युवती : तभी यहां भोजन-वस्त्र का अकाल है।

दूसरी युवती : सुना है, डाइरेक्टर जनरल का अपना कोई कैंडीडेट नहीं था, इसीलिए यह जगह फिर से एडवरटाइज़ की जाएगी।

पहली युवती : और फिर वही फार्स होगा। जिसमें होंगे दो हीरो, दो हीरोइन···और एक विलन···

पुरुष : मुझे विलन कहती हैं ?

पहली युवती : नहीं जनाब, आप तो युवती हैं···विलन मैं हूं।

दोनों युवक हंसते हैं, पुरुष 'शी !' करता है। सब चुप।

पहली युवती : पर डरने से क्या होगा ?

दूसरी युवती : तुम्हें क्या,···कोई जिम्मेदारी नहीं···कोई कमी नहीं। मैं भी तुम्हारी तरह खूबसूरत, स्मार्ट होती तो···।

पहली युवती : अब तक आत्महत्या कर चुकी होतीं।

पहला युवक : शी ! ! धीरे-धीरे।

सन्नाटा।

दूसरी युवती : दस रुपये उधार लिये···यह जूड़ा बनवाने में···दो घंटे तक सेलून की क्यू में···। टैक्सी में आई···ताकि मेक-अप न बिगड़े।

पहली युवती : किसने कहा यह सब करने को ?

दूसरी युवती : मां ने कल से ही व्रत रखा है।

पुरुष : इंसान को आस्थावान होना ही चाहिए।

पहला युवक : कद्दू होना चाहिए।

दूसरा युवक : गधा होना चाहिए।

पहली युवती : बंदूक, पिस्तौल···डैगर होना चाहिए !

दूसरी युवती : प्लीज़, मुझे जरा बाहर तक पहुंचा आइए।

किसी का साहस नहीं होता। दूसरी युवती अकेली बाहर जाने लगती है, सहसा चीखकर लौटती है।

सभी : क्या देखा ? क्या था ? कैसे लोग थे ? जानवर ? कुछ लोग ?

पहली युवती : खामोश ! उसका कोई परिचय नहीं।

पुरुष : तुमने देखा है ?

पहली युवती : हम सबने देखा है···हर रोज़ देखते हैं, दफ्तर, अस्पताल, स्कूल, कालेजों से लेकर मन्दिर, गुरुद्वारे और अदालतों तक।

पहला युवक : क्या ?

दूसरा युवक : क्या ?

पुरुष : शी ! !

दूसरी युवती : शी ! !

पहली युवती : एक सर्वग्रासी निराशा···!

ठहाका मारकर हंस पड़ती है। शेष सभी भयभीत हैं। दोनों युवक और दूसरी युवती एक किनारे खड़े होकर।

पहला युवक : इसे ज़रा भी डर नहीं।

दूसरा युवक : बड़ी बहादुर है।

दूसरी युवती : खाक है ! शो आफ़ करती है।

पहला युवक : इसने कितनी नौकरियां छोड़ी हैं।

दूसरा युवक : कितनी पढ़ी-लिखी है।

दूसरी युवती : कितने मर्द भी छोड़े हैं।

पुरुष भी आकर इस मंडली में शामिल होता है।

पुरुष : जी, और क्या हाल-चाल हैं ?

पहली युवती भी आती है।

पहली युवती : इस कदर चुप क्यों ? इस शून्य को भरने के लिए बातों से बेहतर चीज और क्या हो सकती है ?

पहला युवक : कित्ता गंदा वक्त आ गया है !

दूसरा युवक : लोगों में कित्ता पतन हो रहा है।

पहली युवती : कोई और बात नहीं कर सकते ?

सन्नाटा।

दूसरी युवती : यह नौकरी तेरी वजह से गई।

पुरुष : यही ख्याल मेरा भी है।

पहली युवती : कोई और ख्याल ?

विराम।

पहला युवक : मेरे पांव कांप रहे हैं।

दूसरा युवक : आई ऐम इक्ज़ास्टेड।

पुरुष : मैंने फिर भी अपनी विशेषता नहीं खोई है।

दूसरी युवती : फेड अप···बोर !

सब एक-एक कर उसी बैंच पर बैठ जाते हैं।

पहला युवक : वक्त काटने के लिए यहां सिगरेट भी नहीं।

दूसरा युवक : आज सुबह से सिगरेट नहीं पी।

पहली युवती : चलिए···बारी-बारी से कोई कहानी कहिए।

पुरुष : यही अच्छा रहेगा।

पहला युवक : मुझे कोई कहानी नहीं आती !

दूसरा युवक : मुझे भी नहीं।

पुरुष : मुझे आती है···पर मेरी इच्छा नहीं।

पहली युवती : आप सुनाइए।

दूसरी युवती : कोई याद नहीं।

सन्नाटा।

पहली युवती : अच्छा, मैं सुनाती हूं—ध्यान से सुनिए !

पहला युवक : मगर जोर-जोर से नहीं !

दूसरा युवक : हां, आहिस्ते !

विराम।

पहली युवती : सुनिए। एक थे गांधीजी ! ···ठीक से बैठिए···हिलिए-डुलिए नहीं। हां तो, एक थे गांधी जी। आप मुंह बंद कीजिए। इधर-उधर क्या देखते हैं ? सुनिए···गौर से सुनिए···एक थे गांधी जी। खुजलाइए नहीं···बटन फिर बंद कर लीजिएगा। हां, तो एक थे गांधी जी। आप टांग क्यों हिलाते हैं। चुपचाप बैठिए। हां तो भइया, एक थे गांधी जी ! बैग क्यों खोल रही हैं ? मेकअप ठीक तो है। चुपचाप सुनिए। हां तो एक थे गांधीजी ! ···खांसिए नहीं···खांसिए नहीं। ध्यान से सुनिए। हां तो एक थे गांधी जी। लीजिए, आप तो कान खुजलाने लगे ! मुझे गुस्से से क्यों देखते हैं ? कहानी तो सुना रही हूं।

पुरुष : तो सुनाइए ना !

पहली युवती : सुनते तो हैं नहीं। सुनिए। एक थे गांधी जी।

पहला युवक : आगे बढ़िए ना।

दूसरा युवक : एक थे गांधी जी···एक थे गांधी जी !

पहली युवती : आप लोग कहानी को आगे बढ़ने ही नहीं देते !

दूसरी युवती : हमने क्या किया ?

पहली युवती : अच्छा सुनिए···सुनिए। एक थे गांधी जी·· देखिए आप उधर देखने लगे। उधर क्या देख रहे हैं ?

पहला युवक : तो आप सुनाइए ना।

पहली युवती : किसे सुनाऊं ? कोई सुनने को तैयार भी है ?

दूसरा युवक : कहानी कभी आगे भी बढ़ती है ?

पुरुष : वही एक रट···एक थे गांधी जी···एक थे गांधी जी !

दूसरी युवती : एक ही बात सुनते-सुनते कान पक गए। बोर !

पहली युवती : अच्छा अच्छा···सुनिए। ध्यान से सुनिएगा तो कहानी आगे ज़रूर बढ़ेगी !

सभी : सुनाइए···सुनाइए।

पहली युवती : हां, तो भइया एक थे गांधी जी। देखिए आप जम्हाई लेने लगे।

पहला युवक : आपसे मतलब ? आप कहानी सुनाइए ना।

पहली युवती : कहानी से मतलब है इन बातों का।

दूसरा युवक : बकवास ! इन बातों से कहानी का क्या मतलब ?

पहली युवती : तब तक कहानी आगे बढ़ेगी ही नहीं।

पुरुष : अच्छा·· अच्छा, अब बिल्कुल कहीं कुछ नहीं होगा। सुनाइए।

पहली युवती : हां, तो भइया मैं सुना रही थी···कहां तक सुनाया था ?

पहला युवक : (गुस्से में) एक थे गांधी जी !

पहली युवती : आगे कुछ नहीं सुनाया ? कमाल है···ऐसा क्यों ?

पुरुष : उल्लू बना रही हैं ?

दूसरी युवती : यह फस्ट क्लास बोर है !

सब बातों में लग जाते हैं।

पहली युवती : देखिए···देखिए···आप लोग तो गुस्सा करने लगे फिजूल बातों पर, कहानी आगे कैसे बढ़े ? आपस में चक-चक करने लगे, फिर कहानी आगे कैसे बढ़े ?

पुरुष : (गुस्से में) तो आगे कहिए ना।

पहली युवती : सुनिए। एक थे गांधी जी।···देखिए आप लोग नौकरी की बातें सोचने लगे। आपका ध्यान न जाने किधर है। आप किस कदर डरे हुए हैं।

सभी : आपसे मतलब ? हम भीतर कुछ सोचें !

पहली युवती : आप सोचें कुछ और···और उम्मीद रखें कि कहानी आगे बढ़े ! कहानी हर्गिज़ आगे नहीं बढ़ सकती।

दूसरी युवती : बंद करो अपनी मनहूस कहानी।

सब उठ जाते हैं।

पहली युवती : कहानी आगे बढ़ती ही नहीं तो मैं क्या करूं ?

पुरुष : कहानी आगे नहीं बढ़ी ? हम आज़ाद हुए, हमने इतनी तरक्की की···

पहली युवती : पर कहानी आगे कहां बढ़ी ?

पुरुष : दिमाग खराब है।

सन्नाटा।

पहला युवक : शायद वजह हम हैं, कहानी आगे नहीं बढ़ती।

दूसरा युवक : क्यों ?

पहली युवती : कहानी तब बढ़ेगी ना, जब कुछ होगा।

पुरुष : कुछ हुआ ही नहीं ?

पहली युवती : बस—एक थे गांधी जी।

पहला युवक : इस तरह यहां बैठना गैर-मुमकिन है।

दूसरा युवक : चलिए, सुनाइए···

दूसरी युवती : मगर कहानी बढ़नी चाहिए, वरना···।

पुरुष : मगर वह कहानी नहीं, दूसरी···।

पहला युवक : और धीरे धीरे।

दूसरा युवक : शी ! !···किसी ने झांककर हमें देखा है।

सन्नाटा। लोग कहानी शुरू करने के लिए इशारे करते हैं। पहली युवती निःशब्द कहानी सुनाने लगती है।

पुरुष : यह क्या तमाशा ?

पहली युवती : सुना तो रही हूं।

दूसरी युवती : अपना सर !

पहली युवती : तो बोलकर सुनाऊं ? सुनिए···ठीक से बैठ जाइए··· बिल्कुल हिलिए-डुलिए नहीं। चुपचाप।···हां तो एक थे गांधी जी। सुन रहे हैं ना, एक थे गांधीजी। हां तो थे एक गांधी जी। थे, तब यह तो समझ गए। अब आगे सुनिए···सुन रहे हैं ना ? हां तो एक थे गांधी जी। भाई थे एक गांधी जी। मेरा मतलब एक थे गांधी जी। भाई, थे एक गांधी जी। मेरा मतलब एक गांधी जी थे। अब आगे यह हुआ कि···वह थे···और थे। गांधी जी थे। भाई थे···इसके आगे सुनिए। एक थे गांधी जी। थे, यही तो कह रही हूं। हां, तो एक थे गांधी जी।

पहला युवक : (चीखता है) आगे क्या हुआ ?

पहली युवती : यही कि एक थे गांधी जी।

दूसरा युवक : वह तो सुन लिया। आगे ?

पहली युवती : आगे, एक थे गांधी जी···अब बताइए मैं क्या करूं ?

दूसरी युवती : मैं तेरा सिर तोड़ दूंगी !

पुरुष : यह पागल है। मारो इसे !

सब उस पर टूट पड़ते हैं। युवती गिर गई है। सब दूर खड़े रह गए हैं और क्रोध से लोगों की सांसें फूल रही हैं।

पहली युवती : (उठती हुई) आपके जीवन के लक्ष्य हैं नौकरी··· दफ्तरों में बुड्ढे होने की तनखाह···सारे सवालातों के जवाब रहे हैं···अपने अलावा किसी और से मतलब नहीं। सब भारत के आदर्श नागरिक···सुधार में विश्वास। भारत, संसार के नक्शे में कहां है, यह पता नहीं। उसे टटोलकर ढूंढना चाहते हैं। और जब धक्के दिए जाते हैं···तो वही ईश्वर याद आता है···फिर भी

चाहते हैं, कहानी आगे बढ़े। कहानी होना नहीं चाहते···कहानी सुनना चाहते हैं। कहानी बढ़ाना नहीं चाहते···बस, कहानी अपने आप बढ़ जाए! कहानी सुनकर मन बहलाना चाहते हैं·· शून्य को भरने के लिए इन्हें कहानी चाहिए···पर कहानी आगे क्यों नहीं बढ़ती···यह नहीं पूछते···! पैंट्स की क्रीज़ न ख़राब हो जाए···चाहे ये खुद ख़राब हो जाएं··· चाहे धक्के खा-खाकर···।

सभी : चुप रहो।

सभी : शी! शी!!

पहली युवती : यहां दिन-रात, हमेशा, नैतिक पतन देखते-देखते एक सर्वग्रासी निराशा हमें अपनी ओर खींचे लिये चली जा रही है···सुनो···सुनो आगे की कहानी···सुनो।

बायें दरवाज़े पर सहसा कुछ तने हुए हाथ दिखाई देते हैं। उन हाथों में—डैगर, भाले, बंदूक, तलवार, लोहे के रॉड, छुरी आदि सधे हैं। भयभीत मस्त लोगों की नजरें उन तने हुए हाथों से जैसे चिपक जाती हैं। पुरुष के अलावा सभी न चाहते हुए भी उन्हीं हाथों की ओर खिचने लगते हैं।

पुरुष : नहीं···नहीं···! मत जाओ उधर···वे हत्यारे हैं··· रुको···रुको···!

सब बढ़ रहे हैं। पुरुष, अंतिम पहले युवक को पकड़कर उधर जाने से

देता है। पुरुष फर्श पर गिर जाता है। सब चले जाते हैं। हाथ अदृश्य हो जाते हैं। पुरुष उठता है।

पुरुष : मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता। मैं अब भी आज़ाद हूं। मैं उन हाथों को चुनौती दे सकता हूं। डांट सकता हूं। अबे हाथ ! आ निकल ! ···देखिए न, वे हाथ मुझसे डर गए। उनकी हिम्मत नहीं कि वे फिर इधर दिखाई दें।···मैं अब मज़े से बाहर जा सकता हूं···मगर क्यों जाऊं ? जब तक मेरी इच्छा न हो ! ···हो सकता है··· भीतर मेरी ही नियुक्ति हो जाए। मैं अपने विश्वास पे अटल हूं···।

बेंच पर आकर बैठता है और उन्हीं अखबारों को उलटने-पढ़ने लगता है।

धीरे-धीरे अंधेरा छा जाता है।

फिर बताऊंगी

पात्र

- मालती
- शंकर
- अफसर
- शर्मा
- त्यागी
- मेहरोत्रा
- रहमान
- माला
- प्रहलाद

मंच

एक दफ्तर का बड़ा-सा कमरा, जिसमें अपनी-अपनी कुर्सियों पर सामने मेज पर फाइलें रखे लोग बैठे काम कर रहे हैं। मिस माला जैन टाइप-राइटर पर टाइप के काम में लगी हैं! दायीं ओर अफसर के कमरे का दरवाजा दिख रहा है। बायीं ओर एक दूसरा दरवाजा है, जिधर से कैन्टीन जाया जाता है। सामने दायीं ओर चपरासी प्रहलाद स्टूल पर बैठा कोई किताब पढ़ रहा है।

शर्मा : ओय, लो यह फाइल सबसे बड़े साहब के पास पहुंचाओ ! ओय प्रहलाद !

प्रहलाद : (अपने में मस्त) वाह-वाह, क्या हिरोइन है ! कैसा चकमा दिया। कमाल है। वाह, पढ़ी-लिखी औरत भी क्या चीज़ होती हैं !

शर्मा : भई, नावेल फिर पढ़ना·· मुसीबत तो हमारी है।

त्यागी : अच्छा शर्मा जी, एक ही दिन क्रास लग जाने में यह हाल !

मेहरोत्रा : यहां तो तीन दिनों से बराबर क्रास लग रहा है, मगर अपनी मस्ती में कोई फर्क नहीं। (**उठकर रैक पर से कोई फाइल ढूंढ़ने लगता है। और गा पड़ता है।**)

रहमान : यार, बंद करो रेंकना। यहां गुस्सा चढ़ा है, इन्हें जवानी चढ़ रही है।···फिल्म में क्यों नहीं चले जाते ?

त्यागी : मिसेज़ मालती अपने को समझती क्या हैं ?

प्रहलाद : (**सहसा**) अयं ? क्या ?···मुझे लगा, किसी ने पुकारा है।

शर्मा : जी हां, मगर आपके नावेल की हिरोइन ने नहीं। इस गरीब शर्मा ने···जिसने आज तक किसी औरत की परवाह नहीं की, आज जिसे ज़िन्दगी में पहली बार मिसेज़ मालती की डांट सहनी पड़ी। लानत है यार!

मेहरोत्रा : यार, अपनी एडमिनिस्ट्रेटिव अफ़सर है। और खूबसूरत औरत है। इसमें बुरा क्या मानना ! (हंसता है।) यार, हंसो ना।

त्यागी : बेटे, एक दिन क्रास लग जाए तुम पे, तो पता चले।

इस बीच चपरासी फाइल लेकर अफसर के पास से लौटता है।

प्रहलाद : शर्मा जी, साहब ने बुलाया है।

शर्मा : साहव के भी भाषण सुनने पड़ेंगे अब ? (जाता है।)

त्यागी : मिसेज़ मालती ए० ओ० हैं, मगर उन्हें अपनी हैसियत नहीं भूलनी चाहिए। हम क्लर्क हैं इसके मानी यह नहीं कि···.

रहमान : आफिस का टाइम साढ़े नौ वजे है, मगर कौन आता है साढ़े नौ वजे ? वस में सफर करना पड़े तो मालूम हो जाए। पास में घर है मिसेज़ मालती का, सो ठुमकती हुई चली आती हैं साढ़े नौ वजे।

प्रहलाद : वावू लोग, कुछ चाय-शाय ले आऊं ?

त्यागी : चाय ले जाकर मिसेज़ मालती के सिर पै पटक दो !

प्रहलाद : आज हुआ क्या ? आप लोग इतने नाराज़ हैं।

शर्मा : (**लौटता है।**) देखा ना, वही हुआ, साहव भी ए०ओ० साहिवा का पक्ष ले रहे हैं···यार, लानत है।

रहमान : इसकी एक ही दवा है—स्ट्राइक।

प्रहलाद और मिस जैन के अलावा सभी लोग एक स्वर में—'ए० ओ० मुर्दावाद', 'मिसेज़ मालती हाय, हाय' 'वर्कर्स यूनिटी जिन्दावाद'। भीतर से दौड़ा हुआ अफसर आता है।

अफसर : आर्डर···आर्डर·· खवरदार, अपनी-अपनी सीटों पै वैठिए ! खामोश ! जो कहना हो, लिखकर दीजिए। आप लोग इत्ती देर से दफ्तर आते हैं। दफ्तर में आकर चाय पीते है···गप्पें लड़ाते हैं···ऊपर से स्ट्राइक की धमकी देते हैं ! आई वार्न यू···सावधान···!

त्यागी : सर, हमें सरासर परेशान किया जाता है।

शर्मा : हम वक्त से ज़्यादा काम करते हैं—ऊपर से हमारी वेइज़्ज़ती की जाती है।

अफसर : क्यों मिस माला जैन, बात क्या है ?

माला : सर, मुझे पता नहीं।

रहमान : (चिढ़ाता है) सर, मुझे पता नहीं !

सब हंसते हैं।

अफसर : खामोश ! आप सब लोग नौकरी से हाथ धो बैठेंगें। आप सब की नौकरियां टेम्पररी हैं। बिना किसी नोटिस के यहां से बर्खास्त किए जा सकते हैं। आई वार्न यू !

तेज़ी से अपने कमरे में जाता है।

त्यागी : बड़ा आया नौकरी से हाथ धुलाने वाला ! हंप !

शर्मा : जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा !

रहमान : आखिर हम भी इन्सान हैं। हमारी भी अपनी इज़्ज़त है।

मेहरोत्रा : मिस माला जैन, आपका क्या ख्याल है ?

माला : प्लीज़, मुझे अपना काम करने दीजिए।

रहमान : हां क्यों नहीं ! इन पर क्रास थोड़े ही लगता है ! इनकी महज़ एक मुस्कान काफी है।

सब हंसते हैं।

माला : शुक्रिया।

टाइप करने लगती है। तभी सामने से ए०ओ० मिसेज़ मालती का प्रवेश।

मालती : मुझसे बोलिए, किसे क्या कहना है ?...अब बोलते क्यों नहीं ? पीठ पीछे किसी के बड़बड़ करना मुझे कत्तई पसन्द नहीं। जिसे जो कहना है, सामने बोले। दफ्तर में आने का एक निश्चित समय है। एक दिन हो, दो दिन हो, मगर जब लोग हर रोज़ दफ्तर देर से आएं, इसे माफ करने का मतलब है...।

शर्मा : आपने कब माफ किया ? मैं आज...सिर्फ आज, महज़ बीस मिनट देरी से आया, आपने रजिस्टर अपने कमरे

में मंगा लिया। दफ्तर खुलने से पहले ही जैसे मेरे नाम के आगे क्रास लगा दिया गया।

मालती : यह सरासर गलत है। आप पिछले बारह दिनों से लगातार दफ्तर काफी देर से आते हैं। आज मैंने मजबूर होकर···।

त्यागी : सबकी अपनी-अपनी मजबूरियां होती हैं। जान-बूझ कर कोई दफ्तर लेट नहीं आना चाहता। हमारी भी अपनी इज़्ज़त है।

मालती : दफ्तर और काम किसी की मजबूरियां नहीं देख सकता।

मेहरोत्रा : मैडम, देर-सवेर किससे नहीं होती ? माफ कीजिए।

'चुप बे' कहते हुए शर्मा, त्यागी और रहमान, मेहरोत्रा पर बरस पड़ते हैं। वह ही-ही-ही करने लगता है।

रहमान : हम लोग जो वक्त से ज़्यादा काम करते हैं, उसे आप क्यों नहीं देखतीं ? क्यों नहीं हमें ओवर टाइम दिया जाता ?

मालती : यह सवाल जाकर बड़े साहब से कीजिए।

त्यागी : हमारे नामों के सामने क्रास आप लगाएं और सवाल जाकर हम बड़े साहब से करें ? पैर में लगे चोट, बांधे पट्टी हाथ में !

सब हंस पड़ते हैं।

मालती : खामोश ! कायदे से बात कीजिए !

रहमान : आप भी कायदे से बात कीजिए।

मालती : ओह, तुम लोगों की यह हिम्मत !

माला : दीदी, इन लोगों के मुंह लगना बेकार है।

शर्मा : दफ्तर में यह दीदी-चाचीवाद नहीं चलेगा !

सब हंसते हैं।

मालती : (जाने को उद्यत) ऑल राइट, आई विल सी !

मेहरोत्रा : प्लीज़ मैडम, सुनिए, सुनिए ! शर्मा की बीवी पिछले बारह दिनों से जनाना अस्पताल में भर्ती है…।

त्यागी : क्यों बेटा यह बात…मैडम को लड्डू नहीं खिलाया ?

त्यागी और रहमान हंसते हैं।

मेहरोत्रा : अबे,…चुप्प ! बेशर्म ! बेचारी टी० बी० की मरीज़ है।

त्यागी : यार, हमें क्या मालूम।

रहमान : आई एम वेरी सॉरी शर्मा।

सन्नाटा।

मालती : छुट्टी क्यों नहीं ले लेते ? उसे कहीं सैनेटोरियम में भर्ती कीजिए। बीवी के साथ इस तरह का मज़ाक करते हैं ?

शर्मा : न छुट्टी है, ना इतने पैसे हैं।

मालती : अफसोस, मैं कुछ नहीं कर सकती !

रहमान : आज हर मर्ज़ की दवा सिर्फ अफसोस ज़ाहिर करना है !

मालती : मिस्टर रहमान, चुपचाप अपना काम कीजिए और वक्त से दफ्तर आइए। इसके अलावा और मैं कुछ नहीं जानती।

रहमान : क्यों, आपको जानना चाहिए, हमारे शहर की बसें किस तरह चलती हैं। और, मुझे घर से यहां पहुंचने में तीन बसें बदलनी पड़ती हैं। बसों में चढ़ने के लिए क्यू में खड़ा होना होता है।

मालती : दफ्तर के करीब घर लीजिए। मैं कुछ नहीं जानती।

रहमान : जितनी मेरी पूरी तनखाह है, उसमें एक कमरा भी दफ्तर के करीब नहीं मिल सकता। आपको मालूम होना चाहिए…

मालती : घर से जल्दी चला कीजिए। और गुस्सा कम कीजिए।

रहमान : यहां साढ़े नौ बजे पहुंचते के लिए ठीक आठ बजे घर से चलता हूं। इसके पहले एक टियूशन करता हूं, तब मेरे घर वालों को दोनों वक्त रोटी नसीब होती है। पता नहीं, आप किस दुनिया में रहती हैं।

मालती : मैं कुछ नहीं जानती। चुपचाप काम कीजिए।

त्यागी : आपतो सिर्फ हमें गैरहाज़िरकरना जानती हैं,और ऊपर से रौब जमाना जानती हैं! कुछ भी हो, हम इंसान हैं।

मेहरोत्रा : शट अप त्यागी !

त्यागी : तू चुप रह···चापलूस···मक्खनबाज़ !

मेहरोत्रा : यार लाल-पीला क्यों होता है ? (सहसा) मैडम, बात यह है कि मिस्टर त्यागी की अभी-अभी शादी हुई है, फिर तो आप जानती हैं···ऐसे में कौन थोड़ा लेट नहीं होता ! सोचिए, जिन दिनों आपकी शादी हुई थी··· माफ कीजिएगा। यह तो होता ही रहता है, इंसान को इंसान पर थोड़ी मेहरबानी···मेरा मतलब···यू नो।

त्यागी : अबे चुप रह घिस्से।

मेहरोत्रा : मैडम, इन्हें बकने दो। यही इनकी तफरीह है। सच, ये सब बड़े मज़बूर लोग हैं।

मालती : मैं भी बहुत मज़बूर हूं मिस्टर मेहरोत्रा, मैं भी अभी कन्फर्म नहीं हुई हूं। मैं सब की मज़बूरियां-दिक्कतें जानती हूं—लेकिन आखिर मुझे भी तो नौकरी करनी है ! मेरे पति को अब तक कोई नौकरी नहीं मिल सकी है। आप लोगों को क्या पता ! आप लोग सिर्फ अपनी जानते हैं।

त्यागी : मैडम, चाय पीजिए।

मेहरोत्रा : प्रहलाद, दौड़कर सबके लिए चाय ला !

प्रहलाद जाता है।

मालती : नहीं-नहीं···यह चाय पीने का वक्त नहीं। अभी तक आप लोगों ने आज का काम शुरू तक नहीं किया। जब चाहते हैं आप लोग चाय पीने लगते हैं···और ज़रा ज़रा-सी बात पर मुट्ठियां तान लेते हैं। कभी भी अपनी गलती नहीं मानते। पता नहीं, आप लोग अपने घरों में कैसे रहते हैं। क्या समझते हैं अपने आपको।

माला : घरों में इनकी हवा खिसकी रहती है! वहां लेट नहीं होते!

मेहरोत्रा : बिल्कुल सही बात की माला जी ने।···मैडम, बैठिए···।

मालती : भाई, यह बैठने का वक्त नहीं। चलकर मेरी टेबुल पर देखो···फाइलें लगी हैं। आज ही मिनिस्ट्री को सालाना रिपोर्ट भेजनी है। बड़े साहब विदेश जा रहे हैं, उनकी तीन तकरीरें तैयार करनी हैं। इसके अलावा···।

रहमान : तकरीरें मैं तैयार कर सकता हूं।

शर्मा : चुप्प बे!

त्यागी : मैडम, आज मैं वह इस्टैब्लिशमेंट वाली फाइल बिल्कुल पूरी कर दूंगा।

रहमान : मैडम, यह बात ज़्यादा करता है।

मालती : आप सब लोग ज़्यादा बात करते हैं।

त्यागी : और दिन भर इनके मेहमान आते हैं।

मालती : मुझे मालूम है···सब मालूम···कैन्टीन में जाकर जम जाना। फिल्म से लेकर राष्ट्रपति चुनाव तक बातें करना। दफ्तर में काम करने वाली औरतों-लड़कियों के बारे में स्कैंडल फैलाना। आप लोगों का और काम ही क्या है···!

प्रहलाद गिलासों में चाय लिये आता है।

प्रहलाद : सरकार, इतनी भीड़ है कैन्टीन में कि पूछो नहीं··· धक्कम-धक्का, धक्कम-धक्का ! मानो सारा दफ्तर वहीं टूटा पड़ रहा है।

मालती : यही तो मैं कह रही थी।

शर्मा : लीजिए, मैडम चाय पीजिए !

मालती : शुक्रिया, मुझे काम है···आप लोग पीजिए। मैं फिर किसी दिन पी लूंगी।

रहमान : यही तो बात है···आप हमसे नाराज़ हैं !

मालती : कैसी बातें करते हैं आप लोग !

त्यागी : आइए बैठिए···चाय पीकर जाइए।

मालती : भाई, बड़े साहब देख लेंगे तो बुरा मानेंगे···आप लोग कुछ जानते-बूझते तो हैं नहीं !

प्रहलाद : अजी छोड़िए बड़े साहब को, दिन में तेरह बार चाय मंगवाता है···और कहां से···वह जो वी० आई० पी० रेस्ट्रां है···पन्द्रह पैसे वाली···।

सब हसते है। अपने कमरे से तेजी में अफसर का निकलना।

अफसर : मिसेज़ मालती शंकर, यह क्या तमाशा है ? यह दफ्तर है कि···।

मालती : सॉरी सर···।

चली जाती है।

अफसर : नो टॉक···माइंड योर विज़नेस !

गुस्से में जाता है।

मेहरोत्रा : **(चाय का गिलास उठाए)** फार द हेल्थ आफ़ मिसेज़ मालती शंकर···एंड फार द डाउन फाल आफ दिस ब्लडी आफिसर ! ···थ्री चियर्स···!

सब चाय पीते हैं। प्रकाश बुझता है।

थोड़ी ही देर बाद प्रकाश फिर लौटता है। मंच बिल्कुल खाली है। प्रहलाद सबकी मेजें ठीक कर रहा है।

प्रहलाद : अब सब लोगों की नानी मर गई है। तीन महीने पहले जब यहां वह मैडम मालती शंकर थीं न, तो सब लोग देर में दफ्तर आते और एक भी क्लास लग जाती तो सिर पै पहाड़ उठाने लगते ! अब सबकी बीवियां ठीक हो गईं। अब शहर की बसें बेहतर सर्विस देने लगीं। अब आंखें जल्दी खुल जाती हैं बाबू लोगों की। अब सेकेन्ड शो सनीमा की बातें यहां नहीं होतीं ! **(सहसा)** कौन है बे ! ···ओह साहब, आप ! माफ कीजिएगा··· अभी···इसी वक्त'!

त्यागी आता है।

प्रहलाद : रुकिए···पूरा झाड़-पोंछ तो लूं !

त्यागी : यार, फिर झाड़-पोंछ लेना ! **(अपनी सीट पर जा बैठता है।)**

प्रहलाद : आज गुसल, हाथ-मुंह ?

त्यागी : भाई, काम करने दो···।

प्रहलाद : कल तो सुना रात के दस बज गए !

त्यागी : यह ऐनुअल रिपोर्ट आज पूरी तैयार होकर जानी है।

प्रहलाद : ओवर टाइम मिलेगा साहब ?

त्यागी : यार, यहां नौकरी के लाले पड़े हैं, तुम ओवर टाइम की बात करते हो ! तुम नहीं जानते··· **(विराम।)**

त्यागी : जिस तरह से इन लोगों ने मिसेज़ मालती शंकर को यहां से निकाला है, उसके बाद फिर क्या रह जाता है ! ज़ालिम हैं साले। कहीं मिसेज़ मालती की तरह मुझे निकाला तो एक-एक का खून पी जाऊंगा—समझते

क्या हैं अपने आपको ! (**काम करने लगता है।**) एक गिलास पानी पिलाना ! ···नहीं, पहले वह फाइल लाओ···अरे वह हरी वाली···यार देखते नहीं वह··· (**खुद दौड़कर उठा लेता है।**) खुद तो ये हरामजादे कुछ काम करते नहीं···इनका सिर्फ काम है नीचे के लोगों को हर वक्त भयभीत रखना···हम सब में यह डर बनाए रखना कि किसी भी वक्त निकाल दिए जाओगे !

प्रहलाद : लो पानी पियो···ठंडा पानी। (**त्यागी एक सांस में पीता है।**) साहब, मिसेज़ मालती जी बहुत ही शरीफ और नेक अफसर थीं। उन्हें खामखा···।

त्यागी : शरीफ और नेक अफसर ही नहीं, उससे कहीं ज़्यादा वह शरीफ और नेक औरत भी थीं, वरना जिस तरह से चुपचाप वह चली गईं···दफ्तर में किसी को पता तक नहीं लगने दिया।

प्रहलाद : कैसा अत्याचार···राम···राम !

त्यागी : देखो, वह बंधा हुआ पुलिंदा उठाओ ! (**लाता है**) उसे खोलो··· (**सहसा**) पता है, मिसेज़ मालती से कहा गया—चौबीस घंटे के भीतर रिज़ाइन करो···उस बेचारी औरत को मजबूर किया गया···ज़ालिम !

बाहर से शर्मा, मेहरोत्रा और रहमान का प्रवेश।

शर्मा : हेलो त्यागी ! कब आए ?

रहमान : पूछो, रात कब गए !

मेहरोत्रा : अभी तो पूरे दफ्तर में सिर्फ हमी लोग आए हैं···कहो तो यार सबके नामों के सामने क्रास मार आऊं !

शर्मा : अफसरों की हाज़िरी-गैरहाजिरी नहीं लगती।

मिस माला जैन का प्रवेश। सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठना शुरू करते हैं।

मेहरोत्रा : हाय ! कमवख्त, जव तक मिसेज़ मालती शंकर हमारी ए० ओ० थीं, हम दस बजे से पहले कभी दफ्तर नहीं आए।

शर्मा : और अब साढ़े नौ की जगह नौ बजे भागे आए हैं !

माला : हां, अब बसें तेज चलने लगी हैं !

रहमान : अब पत्नियों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है !

मेहरोत्रा : अब मौसम भी बेहतर है !

हंसी।

त्यागी : क्या ही-ही करते हो ! चुप रहो !

रहमान : उसे ठंडा पानी दिखाओ !

प्रहलाद : अभी तो कैन्टीन वालों को ही ठंडा पानी दिखाना होगा। (सहसा) साहब आ गए ! (सब सावधान हो जाते हैं।) आज साहब भी बड़े जल्दी आ गए।

त्यागी : मिनिस्ट्री को आज ऐनुअल रिपोर्ट जो जानी है। ऊपर मार पड़ती है, रोब हम पर जमाते हैं।

रहमान : अबे बेटे, चुप हो जा।

अफसर का प्रवेश। सभी लोग खड़े हो जाते है।

शर्मा : गुडमार्निंग सर !

रहमान : तबियत कैसी है ?

अफसर : हेलो माला, सब ठीक-ठाक ? किसी को कोई तकलीफ ? मैं जब ए० आई० आर० में था, तब की बात है, मिस्टर चार्ल्स ब्राउन थे हमारे डी० डी० जी०। वह एकाएक उस स्टूडियो में आए, जहां मैं एक परिसंवाद रिकार्ड

करा रहा था। वह तपाक से बोले—'हाऊ डू यू डू?' मेरे मुंह से निकला—'भाड़ में जाओ!' (हंसी) जी हां, तब मैं बड़ा मस्त था···किसी की कुछ परवाह नहीं करता···मगर ऐज़ यू नो···समय का ख्याल इंसान को रखना ही चाहिए।

मेहरोत्रा : सर, आपका बहुत नाम है।

त्यागी : कद्दू!

अफसर : क्या है मिस्टर त्यागी?

त्यागी : कुछ नहीं···कुछ नहीं···। आज काम पूरा हो जाएगा।

अफसर : ठीक है···ठीक है! आप लोग खुश क्यों नहीं रहते? मेरा मतलब···यू नो, काम से बढ़कर और क्या खुशी हो सकती है! भई, मैंने तो यही सबक सीखा है। (जाते हुए) मिस माला जरा सुनिए!

भीतर प्रवेश। माला भी अंदर जाती है मेहरोत्रा की हंसी फूट पड़ती है, उसी बीच अफसर लौट पड़ता है।

अफसर : मेहरोत्रा, यह लो कागज़, दुबारा ड्राफ्ट तैयार करो!

जाता है।

शर्मा : मिस माला को आज बोर करेगा। वाह, मजा आ जाएगा!

रहमान : आज वह ज़रूरत से ज़्यादा स्मार्ट भी लग रही है।

त्यागी : यार खुदा के लिए चुप भी रहोगे!

शर्मा : इस मनहूस को आज क्या हो गया है?

माला वापस आती है। घंटी बजती है। प्रहलाद अंदर जाता है।

मेहरोत्रा : भई, चाहे जो हो, औरतों को खुश रहना ही चाहिए।

माला : क्यों, औरतें मशीन हैं क्या?

मेहरोत्रा : बहन जी, आप तो खामखा नाराज़···।

माला : हमें शर्म-लेहाज़ है···।

रहमान : जी हां, हम लोग तो वेहया हैं···हाय रे ज़ालिम ज़माना।

माला : ज़ालिम आप लोग हैं। आप लोगों ने मिसेज़ मालती शंकर को यहां से निकाला। आप···एक-एक ने उन पर अत्याचार किए। उनकी शराफत का आप लोगों ने फायदा उठाया।

मेहरोत्रा : हमें क्या पता था···जो कुछ हुआ ऊपर से हुआ। हम निर्दोष हैं।

माला : कहां गया अब आप लोगों का गुस्सा? कहां गई वह स्ट्राइक की धमकी? 'जो हमसे टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा।' वे सब क्रांतिकारी नारे कहां गए?

रहमान : जहां के अफसर इत्ते वेइमान हों···धोखेवाज़ हों··· ज़ालिम···।

प्रहलाद फाइलें लिये निकालता है।

प्रहलाद : रहमान साहब, भीतर बुलाया है।

मेहरोत्रा : जाओ, भीतर नाश्ता तैयार है! वेटे!

रहमान : शट-अप!

भीतर जाता है।

माला : आप लोगों पर मिसेज मालती ने ज़रा-सा भी ऐक्शन लिया होता, तो आप में से एक-एक की नौकरी जाती, मगर नहीं लिया, और खुद नौकरी से हाथ धो वैठीं। उनके पति वेकार हैं, वह खुद वेकार घर वैठी हैं, उनकी इस तबाही की ज़िम्मेदारी···।

शर्मा : उन्हें इस तरह चुपचाप नहीं जाना था···अफसरों के दवाव में आकर उन्हें खुद त्यागपत्र नहीं देना था। हम

लोग देखते···।

माला : डरपोक···कायर, ये लोग साथ देते !

रहमान का प्रवेश।

रहमान : मिस माला, मैंने आपका कब मज़ाक किया ?

माला : इसके अलावा आप लोगों के काम ही क्या हैं ?

रहमान : देखिए, मैं माफी चाहता हूं। कभी ऐसी भूल हुई हो तो···।

मेहरोत्रा : बेटे, लिखकर माफी मांग।

शर्मा : अब तो इस दफ्तर में ज़बान हिलाना भी खतरनाक है।

प्रहलाद : चाय पियो साहब, चाय।

बीड़ी दागता है।

त्यागी : भई, एक बीड़ी मुझे भी।

प्रहलाद : साहब, बीड़ी अब महंगी हो गई है। (**बीड़ी देता है। दागता है।**) यह हिरोइन छांप है, जरा सम्हल कर पीजिएगा।

त्यागी : अब तो सब कुछ सम्हलकर करना होगा।

सहसा बाहर से मिसेज़ मालती अपने पति शंकर के साथ आती हैं। सब आश्चर्यचकित हो उठते हैं।

सब : अरे ! नमस्ते···नमस्ते ! मैडम···मैडम, आप कैसी हैं ?···सब आनन्द ?

मालती : आप सब लोग अच्छे से ना ?···मिलिए इनसे···मेरे पति शंकर।

सब : नमस्ते···बड़ी खुशी हुई···बैठिए···।

मेहरोत्रा : प्रहलाद, जाओ बढ़िया सी चाय लाओ···फ़र्स्ट क्लास।

मालती : नहीं नहीं शुक्रिया। आप लोग बैठिए ना···। अरे, आप लोग हमें घूर-घूर कर क्यों देख रहे हैं ?

शर्मा : देखिए मैडम, आप तो यहां से ऐसे चुपचाप चली गई···हम फेयरवेल भी नहीं दे पाए···आज तो हमारे साथ चाय पीजिए···बैठिए ना।

मालती : त्यागी साहब बहुत गम्भीर हैं।

माला : अब नौ बजे दफ्तर आते हैं और शाम को सात बजे से पहले नहीं जाते···।

त्यागी : मालती जी, देखिए नौकरी तो करनी है।

मेहरोत्रा : और किसी तरह खुश भी रहना है।

मालती : और होशियार भी···।

हंसती है। सब लोग खुश हैं।

मालती : अच्छा, ज़रा बड़े साहब से मिलना है···।

पति के संग भीतर चली जाती है।
सारे लोग पास दौड़ आते हैं।

शर्मा : यहां पति की नौकरी के लिए सिफारिश करने आई हैं मैडम !

त्यागी : हां, ए०ओ० की जगह खाली है।

रहमान : मैंने तो कुछ और ही सुना है···पति को इनके चरित्र के सम्बन्ध में कुछ शुबहा है। वही पता लगाने आया है।

शर्मा : क्या बकता है ! ऐसा हर्गिज नहीं हो सकता।

रहमान : बिल्कुल यही सच है। देखा नहीं, पति का चेहरा··· बंद गोभी जैसा। उसे कई शिकायतें हैं अपनी मिसेज़ से।

माला : आप लोग इसके अलावा और कुछ नहीं सोच सकते ?

शर्मा : मिस्टर शंकर मुझसे पूछें मैडम के बारे में, मैं जवाब दूंगा उन्हें।

त्यागी : लेकिन यार कुछ तो ऐसी बात होगी, पति वरना ऐसा क्यों शक करता ? सोचने की बात है···क्यों, मैं गलत

तो नहीं···?

मेहरोत्रा : मैडम के चरित्र पर शक करना सरासर पाप है।

प्रहलाद : साहब, चाय के आर्डर का क्या हुआ ?

शर्मा : रुको यार। सुनो···पति यहां ए०ओ० होकर आ जाए, तो बस मज़े ही मज़े। मिसेज़ मालती कम प्रभावशाली नहीं, हां।

रहमान : पति ज़ालिम होगा···मेरा यकीन है।

माला : आप लोग मुझे काम करने देंगे या नहीं ?

मेहरोत्रा : शौक से कीजिए बहिन जी, आप नाराज़ होकर बोलती हैं तो मुझे ब्लड प्रैशर हो आता है।

हंसी। भीतर से अकेले शंकर का प्रवेश।

शर्मा : नमस्ते जी। कहिए आप को कुछ पूछना है हमसे ?

शंकर : क्या ?

त्यागी : कोई बात···कोई शक···। मिसेज़ मालती एक निहायत शरीफ औरत हैं···। मुझे यह कहते हुए दुख है कि वह यहां से चली गई। वह आला दर्जे की आफिसर थीं···।

रहमान : उनके चरित्र के खिलाफ जो उंगली उठाए, वह पागल है···उल्लू है···बेवकूफ है। कहिए, क्या पूछना है ?

शंकर : यह सब क्या कह रहे हैं आप लोग ?

शर्मा : यह हमारे समाज की बदकिस्मती है कि अगर औरत कहीं बाहर नौकरी करे, तो पुरुष समाज खामखा उसके बारे में तीन के तेरह करने लगता है।

रहमान : पति अपनी ज़लालत से बाज़ नहीं आता।

शंकर : अजी यह सब कहने की बातें हैं···औरतों के मामले में हम लोग बड़े संकीर्ण हो जाते हैं।

माला : जी हां, यकीन कीजिए, मिसेज़ मालती की यहां पर हर

कोई इज़्ज़त करता था···उनके बारे में कभी कोई···।

शंकर : ह्वाट नानसेन्स !

त्यागी : देखिए जी आप बहुत लाल-पीले मत होइए यहां·· हम मिसेज़ मालती के खिलाफ कुछ नहीं सुन सकते। हां, नहीं तो।

शंकर : मगर उनके ख़िलाफ कौन क्या कह रहा है ?

शर्मा : अजी हमें सब पता है। आप घर पै उन्हें ··।

शंकर : ओह माई गॉड! ···यह क्या है ?···मालती···!

रहमान : देखिए, उन्हें बुलाने की यहां कोई ज़रूरत नहीं। आपको उनके बारे में जो पूछना है, शौक से पूछिए।

मेहरोत्रा : हमारे सामने आप मैडम को कुछ नहीं कह सकते।

शंकर : बंद कीजिए बकवास !

मालती का आना।

शंकर : यह लोग क्या बक रहे हैं ! यह क्या तमाशा है, तुम्हारे बारे में किसे क्या शक है ? यह बात क्या है ?

मालती : ओ हो हो (हंसती हैं) भई, आप लोग बैठिए···अपनी-अपनी सीटों पर···हां, चेहरे पर से गुस्सा उतारिए··· बात यह है, कित्ते दिन हुए इन्हें ना किसी पर गुस्सा उतारने को मिला···ना इन्हें कोई ऐसा स्कैंडल मिला कि उससे तफरीह करते,···ये किस पर रोबदाब दिखाएं···किसे धमकी दें···ऐसा इन्हें पिछले दिनों कुछ भी नहीं मिला···सो मैंने···(हंसती है।)

शंकर : ओ हा···यह बात। दैट्स राइट।

मेहरोत्रा : ओह मैडम ! आप किस कदर लाजबाव हैं।

रहमान : हमें क्या पता, आप इस तरह के मज़ाक करती हैं।

मालती : और कैसे जिन्दा रहा जाए ?

शर्मा : वी आर वेरी सॉरी मिस्टर शंकर।

शंकर : धन्यवाद। मुझे बड़ी खुशी हुई आप लोगों से मिलकर।

फिर सब घिर आते हैं।

त्यागी : मैडम, जिस काम के लिए आप आई थीं, क्या हुआ ?

मालती : कमाल है, आप लोग सब कुछ मालूम कर लेते हैं।

माला : और इनके काम ही क्या हैं ?

मेहरोत्रा : मैडम, इन्हें समझाइए। जब से आप गई, यह हर वक्त हमें डांटती रहती हैं।

शर्मा : मुझे तो अच्छा लगता है···।

त्यागी : चुप बे !

शंकर : आप लोग कभी घर आइए ना।

रहमान : पहले आप बताइए सर, आप कब आ रहे हैं यहां ? हमारे नए ए० ओ०···।

मालती : उसी के लिए तो यहां आई थी।

सभी : क्या हुआ ?

सन्नाटा।

मालती : (एकाएक) अरे आप लोग चुप क्यों हो गए ? उम्मीद पर यह दुनिया कायम है।

शंकर : आप लोग तशरीफ रखिए।

शर्मा : उसने क्या कहा ?

त्यागी : बातचीत क्या हुई ?

मेहरोत्रा : बताइए ना मैडम ?

रहमान : आपको इस तरह जाना पड़ा, हमें सख्त अफसोस है। आपकी जगह मिस्टर शंकर आ जाएं···यह हमारी खुशकिस्मती होगी। बताइए···बोलिए ना।

त्यागी : कितने दिनों बाद आज हम खुलकर बोल पा रहे हैं !

मेहरोत्रा : पता नहीं, हम लोगों में इतना डर क्यों समाता जा रहा है।···बैठिए ना ··प्लीज़ ! बताइए ना !

प्रहलाद : साहब, मेरी ओर देखिए···मैं यहां अब बैठे-बैठे मक्खी मारता हूं। अब जासूसी उपन्यास खतम !

शर्मा : बताइए ना, हुआ क्या ? साहब यहां आ रहे हैं ना ?

सन्नाटा।

त्यागी : यार, कोई ऊपर से उल्लू का पट्ठा आ रहा होगा।

रहमान : बिना कुछ दिए-लिए कुछ नहीं होता।

मालती : आर्डर···आर्डर···देखिए प्लीज़, चुपचाप अपने काम कीजिए। प्लीज़···।

शंकर : आप लोग घर आइए ना !

माला : (**दौड़कर पास आती है**) बहन जी, बताइए ना, क्या हुआ ?

मालती : क्या हुआ ? (**चुप**) अच्छा, फिर बताऊंगी !··· बाई···।

पति के साथ तेज़ी से प्रस्थान। सारे लोग उठकर बाहर देखने लगते हैं। भीतर से अफसर का प्रवेश।

अफसर : क्या देख रहे हैं ? चलिए अपनी-अपनी सीट पर। काम कीजिए···काम ! (**सब बैठते हैं**) चपरासी !

प्रहलाद : जी हुज़ूर !

अफसर : कूलर क्यों लगाया गया है दफ्तर में ? सब को ठंडा पानी पिलाया करो।

प्रहलाद : सब चाय पीते हैं साहब !

अफसर : नहीं···ठंडा पानी पिलाया करो···बिना मांगे सब की मेज़ पर ठंडे पानी का गिलास रहना ज़रूरी है। (**जाते-जाते**) क्यों मिस्टर त्यागी, सब ठीक-ठाक ?

त्यागी : यस सर।

अफसर : शर्मा !

शर्मा : यस सर···।

अफसर : रहमान !

रहमान : जी हुजूर !

अफसर : माला !

माला : मुझे अफसोस है, यहां की ज़िन्दगी बड़ी एबनार्मल होती जा रही है।

अफसर : क्या मतलब ?

सब हंस पड़ते हैं।

अफसर : आर्डर !

सब चुप।

पर्दा।

धीरे बहो गंगा

पात्र

- प्रसाद साहब (डिप्टी)
- श्रीमती प्रसाद—३० साल
- लता—१८ साल
- राजेश—२० साल
- नौकर (दास) ३५ साल
- मिस्टर और मिसेज़ छावड़ा

दास ड्राइंगरूम ठीक करता हुआ गाता है :

धीरे वहो गंगा, धीरे वहो गंगा !
मोरे सैंया जी उतरेंगे पार !
मोरे सैंया जी उतरेंगे पार !

भीतर से टाई वांधते हुए राजेश का प्रवेश—खंखारता है। दास शरमाकर चुप हो जाता है।

राजेश : वड़ा वढ़िया गाता है दास। एक वार और।

दास : मुझे क्या पता आप अन्दर घुसे वैठे हैं। हम तो सोचे, आप भी माता जी के संग हनुमान मन्दिर गए।

राजेश : मैं तो पिक्चर जा रहा हूं—लता तो गई है न, माता जी के संग ?

दास : जी साहव।···तीन महीने से ऊपर होइ गए—हमने सनीमा का मुंह तक न देखा—साहव से वोला, हमारी तनखाह वढ़ाओ तो डांट दिया—'कायदे से रहना है तो चुपचाप रहो।'

राजेश : मैं भी तो वी० ए० फाइनल में पहुंच गया, मगर मेरा पाकेट खर्च वही है दो साल पुराना—तीस रुपये महीने। पापा जी कहते हैं फस्ट डिज़र्व देन डिज़ायर। मतलव पहले उसके काविल वनो फिर उसकी ख्वाहिश करो—सरासर ज़ुल्म है !

दास : कुछ करना चाहिए···साहव किसी की वात ही नहीं सुनते···देखो साढ़े सात वजिस गए अव तक दफ्तर से नहीं आए !

राजेश : और मुझे ज़रा-सी देर हो जाए, तो डांट पिला देंगे।

दास : अजी, मुझे तो वारन करने लगते हैं।

राजेश जाता है।

दास : साहब, रात का खाना यहीं खाएंगे न ?

राजेश : बिल्कुल।

राजेश का जाना। दास ड्राइंगरूम ठीक करता हुआ फिर वही गाने लगता है। दास बढ़कर रेडियो ऑन कर देता है। बाहर से श्रीमती प्रसाद और लता का प्रवेश।

श्रीमती : साहब अब तक नहीं आए ? ···लता, दफ्तर में फोन तो कर पापा को।

लता फोन करती है। रख देती है।

लता : घंटी बज रही है—पापा जी चल पड़े हैं।

श्रीमती : उनका कोई फोन आया था ?

लता : आ रहे होंगे।

दास : फोन तो नहीं आया।

दास जाता है। श्रीमती बढ़कर रेडियो बन्द करती है।

श्रीमती : यह अपने मन के होते आ रहे हैं। मेरी बात की कोई इज़्ज़त नहीं उन्हें !

लता : मुझे भी पापा जी बात-बात में डांटते हैं। कहा कि मेरे लिए बेलबाटम खरीद दो, डांटने लगे—सिम्पुल लिविंग एंड हाई थिंकिंग।

श्रीमती : आने दो आज, आज मैं उनकी बोलती न बन्द कर दूं तो मिसेज़ प्रसाद नहीं। क्या समझ रखा है इन्होंने ! (पुकारती है।) दास !

दास आता है।

श्रीमती : सरदर्द हो रहा है, टिकिया दे मुझे।

दास जाता

लता : भइया कहां गया ?—दास, राजेश कहां गया ?

दास : (आकर टिकिया और पानी देता है।) राजेश भइया सनीमा गए। आपको भी दवा दूं ?

लता : भाग—मुझे क्यों ?

प्रसाद साहब का प्रवेश।

श्रीमती : कहां थे ? छह बजे यहां आने को थे—हनुमान मन्दिर जाना था आपको हमारे संग ! और अब इस समय आ रहे हैं—देखिए न, आठ बज रहे हैं। यह कोई तमाशा है क्या ?

डिप्टी : सुनो तो—सुनो—दफ्तर में पिछले दो दिनों से वर्क टू रूल, स्ट्राइक चल रही है। दफ्तर का सारा काम ठप्प-सा हो गया है। एक फाइल निकालने में पन्द्रह मिनट लगाते हैं बाबू लोग।

श्रीमती : हमें अकेले हनुमान मन्दिर जाना पड़ा। आपको हमारा कोई ख्याल नहीं।

लता : यह वर्क टू रूल, क्या होता है पापाजी ?

डिप्टी : स्लो वर्क,—मतलब सब काम धीरे-धीरे। चलकर फाइल भी उठाता है तो इस तरह (चलकर दिखाते हैं।) लिखता है तो इस तरह, इतने धीरे-धीरे।

अभिनय करते हैं। लता हंसती है।

श्रीमती : लता, तू भी इनकी बातों में आ गई···यह ऐसे ही बातें बनाते हैं—यह इनकी आदत है।···मैं अब ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकती।

डिप्टी : अरे-रे-रे इनका गुस्सा ! (पुकारते हैं) दास, एक बीड़ा पान ला।

लता : पापा जी, फिर तो हम भी घर पर वर्क टू रूल स्ट्राइक

करेंगे।

डिप्टी : वाह वाह—वहुत खूब !

श्रीमती : करना ही पड़ेगा कुछ। आप लोग डरते हैं तो केवल उसी स्ट्राइक से। **(दास पान ले आता है। डिप्टी पान खाकर मुंह बन्द कर लेते हैं।)**

श्रीमती : वस, अब मुंह में पीक दवाकर चुप्प।

लता : पापा जी कल वाज़ार चलेंगे न? मुझे वेलवाटम चाहिए, मेरी सारी फ्रेंडस् वेलवाटम पहनती हैं। वोलिए न?

प्रसाद मुंह में पीक दवाए चुप सोफा पर बैठे हैं।

श्रीमती : वस, यही इनका तरीका है। मुंह में पीक दवाकर वैठ जाएंगे—दूसरा इनके सामने भोंकता रहे !

लता : आप वोलते क्यों नहीं ?...मुंह खोलिए न ?

श्रीमती : मुंह में अब पान जो ठूंस लिया है !

प्रसाद बढ़कर अखबार खोलकर पढ़ने लगते हैं।

लता : अब मुंह के सामने अखबार फैला लिया—ताकि कोई इनका मुंह भी न देख सके।

श्रीमती : यह इनकी चाल है।

लता : पापा जी !

श्रीमती : यह ऐसे नहीं सुनेंगे... **(अखबार पर हाथ मार कर फाड़ देती है।)** अब यह चाल आपकी नहीं चलेगी।

लता : नहीं चलेगी ! नहीं चलेगी !

दास : **(दौड़कर आता है)** नहीं चलेगी ! नहीं चलेगी !

डिप्टी : यह क्या वत्तमीज़ी है ? **(उठते हैं)** किसी को भी कोई अदव-लिहाज नहीं !—दास, भागता है कि नहीं ? चल भाग यहां से—वत्तमीज़ !

दास बड़बड़ाता हुआ जाता है।

श्रीमती : जैसे आपको बड़ा अदब-लिहाज़ है हमारा ! नौ बजे ही घर से निकल जाते हैं—आठ बजे रात को घर लौटते हैं।

डिप्टी : वो नौकरी छोड़ दूं ?

लता : ऊपर से हम सब पर गुस्सा करते हैं।

श्रीमती : न घर-गृहस्थी की चिन्ता, न अपनी तन्दुरुस्ती की—न मेरी। सरदर्द से मेरा माथा फटा जा रहा है।

डिप्टी : सरदर्द की दवा ले लो न, हमें क्या डांटती हो ! वह विविध भारती का विज्ञापन क्या था ?

लता नकल करती है।

श्रीमती : ठीक है, सरदर्द की दवा करनी ही पड़ेगी।

डिप्टी : मुझे धमकी देती हो ? मैं थका-मांदा दफ्तर से आया हूं—यह नहीं कि एक कप चाय पूछे। आते ही महाभारत, यही सभ्यता है तुम लोगों की ! नौकर-चाकर, बाल-बच्चे, सबका दिमाग खराब !

तेज़ी से चले जाते हैं।

श्रीमती : लोग अपनी बीवियों के साथ शाम को घूमने निकलते हैं। ये हैं कि दफ्तर और दफ्तर, वाह ! किसी की सुनते ही नहीं।

लता : मेरी भी नहीं सुनते। लोग कहते हैं मैं डिप्टी साहब की इकलौती लड़की हूं···इतने बड़े आदमी की लड़की। पर पापा तो···

दास आता है।

दास : साहब, साहेब का पान का डिब्बा किधर है ?

श्रीमती : मुझे क्या मालूम !

लता : कितना पान खाने लगे हैं ! ···दांत देखो पापा के !

हाय राम छी !

दास : साहब बोल रहे हैं बाज़ार से पान लाने के लिए।

श्रीमती : जा उन्हीं से पूछ। मेरा दिमाग मत खा। देखते नहीं ! सरदर्द से तबाह हो रही हूं।

दास : साहब, आप भी मुझे डांटती हैं !

लता : अरे तुझे नहीं—पापा के ऊपर हम लोग सोच रहे हैं।

दास : मैंने तो सोच लिया है, साहब।

श्रीमती : क्या ?

दास : अभी बताऊंगा—बस सोच रहा हूं। (भागता है।)

लता : एक तरीका है मम्मी।

श्रीमती : क्या ?···बता। मैं तो तंग आ गई इनसे।

लता : सुनो।

सब आपस में चुपचाप एक स्कीम बनाते हैं। भीतर से प्रसाद का प्रवेश।

डिप्टी : देखो···सुनो···सुनती हो ?

श्रीमती : क्या है ?

डिप्टी : मिस्टर और मिसेज़ छावड़ा आज यहां आने वाले थे··· मैं तो भूल ही गया।

श्रीमती : आएं, आते ही रहते हैं लोग। मेरा और काम क्या है !

डिप्टी : (पुकारते हैं), राजेश ! ···राजेश !

राजेश : (बाहर से दौड़ा हुआ) जी डैडी।

डिप्टी : कहां थे ? पिक्चर की टिकट नहीं मिली···तभी वापस। खूब देखो पिक्चर !

राजेश : कहां, हफ्ते में दो ही बार तो देखता हूं।

डिप्टी : तो रोज़ देखा करो। नाम कटा लो कालेज से। कपड़े देखो, हालात देखो अपने !

श्रीमती : हर वक्त बच्चों को डांटते हैं—यह भी कोई तरीका

है ! नामर्द बच्चों में काम्पलेक्स पैदा करते हैं।

डिप्टी : अब घर में ही रहना—खबरदार…मिस्टर और मिसेज छाबड़ा आ रहे हैं। उन्हीं के बिजनेस फर्म में तुम्हें आगे चलकर बिजनेस इग्जिक्यूटिव होना है। सरकारी नौकरी में अब कुछ नहीं रखा है।

श्रीमती : बेटे को बनिया बनाएंगे !

डिप्टी : तुम चुप रहो—जब कुछ [मालूम] न हो तो बीच में नामर्द…

श्रीमती : (बिगड़ती हैं) मैं नामर्द हूं—मुझे कुछ नहीं मालूम?

डिप्टी : देखो, मेरा मूड मत खराब करो। दफ्तर में वर्क टू रूल स्ट्राइक चल रही है, और ये लोग हैं कि…!

जाने लगते हैं।

राजेश : पापा जी…पापा जी !

डिप्टी : क्या है ? —बोलते क्यों नहीं ? जल्दी बोलो, जल्दी।

राजेश : मेरे स्कूटर का क्या हुआ ?

डिप्टी : वाह ! अभी बी० ए० तक भी पास नहीं हुए…चले हैं स्कूटर पर चढ़ने ! फर्स्ट डिजर्व, देन डिजायर ! यू नो, साइकिल पर चढ़कर एम० ए० फर्स्ट क्लास पास किया है ! माइन्ड योर सेल्फ—आई वार्न यू। मैं कतई नहीं बर्दाश्त कर सकता कि तुम और लोगों की तरह बीटिल-हिप्पी बनो। (तेजी से चले जाते हैं।)

श्रीमती : यह ऐसे नहीं मानेंगे।

राजेश : यह हर वक्त डांटने लगे हैं।

लता आती है।

लता : किसी की नहीं सुनते।

श्रीमती : इन्हें हम लोगों की कोई परवाह नहीं।

दास आता है।

दास : मेरा अब इस घर में रहना मुश्किल है।

श्रीमती : तो चला जा ना !

दास : वाह ! ऐसे ही चला जाऊं ?...तीन महीने की एडवांस तनखा लेकर जाऊंगा। हां नहीं तो...कोई मज़ाक है ! मैं फोर्थ क्लास पब्लिक अफसर हूं।

राजेश : वाह-वाह !...मेरी एक बात मानेगा ?...लता, ममी, मेरे पास एक आइडिया है—बेहतरीन !...पापा जी का दिमाग दुरुस्त हो जाए।

सभी लोग 'क्या-क्या' कहते हुए घेर लेते हैं। डिप्टी के साथ मिस्टर और मिसेज़ छावड़ा का ड्राइंग रूम में प्रवेश।

डिप्टी : आइए, आइए, तशरीफ रखिए।

दोनों बैठते हैं।

डिप्टी : (पुकारते हैं) दास—ओ दास ! इधर चल।

दास धीरे-धीरे चलकर आता है।

डिप्टी : अरे जल्दी जल्दी चल ! पांव में मेंहदी लगी है क्या ?

मिस्टर : यह कैसे क्या चल रहा है ?

मिसेज़ : बात क्या है...इसकी तबियत ठीक है ?

डिप्टी : थोड़ा बदमाश है।

मिस्टर : अरे !

मिसेज़ : कैसे चल रहा है ?

डिप्टी : अबे, बताशे पर पांव रखकर चल रहा है क्या ?

दास : साहब, बिगड़िए नहीं, खबरदार...!

मिस्टर : अरे, यह बोल कैसे रहा है ?

मिसेज़ : आजकल के नौकरों का दिमाग ही ऐसा होता है।

डिप्टी : दास !...बात क्या है ?

दास पास आ गया है। बहुत धीरे-धीरे मेज़ पर गिलास रखता है। तीनों आश्चर्यचकित देखते हैं।

डिप्टी : दास !

दास : जी···सा···ह···ब।

डिप्टी : तेरा दिमाग तो ठीक है ?

दास : जी···बि···ल्कुल···

डिप्टी : (नाराज़ होकर पुकारते हैं) व्हाट, दिस इज़ नानसेन्स ! लता ! राजेश···लता···राजेश !

लता और राजेश आते हैं—उसी चाल से।

डिप्टी : यह क्या हो गया तुम लोगों को ?

मिस्टर : इट इज़ वेरी इंट्रस्टिंग !

मिसेज : फंटास्टिक् !

डिप्टी पास जाते हैं।

डिप्टी : यह क्या तमाशा है ?

राजेश : आप···चीखिए···नहीं।

लता : गुस्सा···बन्द···कीजिए।

डिप्टी : चले जाओ, मेरी आंखों के सामने से ! गेट आउट !

राजेश : थैंक्स, डैडी।

लता : थैंक्यू, फादर।

दोनों जाते हैं। डिप्टी बढ़कर दास का कान पकड़ लेते हैं।

डिप्टी : यह क्या तमाशा है ?···साफ-साफ बता, वरना कान खींच लूंगा ! ···बदमाश कहीं का !

दास : यह···देखिए···हां···नहीं तो।

पाकेट में से पर्चा निकालकर कुर्ते पर

लगाता है—'वर्क टू रूल'। उसे तीनों लोग देखते रह जाते हैं।

डिप्टी : यह क्या बत्तमीज़ी है ?

दास : स्ट्राइक।···कानून के मुताबिक काम।

डिप्टी : जल्दी से दौड़कर पानी ला···देख, मेहमान आ गए हैं।···अबे, जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा ! बड़े आए स्ट्राइक करने ! दिमाग खराब हो गया है।

वह उसी तरह धीरे-धीरे जाता है।

मिस्टर : कमाल है···घर में बीमारी घुस गई···वर्क टू रूल !

मिसेज़ : यह तो बड़ी अजीब बात है···बिल्कुल नई बीमारी। मैं कहूं, क्या हो गया ?

डिप्टी : नहीं-नहीं, मज़ाक कर रहा है।···बड़ा अच्छा गाता है···फोक सांग···यू नो फोक सांग ?

मिसेज : यस, फाक्स सांग।

डिप्टी : फाक्स नहीं, फोक···लोक।

मिसेज : ओह···देखा है, देखा है···।

दास धीरे-धीरे पानी लिये आता है।

डिप्टी : अबे तेज चल ! हो चुका मजाक। चलता है कि नहीं? बहूजी कहां हैं ? भेज उन्हें ! सब लौंडों की बदमाशी है।

दास : आई रही···हैं···।

श्रीमती धीरे-धीरे आती हैं। दायें कंधे के नीचे ब्लाउज पर 'वर्क टू रूल' लिखा कागज चिपका है।

मिसेज़ : हैलो, मिसेज़ प्रसाद !

मिस्टर : अरे···आप भी ? कमाल है !

डिप्टी : अयं, यह मैं क्या देख रहा हूं ?

श्रीमती : (धीरे-धीरे आकर)···और···दफ्तर से···देर में

आइए। मुंह में···पान की पीक···दबाकर···बैठिए।

मिस्टर : ओह भाभी जी, वंडरफुल !

मिसेज़ : गुड आइडिया ! मैं भी कहूंगी, छावड़ा साहब।

मिस्टर : फिर मैं भी कहूंगा।

श्रीमती : कहिए, आप लोग अच्छे हैं···एनी थिंग आलराइट···?

डिप्टी : यह क्या बकवास है ? आई कांट टॉलरेट !

मिस्टर : आइए, तशरीफ रखिए।

मिसेज़ : बैठिए न।

श्रीमती धीरे-धीरे बैठती हैं। डिप्टी गुस्से से उठ जाते हैं।

डिप्टी : नानसेन्स !···सब मिल गए हैं। एक-एक का दिमाग ठीक करूंगा। (बढ़कर पुकारते हैं) लता···लता···चलो इधर !

लता धीरे-धीरे आती है।

डिप्टी : तेज चलो—चलो ! (खुद बढ़कर पास जाते हैं।) लता बेटी, बताओ यह किसकी शरारत है ?

लता : शरा···र···त···नहीं···तो···।

डिप्टी : मैं तुम्हारे लिए बेलबाटम खरीद दूंगा···आज ही।

लता : ऐ-से···नहीं।

डिप्टी : बोलो, कौन है लीडर ?

लता : हम···सब।

डिप्टी : क्या ?

लता : बिलकुल···सच।

डिप्टी : तो नहीं बताओगी ?···बोलो, तुम्हारी ममी ने कहा, या राजेश का दिमाग है ?

लता : हम सबने मिलकर फैसला किया।

राजेश तेजी से आता है।

लगाता है—'वर्क टू रूल'। उसे तीनों लोग देखते रह जाते हैं।

डिप्टी : यह क्या बत्तमीज़ी है ?

दास : स्ट्राइक।···कानून के मुताबिक काम।

डिप्टी : जल्दी से दौड़कर पानी ला···देख, मेहमान आ गए हैं।···अबे, जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा ! बड़े आए स्ट्राइक करने ! दिमाग खराब हो गया है।

वह उसी तरह धीरे-धीरे जाता है।

मिस्टर : कमाल है···घर में बीमारी घुस गई···वर्क टू रूल !

मिसेज़ : यह तो बड़ी अजीब बात है···बिल्कुल नई बीमारी। मैं कहूं, क्या हो गया ?

डिप्टी : नहीं-नहीं, मज़ाक कर रहा है।···बड़ा अच्छा गाता है···फोक सांग···यू नो फोक सांग ?

मिसेज़ : यस, फाक्स सांग।

डिप्टी : फाक्स नहीं, फोक···लोक।

मिसेज़ : ओह···देखा है, देखा है···।

दास धीरे-धीरे पानी लिये आता है।

डिप्टी : अबे तेज़ चल ! हो चुका मज़ाक। चलता है कि नहीं? बहूजी कहां हैं ? भेज उन्हें ! सब लौंडों की बदमाशी है।

दास : आई रही···हैं···।

श्रीमती धीरे-धीरे आती हैं। दायें कंधे के नीचे ब्लाउज़ पर 'वर्क टू रूल' लिखा कागज़ चिपका है।

मिसेज़ : हैलो, मिसेज़ प्रसाद !

मिस्टर : अरे···आप भी ? कमाल है !

डिप्टी : अयं, यह मैं क्या देख रहा हूं ?

श्रीमती : (धीरे-धीरे आकर)···और···दफ्तर से···देर में

आइए। मुंह में...पान की पीक...दबाकर...बैठिए।

मिस्टर : ओह भाभी जी, वंडरफुल !

मिसेज़ : गुड आइडिया ! मैं भी करूंगी, छाबड़ा साहब।

मिस्टर : फिर मैं भी करूंगा।

श्रीमती : कहिए, आप लोग अच्छे से...एव्री थिंग आलराइट...?

डिप्टी : यह क्या बकवास है ? आई कांट टॉलरेट !

मिस्टर : आइए, तशरीफ रखिए।

मिसेज़ : बैठिए न।

श्रीमती धीरे-धीरे बैठती हैं। डिप्टी गुस्से से उठ जाते हैं।

डिप्टी : नानसेन्स !...सब मिल गए हैं। एक-एक का दिमाग ठीक करूंगा। (बढ़कर पुकारते हैं) लता...लता...चलो इधर !

लता धीरे-धीरे आती है।

डिप्टी : तेज़ चलो—चलो ! (खुद बढ़कर पास जाते हैं।) लता बेटी, बताओ यह किसकी शरारत है ?

लता : शरा...र...त...नहीं...तो...।

डिप्टी : मैं तुम्हारे लिए बेलबाटम खरीद दूंगा...आज ही।

लता : ऐ-से...नहीं।

डिप्टी : बोलो, कौन है लीडर ?

लता : हम...सब।

डिप्टी : क्या ?

लता : बिलकुल...सच।

डिप्टी : तो नहीं बताओगी ?...बोलो, तुम्हारी ममी ने कहा, या राजेश का दिमाग है ?

लता : हम सबने मिलकर फैसला किया।

राजेश तेजी से आता है।

राजेश : आप हमसे किसी को फोड़ नहीं सकते, पापा जी।

लता : जी हां, पापा जी।

डिप्टी : तो तुम्हारी ममी का दिमाग है यह?

राजेश : दिमाग सबका है। दफ्तर में किसका दिमाग है?

डिप्टी : चुप रहो!

राजेश : हमें डांटकर आप नहीं डरा सकते।

लता : हमारा हक है, पापा जी!

डिप्टी : मेरा हक कुछ नहीं? मैं इस घर का दुश्मन हूं?

राजेश : आप पूज्य पिता हैं।

लता : हमारे प्यारे डैडी हैं।

डिप्टी : नहीं नहीं, मैं कुछ नहीं हूं। राजेश, तुम्हारा और इस घर का क्या इम्प्रेशन पड़ा मि० छावड़ा पर?

राजेश : हम अपनी सीमा और मर्यादा में हैं।

लता : वी आर एक्सट्रीमली डिसिप्लिंड।

डिप्टी : अपनी स्ट्राइक तोड़ो···अभी तोड़ो···कल देखूंगा।··· तुम्हें पहले नोटिस देनी चाहिए।

राजेश : हमें इसका दुख है···पर अब तो हो गया।

लता : हम सबको है। (दोनों जाते हैं।)

श्रीमती : चाय···या···काफी?

मिस्टर : जो पिला दें···आपके यहां तो स्ट्राइक है।

श्रीमती 'वर्क टू रूल' हंसती हैं।

डिप्टी : (गुस्से से) राजेश, लता, चलो इधर! किधर है चाय-नाश्ता?···मतलब क्या है? चलो जल्दी, वरना···।

बांहों में वही 'वर्क टू रूल' बिल्ला लगाए राजेश-लता आते हैं। लता के हाथ में नाश्ते की ट्रे है। राजेश के हाथ में चाय और कप-प्लेट की ट्रे।

डिप्टी : राजेश ! माइंड योर फ्यूचर !

राजेश : यस···फा···द···र।

डिप्टी : लता ! यह क्या वत्तमीज़ी है ?

लता : वर्क···टू···रूल। (दोनों उसी तरह चल रहे हैं।)

मिस्टर : आइए डिप्टी साहब, इट इज़ इंट्रस्टिंग।

मिसेज़ : ए नोवल आइडिया !

डिप्टी : चले जाओ तुम लोग यहां से···हट जाओ मेरी आंखों के सामने से !

राजेश : फादर···हम···नहीं डरेंगे···।

लता : हम···अपना अधिकार लेके···रहेंगे। लेके रहेंगे !

श्रीमती : अब आपका···डांटना···डपटना···नहीं चलेगा।

राजेश-लता जाते हैं।

डिप्टी : लीजिए साहब, शुरू कीजिए।

मिसेज़ : मैं···बनाती···हूं चाय।

मिसेज़ चाय बना रही हैं। श्रीमती 'वर्क टू रूल' मुस्करा रही है।

डिप्टी : बन्द कीजिए मुस्कुराना।

मिस्टर : इनकी मांगें क्या हैं ?

डिप्टी : बकवास !

भीतर से दास, लता और राजेश आते हैं। एक के हाथ में पोस्टर है। दूसरे के (दास) गले से मांगों का पोस्टर लटक रहा है। राजेश दायां हाथ उठाए है—तीनों आकर खड़े हो जाते हैं।

राजेश : पिताजी दफ्तर से सीधे घर आएं !

लता : कपड़े अपनी इच्छानुसार !

दास : हर साल तनंखाह में बढ़ोतरी !

डिप्टी : बस, बस, बस ! भाग जाओ मेरी आंखों के सामने से! (सब जाते हैं।) माफ कीजिएगा···नमस्ते···मिस्टर-मिसेज़ छावड़ा !

मिस्टर और मिसेज छावड़ा का प्रस्थान। उनके जाने के बाद डिप्टी धीरे-धीरे चलकर अन्दर जाते हैं। धीर-धीरे कोट, टाई, कमीज़ उतार रहे हैं और मुस्करा रहे हैं।

श्रीमती : दौड़ो-दौड़ो···देखो, इन्हें क्या हो गया? दौड़ो !

तीनों दौड़े जाते हैं।

लता : पापा जी···पापा जी···पान ले आऊं ?

दास : अखबार ले आऊं पढ़ने को ?

राजेश : पापा जी, आई एम सॉरी।

श्रीमती : आप बोलते क्यों नहीं···हाय राम, क्या हो गया आपको ?

लता पान ले आती है—दास अखबार और राजेश चश्मा लाता है। डिप्टी पान खाकर और चश्मा लगाकर अखबार पढ़ने लगते हैं।

श्रीमती : फिर वही ज्यादती ! ···हम लोग खड़े हैं बात करने के लिए, आप मुंह में पीक दबाए···।

डिप्टी एक-एक का मुंह देखकर अखबार पढ़ने लगते हैं।

पर्दा।

हाथी घोड़ा चूहा

पात्र

- पहला अफसर
- दूसरा अफसर
- तीसरा अफसर
- डाक्टर
- लेडी डाक्टर
- एक नौकर
- आगन्तुक
- एक दर्शक

मंच

पर्दा उठता है अथवा मंच पर प्रकाश आता है। मंच पर कई आराम कुर्सियां रखी हैं। दो एक टेबुलें हैं। बायीं ओर ऊंची टेबुल—मरीज देखने के लिए। उस पर एक स्ट्रेचर। दायीं ओर फूल-पौधों के दो गमले।

बस, यह मंच सूना पड़ा रहता है। मंच पर कोई चरित्र-अभिनेता नहीं आते। दर्शकों में से आवाज़ें—बोलियां—सीटियां उभरने लगती हैं।

एक आवाज़ : ओजी, भाई, क्या हो गया ?

दूसरी आवाज़ : हिरोइन भाग गई ?

हंसी ।

तीसरी आवाज़ : यार, बोर करने के लिए बुलाया है !

चौथी आवाज़ : मालिक ऐसा तो न करो।

एक आवाज़ : वहुत दूर से आए हैं···आंखें सेंकने !

हंसी। सीटियां।

एक दर्शक : (उठकर) भाई, हो सकता है, यह ऐसा ही नाटक हो। आजकल कुछ भी ताज्जुब नहीं। मंच सूना रहे। दर्शकों में शोर उठे···तव पात्र मंच पर खरामा-खरामा आएं···।

दूसरी आवाज़ : खरामा-खरामा···साला !

तीसरी आवाज़ : यार, गाली तो मत दो···शरीफ औरतें बैठी हैं !

ही-ही-ही।

एक आवाज़ : होने को तो यह भी हो सकता है कि मंच पर नाटक हो ही नहीं। यहां आडीटोरियम में ही कांव-कांव होता रहे !

दूसरी आवाज़ : स्टडी आफ आडियन्स इन माडर्न थियेटर !

तीसरी आवाज़ : एब्सर्ड ड्रामा इन नेशनल स्कूल···।

पहली आवाज़ : चुप्प वे, साहब वैठे हैं !

तीसरी आवाज़ : तो ड्रामा शुरू क्यों नहीं कराते ! टिकट खरीदकर आया हूं, मुफ्त नहीं !

पहली आवाज़ : मैं यह चकल्लस नहीं वर्दाश्त कर सकता। सालों के सिर तोड़ दूंगा, हां !

पांचवीं आवाज़ : (स्त्री स्वर) प्लीज़ विहेव प्रापर्ली। क्यों डिस्टर्व करते हैं ? जिसे जाना हो, वह वाहर जाकर लड़े-झगड़े। कमाल है !

तीसरी आवाज़ : देखिए, आप मंच पर जाकर बोलिए !

पांचवीं आवाज़ : आप इत्ते स्मार्ट हैं—जाइए ना !

कई आवाज़ें : हाय ! कांग्रेचुलेशन्स !

शोर, सीटी।

एक दर्शक : अच्छा-अच्छा, शांत रहिए···मैं देखता हूं मंच पर।

जाता है।

पहली आवाज़ : मगर वहां जाकर कहीं बोर न करने लगना !

एक दर्शक : (मंच से) हो सकता है, ये लोग इधर-उधर कहीं छिपे न हों। (देखता है) भई, मैं ग्रीन रूम तो जाने से रहा।

पहली आवाज़ : वहां भी चले जाओ—खरामा-खरामा !

एक दर्शक : ना भाई ना,···मगर हां, एक बात है···लगता है वे लोग नाटक करने से डर गए।

कई आवाज़ें : डर गए ? ह्वाट नानसेन्स !

एक आवाज़ : चलिए, तब तक आप ही कुछ बोर कीजिए···मतलब कुछ सुनाइए···गाना या स्पीच।

एक दर्शक : देखिए कुछ भी हो···यह मज़ेदार बात है···पहली बार एक दर्शक···आडीटोरियम से उठकर सीधे मंच पर आ गया है। वरना यहां आता है सूत्रधार···नाटककार···निर्देशक···या उद्घाटनकर्ता···!

दूसरी आवाज़ : लो ! आर्ट क्रिटिक को तो भूल ही गए !

हंसी।

एक दर्शक : आर्डर···आर्डर···मैं किसी को नहीं भूला हूं ! और मज़ेदार बात यह···मैं इस नाटक का ड्रेस-रिहर्सल कल शाम देख चुका हूं। जी, यही तो बात है !

तीसरी आवाज़ : इस नाटक का नाम ?

एक दर्शक : भाई देखो, साफ बात···मैं नाटक का नाम-वाम नहीं

नहीं जानता, हां···हां। एक बात जानता हूं—मेरे ख्याल से वही सारी दिक्कत है इस नाटक की···जिससे लोग भाग गए-से लगते हैं। रुको यार, बताता न हूं! यह मंच देख रहे हैं ना! यह है एक नर्सिंग होम का लाउंज।

एक ग्रावाज़ : ग्ररे तो उधर टेबुल पर स्ट्रेचर क्यों रखा है?

एक दर्शक : वही तो बताता हूं यार! इस नाटक में पट्ठों ने तीन बड़े-बड़े···यानी बहुत बड़े ग्रफसरों को लिया है—वे ग्रफसर बीमार होकर नर्सिंग होम में ग्राए हैं। ग्रफसरों की बीमारी ग्रजीब है—उन्हें किसी वक्त दिल ग्रौर दिमाग का दौरा पड़ जाता है···एकाएक ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है···घट जाता है···उन्हीं के लिए यह स्ट्रेचर है। दिक्कत यह है कि वे सभी ग्रफसर ग्रभी जिन्दा हैं और उनके घरवाले, नाते-रिश्तेदार ग्राज यहां दर्शकों में मौजूद हैं। जी हां, यही तो है सारी दिक्कत। नाटकवाले हाथ धो बैठेंगे ग्रपनी नौकरियों से। लगता है, तभी खिसक गए हैं। (विराम) अब एक ही सूरत है। ग्रभिनेताग्रों को सलाह दी जाए, वे बिना नाम के यहां आएं ग्रौर नाटक दिखाएं। ग्रफसर तीन हैं—पहला, दूसरा ग्रौर तीसरा। ग्रर्थात् ग्रफसरों का एक चरित्र, डाक्टर दूसरा चरित्र ग्रौर ग्रागंतुक तीसरा चरित्र।

दूसरी ग्रावाज़ : फिर तो इस नाटक का नाम हो सकता है—'एक दो तीन'!

चौथी ग्रावाज़ : 'हाथी घोड़ा चूहा' क्यों नहीं?

पहला दर्शक : बुरा नाम नहीं है, ग्रौर यह जंचता भी खूब है—इट इज़ टू द प्वाइन्ट, जिस रंगमंच से ग्रभिनेता, नाटककार ग्रौर निर्देशक तीनों एक-दो-तीन हो गए हों!

तीसरी आवाज़ : देखिए, आप मंच पर जाकर बोलिए !

पांचवीं आवाज़ : आप इत्ते स्मार्ट हैं—जाइए ना !

कई आवाज़ें : हाय ! कांग्रेचुलेशन्स !

शोर, सीटी।

एक दर्शक : अच्छा-अच्छा, शांत रहिए···मैं देखता हूं मंच पर।

जाता है।

पहली आवाज़ : मगर वहां जाकर कहीं बोर न करने लगना !

एक दर्शक : (मंच से) हो सकता है, ये लोग इधर-उधर कहीं छिपे न हों। (देखता है) भई, मैं ग्रीन रूम तो जाने से रहा।

पहली आवाज़ : वहां भी चले जाओ—खरामा-खरामा !

एक दर्शक : ना भाई ना,···मगर हां, एक बात है···लगता है वे लोग नाटक करने से डर गए।

कई आवाज़ें : डर गए ? ह्वाट नानसेन्स !

एक आवाज़ : चलिए, तब तक आप ही कुछ बोर कीजिए···मतलब कुछ सुनाइए···गाना या स्पीच।

एक दर्शक : देखिए कुछ भी हो···यह मज़ेदार बात है···पहली बार एक दर्शक···आडीटोरियम से उठकर सीधे मंच पर आ गया है। वरना यहां आता है सूत्रधार···नाटककार···निर्देशक···या उद्घाटनकर्ता···!

दूसरी आवाज़ : लो ! आर्ट क्रिटिक को तो भूल ही गए !

हंसी।

एक दर्शक : आर्डर···आर्डर···मैं किसी को नहीं भूला हूं ! और मज़ेदार बात यह···मैं इस नाटक का ड्रेस-रिहर्सल कल शाम देख चुका हूं। जी, यही तो बात है !

तीसरी आवाज़ : इस नाटक का नाम ?

एक दर्शक : भाई देखो, साफ बात···मैं नाटक का नाम-वाम नहीं

नहीं जानता, हां···हां। एक बात जानता हूं—मेरे ख्याल से यही सारी दिक्कत है इस नाटक की···जिससे लोग भाग गए-से लगते हैं। रुको यार, बताता न हूं! यह मंच देख रहे हैं ना! यह है एक नर्सिंग होम का लाउंज।

एक आवाज़ : अरे तो उधर टेबुल पर स्ट्रेचर क्यों रखा है?

एक दर्शक : यही तो बताता हूं यार! इस नाटक में पट्ठों ने तीन बड़े-बड़े···यानी बहुत बड़े अफसरों को लिया है—वे अफसर बीमार होकर नर्सिंग होम में आए हैं। अफसरों की बीमारी अजीब है—उन्हें किसी वक्त दिल और दिमाग का दौरा पड़ जाता है···एकाएक ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है···घट जाता है···उन्हीं के लिए यह स्ट्रेचर है। दिक्कत यह है कि वे सभी अफसर अभी जिन्दा हैं और उनके घरवाले, नाते-रिश्तेदार आज यहां दर्शकों में मौजूद हैं। जी हां, यही तो है सारी दिक्कत। नाटकवाले हाथ धो बैठेंगे अपनी नौकरियों से। लगता है, तभी खिसक गए हैं। (विराम) अब एक ही सूरत है। अभिनेताओं को सलाह दी जाए, वे बिना नाम के यहां आएं और नाटक दिखाएं। अफसर तीन हैं—पहला, दूसरा और तीसरा। अर्थात् अफसरों का एक चरित्र, डाक्टर दूसरा चरित्र और आगंतुक तीसरा चरित्र।

दूसरी आवाज़ : फिर तो इस नाटक का नाम हो सकता है—'एक दो तीन'!

चौथी आवाज़ : 'हाथी घोड़ा चूहा' क्यों नहीं?

पहला दर्शक : बुरा नाम नहीं है, और यह जंचता भी खूब है—इट इज़ टू द प्वाइन्ट, जिस रंगमंच से अभिनेता, नाटककार और निर्देशक तीनों एक-दो-तीन हो गए हों!

तीसरी आवाज़ : इत्ता बोर मत करो कि हम भी यहां से एक-दो-तीन हो जाएं। हुंअ, हाथी घोड़ा चूहा ··जैसे कोई बच्चों का खेल है !

पहला दर्शक : बस···बस···बुलाता हूं···देखो ना, समझाना तो पड़ेगा ही।

पहला दर्शक विंग के दोनों तरफ जा कर अदृश्य अभिनेताओं से निःशब्द बातें करता है···उन्हें समझाता है।

पहला दर्शक : सही बात। देखो भाई, नाटक समझ में न आए तो आप लोग इन्हें 'हूट' नहीं करेंगे, न इनके ऊपर कुछ फेंकेंगे ! वैसे मेरा विश्वास है···आप शरीफ लोग गड़े अंडे, टमाटर, मूली वगैरह अपने साथ नहीं लाए होंगे। मगर पहले से बात साफ हो जानी चाहिए, हां ! तो आप लोगों की समझ में यदि नाटक न आए तो इसमें अभिनेताओं का कोई कसूर नहीं। हां, यदि नाटक अच्छा न लगे तो इसकी ज़िम्मेदारी इन पर जरूर है !

चौथी आवाज़ : वाह वाह ! समझ में आएगा तभी तो अच्छा लगेगा !

पहला दर्शक : भई, उत्ता तो समझ में आएगा ही···सवाल सिर्फ इत्ता है कि इन चरित्रों के नाम नहीं होंगे। यार समझे कि नहीं···क्यों किसी के पेट हर खामखा लात मारते हो ?

कई आवाज़ें : हां हां, समझ गए, बुलाओ।

पहली आवाज़ : इत्ता डर है तो नाटक क्यों करते हैं ?

पांचवीं आवाज़ : प्लीज़, कीप क्वायट।

पहला दर्शक : ओ···साहब···ओपनिंग म्यूज़िक दो, नाटक शुरू हो रहा है···भाई, हम दर्शक हैं टिकट वाले·· [illegible] हमें चाहिए···म्यूज़िक···लाइट···स्टेज···!

संगीत और प्रकाश।

पहला दर्शक : अब आइए भी···आइए-आइए, हम आपका परिचय
नहीं देंगे। समझ गए, आपको निराश। बताइए भला,
जब तक दर्शक रंगमंच की स्थिति नहीं समझेगा, फिर
थियेटर सामने कैसे आएगा। आइए···आइए !

तीनों अफसर आते हैं।

पहला दर्शक : पहला अफसर···दूसरा अफसर···तीसरा···। अरे···
गलती हो गई ? अच्छा हां, यह दूसरा यह तीसरा !
अच्छा फिर गलती हो गई ? देखिए, नाम बिना गलती
होती है न ? देखिए, ऐसा करते हैं···मेरे पीछे पहला
अफसर···!
(कोई नहीं बढ़ता) हां, मैं तो भूल ही गया। अफसर
मेरे पीछे कैसे खड़ा होगा। मैं ठहरा तृ०श्रे०···।
अच्छा तो पहला अफसर यहां बैठेगा···दूसरा यहां···
तीसरा यहां।

तीनों कुर्सियों पर बैठते हैं।

पहला दर्शक : अब तो समझ गए···पहला···दूसरा···तीसरा···!

डाक्टर का प्रवेश।

पहला दर्शक : यह है एक डाक्टर ! इसका भी नाम नहीं, हां ! इन्हें भी
ऊंचे जाना है, अगर इन तीनों मरीजों में से किसी एक
को ठीक कर दिया तो सोना है सोना।

आगंतुक का प्रवेश।

पहला दर्शक : यह तो आगंतुक है ही, इससे तो कोई खतरा नहीं।
पहली आवाज : इस नाटक में कोई लड़की-वड़की भी है ?
पहला दर्शक : अरे रुको यार, है क्यों नहीं !

लेडी डाक्टर का प्रवेश।

पहला दर्शक : यह है नर्सिंग होम की लेडी डाक्टर—एम० डी० कर
रही है···डाक्टरी भी, रिसर्च भी ! ···नहीं-नहीं, नाम

नहीं ! और हिन्दुस्तानी घरों की तरह हर नाटक में एक नौकर की जरूरत पड़ती है न··· (नौकर का प्रवेश) सो यह रहा एक नौकर ! बस्स···बिना नाम के अपना नाटक शुरू कर दो···कोई खतरा नहीं···!

दर्शक भागना चाहता है···अभिनेताओं ने उसे घेर लिया है। और निःशब्द उससे तर्क करने लगे हैं।

पहला दर्शक : भाई अब कैसा डर ? भई, कोई नहीं पहचान पाएगा। हां, बिल्कुल उनकी नकल न करने लगना। थोड़ी अपनी आवाज़ में ही रहना।

दर्शक बार-बार विंग की ओर, दर्शकों की ओर भागता है···अभिनेता उसे खींच ले आते हैं।

पहला दर्शक : यार, यह तो बड़ी मुसीबत है ! ये कहते हैं मैं जानता हूं उन अफसरों को जिनके चरित्र ये करने जा रहे हैं। इनका ख्याल है, मैं उनसे जाकर कह दूंगा···लानत है !

भागता है, फिर पकड़ा जाता है। अभिनेता उसके कान में कुछ कहते हैं।

पहला दर्शक : ओ हा ! तो ऐसी एक्टिंग करो ना, कि उनके घर वाले, नाते-रिश्तेदार समझ न सकें !

दर्शक छुड़ाकर दर्शकों में आ बैठता है। सारे अभिनेता चले जाते हैं। वही तीनों अफसर आते हैं।

पहला अफसर : हलो···हाऊ आर यू !

दूसरा अफसर : हेलो···!

तीसरा अफसर : हाऊ डू यू डू !

तीनों परस्पर मुस्कराते हैं।

पहला अफसर : पेप्टिक अल्सर के लिए मार्निंग वाक अच्छा है (टहलने लगता है।)

दूसरा अफसर : हाई ब्लड प्रेशर के लिए ब्रीदिंग एंड कंसंट्रेशन। है जी !

यौगिक ढंग से सांस लेता है।

तीसरा अफसर : लॉस आफ एपीटाइट के लिए यौगिक क्रियाएं !

हाथ-पैर की क्रियाएं करता है।

पहला अफसर : जी···आगे तुम्हें बोलना है···अफसर नम्बर दो !

दूसरा अफसर : व्हाट नानसेन्स, मैं कभी भी अफसर नम्बर दो नहीं रहा।

तीसरा अफसर : और देखो न, मुझे तीसरा नम्बर दिया है जब कि गवर्नमेंट हायरारकी में, मैं सबसे ऊंचे पद पर हूं··· चेयरमैन फूड कार्पोरेशन !

दूसरा अफसर : बस···बस···बस···! आगे मत बढ़ना, हां !

पहला अफसर : सेक्रेट्री मिनिस्ट्री आफ···। वाह···!

दूसरा अफसर : (हंसता है) चेयरमैन ! सेक्रेट्री। बैठे रहो कुर्सी पर। इण्डियन एअरलाइन्स का जनरल मैनेजर होना कुछ और ही बात है ! फ्री फर्निश्ड बंगला···लान···बाग-बगीचा···चपरासी···शोफर और···!

पहला अफसर : जब हाउसिंग मिनिस्ट्री में अंडर सेक्रेट्री था, क्या दिन थे वे, कितना काम करता था !···क्या मजाल कि कोई फाइल टेबुल पर रह जाए !

दूसरा अफसर : एवियेशन डिपार्टमेंट में यू० डी० सी० से नौकरी शुरू की थी, हां ! यह उन्नीस सौ चालीस की बात है। क्या इज्जत थी डिपार्टमेंट में ! क्या मजाल कि कोई कागज़ बिना मेरी नोटिंग के बाहर चला जाए ! मेरे ड्राफ्ट

किए हुए नोट्स, लेटर्स, मेमो लोग याद करते हैं।

तीसरा अफसर : आखिरी बैच का आई०सी०एस० ! केरला युनिवर्सिटी का ग्रेजुएट···। त्रिवेन्द्रम में फस्ट पोस्टिंग। ओर्स राइडिंग में मेरा माफिक कोई नहीं देका !

पहला अफसर : कोलकता का प्रेसीडिन्सी कोलेज हमको ओब तक जानता ! हिस्ट्री आनर्स का गोल्ड मेडलिस्ट, हूँ, हम पोटना शहर से चाकरी शुरू किया था। एक था मैकेन्जी शाहब। उशको माछ-भात खूब पशंद तो ! हम धड़ से उसके गुडबुक में चोला गया·· पूरे स्टाफ को हम दुलत्ती मारकर घोड़ा माफिक आगे दौड़ गया ! सरपट···गैलप ··!

दूसरा अफसर : हैं जी, हमारे लाओर की गल ही कुछ और थी···फादर कांट्रेक्टर थे···उन्नीस सौ तीस में उनके संग मैं यहां आया। पढ़ने-लिखने में मेरा जी कभी नहीं लगा। तब का ज़माना ही ओर था···बस यही सफदरजंग एअरोड्रोम बन रहा था और था···मैं चूहे की तरह इसी नए डिपार्टमेंट में घुस गया। फादर को बहुत बाद में पता चला। और वह बहुत परेशान हुए—'मेरा लड़का, दफ्तर में क्लर्क !' ओह, आज फादर जिन्दा होते, तो देखते वह लड़का किस ऊंचाई पर आ बैठा है !

तीसरा अफसर : (सहसा चिल्लाता है) ओह डाक्टर !

डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर दौड़े आते हैं।

तीसरा अफसर : डिज़ीनेस, डिज़ीनेस ओग्र···ओग्र ··!

तीनों उसे सम्हालकर अंदर ले जाने लगते हैं।

दूसरा अफसर : (सहसा) ओह गॉड···नॉनिया·· वोमिटिंग! ग.घ···

थू···थू !

पहला अफसर : मेरे कानों में फिर टेलीफोन की आवाज, हेलो···हेलो··· हेलो···रांग नम्बर···कट इट···आई हैव नो टाइम··· कांटेक्ट माई पी० ए० पर्सनल···प्राइवेट असिस्टेंट सेक्रेटरीज···नानसेन्स··!

तीसरे को नौकर सम्हालकर ले जाता है, दूसरे को लेडी डाक्टर और पहले को डाक्टर। क्षण भर बाद पहला अफसर भीतर से टेलीफोन हाथ में उठाए और बात करता हुआ दौड़ा आता है। डाक्टर, नौकर और लेडी डाक्टर उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। नौकर के हाथ में दवाइयों और इंजेक्शन की ट्रे है। लेडी डाक्टर के हाथ में नोटबुक है, वह नोट करती जा रही है।

पहला अफसर : (फोन पर) यस···यस···यू० जी० सी० की रिपोर्ट पढ़ो··यस···हां···हां···, इस पर भंडारी कमीशन क्या कहता है?···हां···हां···ठीक हां, हां···और शिमले में वाइस-चांसलर्स कांफ्रेंस के रेकमेंडेशन्स क्या थे?···यस-यस···हमारे एडूकेशन सिस्टम में कुछ रांग है···यस-यस···इसमें बुनियादी परिवर्तन का रेकमेंडेशन है! हां-हां, एक्सपर्ट कमेटी की बैठक होने दो···हां-हां बोल दो, मैं प्रेसाइड कर रहा हूं मीटिंग यहां से···कौन मिस्टर दास? वह एतराज कर रहे हैं? उनसे बोलो, उनके दामाद की अमेरिकन स्कालरशिप की फाइल मेरे पास आई है···!

डाक्टर : सर···सर, आप पर स्ट्रेन पड़ेगा। टेलीफोन हमें दीजिए !

पहला अफसर : यस, ठीक हो गया ना ! हां तो हायर एडूकेशन रिफार्म कमेटी की मीटिंग शुरू करो। नमस्ते · नमस्ते···हाऊ आर यू डाक्टर भगवानदास···ओह डाक्टर नागपाल ·· आपका बड़ा लड़का कहां है ? ओह, उसका अप्वाइंटमेंट हो जाएगा···डोंट वरी···हें हें हें···। (सहसा) ओह पसीना-पसीना···शव भींग गया !

नौकर फोन रख देता है। डाक्टर अफसर की नाड़ी देखने लगता है।

डाक्टर : इक्ससेसिव स्वेटिंग आफ हैंड्स फीट···फेस··· आर्म-पिट्स···

नौकर पसीना सुखा रहा है। लेडी डाक्टर लिखती जा रही है। अफसर चुपचाप कुर्सी पर पड़ा है। सहसा फिर फोन उठा लेता है।

डाक्टर : सर, यह खतरनाक है। फोन रख दीजिए···प्लीज़··· सर !

पहला अफसर : हेलो···डाक्टर नागपाल···लिसिन मी, प्लीज़, सिक्सटी फाइव, सिक्सटी ऐट, सिक्सटी नाइन की रिफार्म कमेटियों की फाइल पढ़ दीजिए···दैट्स आल, मैं यहां से दफ्तर आते ही सब ठीक कर लूंगा। यस-यस··· सुनिए···!

डाक्टर : सर देखिए···आपको आराम करना चाहिए···आफिस ···मीटिंग···फाइल्स सब भूल जाना चाहिए।

पहला अफसर : मालुम है, एक दिन अगर मैं भूल जाऊं तो यह मिनिस्ट्री ठप हो जाएगा। (फोन पर) हेलो चंदरमोहन···मेरे

स्टेनो को दो···नहीं-नहीं···पी० ए० को···यस-यस··· अंडर सेक्रेटी सुमैइया को बोलो···जरा वाच रखे। अंडर हां, मिनिस्टर का प्रोग्राम क्या है! (सहसा) आह···ओ मां!

कुर्सी पर शिथिल पड़ जाता है।
डाक्टर उसे इंजेक्शन देने लगता है।
अफसर की आंखें बंद हैं।

डाक्टर : पिछले बीस साल से अलकोहलिक···हैज सरवाइव्ड टू माइंड कोरोनरी अटैक्स···ग्रासली ओवरवेट··· क्रानिकली डिस्पेप्टिक।

लेडी डाक्टर लिखती जा रही है।

डाक्टर : पिछली बातों से मालूम हुआ है···डाक्टरों की सलाह से इन्होंने गॉफ़ खेलना शुरू किया। उस खेल में यह इस कदर डूबे कि लंच के बाद यह अक्सर दफ्तर नहीं गए, लेकिन नौकरी में ऊंचे से ऊंचे उठने के लिए उन सबको काकटेल डिनर देना शुरू किया···जिनमे मरीज़ को गुडबुक्स में रहना जरूरी था!

लेडी डाक्टर : गॉफ़ खेलने और अल्कोहलिक होने में···

डाक्टर : यस देयर इज़ लॉजिक···! ऐसा है, जब आदमी अपनी अयोग्यता से नौकरी की ऊंचाई पर जा पहुंचता है और जब वहां अपने आपको अयोग्य···इनकाम्पिटेंट महसूस करने लगता है तब उसमें तरह-तरह की मानसिक, शारीरिक, स्नायविक बीमारियां शुरू होती है—जैसे कोलाइटिस, कांस्टीपेशन, डायरिया, हाइ-पर टेंशन···इनसोमनिया···क्रॉनिक फेटीग···माइग्रेन हेडेक···नौसिया···वोमिटिंग···डिज़ीनेस···नर्वस डर-मेटाइटिस···सेक्सुअल इम्पोटेंस···

पहले अफसर को छींकें आनी शुरू होती हैं। वह दौड़कर टेलीफोन उठाता है और उस पर 'हेलो हेलो' करता हुआ भीतर भागता है। नौकर, दोनों डाक्टर उसका पीछा करते हुए भीतर जाते हैं। डाक्टर दौड़ा आता है…लेडी डाक्टर पीछे है।

लेडी डाक्टर : सर…सुनिए। यह भी कोई अटैक है ?

डाक्टर : ये मरीज़ हमारी जान लेने आए हैं। ये हमें भी मरीज़ बना देंगे। हम इन्हें डांट नहीं सकते…ये हमें नौकरी से निकलवा देंगे। हम इन्हें समझा नहीं सकते…ये इत्ते समझदार हैं…ये यहां नर्सिंग होम में आए हैं…आराम पाने के लिए…मगर इनके दिमाग में हर वक्त वही आफिस…वही कुर्सी…वही डर…वही…वही-वही !

लेडी डाक्टर इस बीच तेजी से लिखती जा रही थी।

डाक्टर : यह क्या ?

लेडी डाक्टर : रिपोर्ट।

डाक्टर : नानसेन्स !

लेडी डाक्टर : मरीज़ और टेलीफोन में कोई रिश्ता है ?

डाक्टर : यस…अफसर कुर्सी पर जब अपने आपको अयोग्य पाता है तो उसे छिपाने के लिए वह शिकायतें करने लगता है कि उसे और स्टाफ चाहिए। और स्टाफ से सीधे संपर्क के लिए उसके टेबुल पर कई टेलीफोन चाहिए, कम-से-कम पांच-छः टेलीफोन। और इस तरह वह अयोग्य अफसर 'फोनोफिलिया' का मरीज़ हो जाता है।

भीतर शोर होता है। दूसरा अफसर किसी को डांटने लगा है। दोनों डाक्टर भीतर दौड़ते हैं। दूसरा अफसर नौकर के सिर पर फाइलें लदवाए और स्वयं अपने हाथों में फाइलें लिए हुए आता है। दोनों मंच पर दौड़ रहे हैं···फाइलें रखने को जैसे उचित जगह नहीं मिल पा रही है।

टेबुल के स्ट्रेचर पर फाइलें रखी जाती हैं।

दूसरा अफसर : दरवाज़े पर खड़े हो···नो एडमीशन विदाउट परमीशन···।

नौकर : डाक्टर साहब !

दूसरा अफसर : बिना मेरी इजाज़त के कोई अंदर नहीं आ सकता !

नौकर : यस सर !

तैनात खड़ा हो जाता है।

दूसरा अफसर : (फाइलों में डूबता हुआ) नौकरी चाहिए ?

नौकर : जी सरकार···मेरा भाई है···बी० ए० पास···पिछले आठ सालों से बेकार है।

दूसरा अफसर : अब तक हज़ारों आदमियों को नौकरी दिलाई है।

नौकर : भाई का नाम इम्प्लायमेंट इक्सचेंज में रजिस्टर्ड है।

दूसरा अफसर : उसकी कोई ज़रूरत नहीं !

नौकर : पहले जहां-जहां वह जाता, सभी कहते, इम्प्लायमेंट इक्सचेंज के थ्रू आओ।

दूसरा अफसर : भई, आने-जाने के तमाम रास्ते हैं··एम्प्लायमेंट एक्सचेंज हमने अपनी सुविधा के लिए बना रखा है··· यू नो · हैं जी, जैसे कंडक्टर के पास शिकायत की

किताव रख देने में सहूलियत हो जाती है···हैं जी···यू नो !

फाइलों से जैसे खेल रहा है।

नौकर : हुजूर मेरे भाई की नौकरी···

दूसरा अफसर : अर्जी मेरे पी० ए० को दे दो।

नौकर : हुजूर माफी चाहता हूं—ऐसा कई अफसरों ने कहा··· आप जानते हैं यहां तो आप ही जैसे वड़े-वड़े अफसर आते हैं, मगर कुछ नहीं हुआ।

दूसरा अफसर : **(सहसा)** आह ! यार, मेरे हाथों में झुनझुनी होने लगी ! **(दोनों हाथ तेजी से हिला रहा है।)** कम्वख्त वढ़ती जा रही है।

नौकर : डाक्टर बुलाऊ ?

दूसरा अफसर : नहीं नहीं नहीं।···लगता है, मुझे पैरेलेसिस का अटैक हो जाएगा।

नौकर : हुजूर···ऐसा आपके दुश्मनों को हो।

फाइलों को अपने सीने पर···सिर पर, हाथ में दबाए पूरे मंच पर घूमने लगता है।

दूसरा अफसर : मेरा कोई दुश्मन नहीं। महर्षि वियोगानन्द मेरे गुरु हैं·· साईवावा का मैं भक्त हूं···मंगल का व्रत रखता हूं। हनुमान मन्दिर की गवर्निंग वाडी का मैं चैयरमैन हूं।

नौकर : जै हनुमान ज्ञान गुन सागर
जै कपीस तिहुं लोक उजागर
जै जै जै हनुमान गोसाईं···।

दूसरा अफसर : स्टॉप दिस नानसेन्स ! **(भक्तिभाव में नौकर की आंखें वंद हैं। हाथ जुड़े हैं। वह निःशव्द हनुमान चालीसा का**

पाठ कर रहा है।) छीं: छीं: छीं: छीं: छीं: !

नौकर : हुजूर डाक्टर बुलाऊं ?

दूसरा अफसर : छीं: छीं: !

दोनों डाक्टर दौड़े आते हैं।

दूसरा अफसर : गेट आउट···छीं:···गेट आउट···छीं: !

दोनों डाक्टर भाग जाते हैं।

दूसरा अफसर : कह, यस सर···यस सर···यस सर ! यस सर !

नौकर 'यस सर' की रट लगता है।

अफसर की छींक रुक जाती है।

दूसरा अफसर : तबियत ठीक हो गई न ! मैं जानता हूं अपने मर्ज़ की दवा ! **(फाइलों को देखता है, पढ़ता है और हस्ताक्षर करता है।)** अगर मैं एक हफ़्ते के लिए अपनी इस जगह से हट जाऊं तो हवाई जहाज़ों का उड़ना बंद हो जाए···। **(सहसा)** ग्राउण्ड इंजीनियर यूनियन की फाइल को चूहा कैसे कुतर गया ?···अरे···एअर-होस्टेस रिप्रेजेंटेशन फाइल पर नमी कहां से आई ?

नौकर : हुजूर आपकी छींक !

दूसरा अफसर : अरे रे···रे···इस फाइल को छूना खतरनाक है··· इट इज़ मोस्ट इफेक्शस···सारी फाइलें स्ट्रेचर में डालो !

स्ट्रेचर पर फाइलों को रखकर दोनों भीतर उठा ले जाते हैं।

नौकर : राम नाम सत्य है ! सत्य बोलो मुक्ति है !

दूसरा अफसर : अबे डोंट गो आउट आफ कैरेक्टर !

नौकर : अरे मारो गोली कैरेक्टर को **(एक्टर का नाम लेता है।)** कहां के तुम बड़े जनरल मैनेजर···और कहां का मैं नौकर !

दूसरा अफसर : अबे, इक्जिट है यहां ?

नौकर : सुनो यार, थोड़ी देर मुझे अफसर का रोल करने दो···!

पहला दर्शक : नहीं-नहीं, अब यह रद्दोबदल नहीं हो सकता !

नौकर : चोप्प ! यह हमारा घरेलू मामला है।

पहली आवाज़ : यार झगड़ा मत करो।

दूसरा अफसर : अच्छा खासा नाटक चल रहा था···कमाल है !

स्त्री स्वर : प्लीज कीप क्वायट।

नौकर : अच्छा बाबा 'इक्जिट !'

दोनों का तेज़ी से प्रस्थान। मंच सूना। दर्शकों में से आवाज़ें, सीटियां।

पहला दर्शक : लगता है फिर भाग गए।

तीसरी आवाज़ : कमाल है···यह नाटक नहीं मज़ाक है !

पहला दर्शक : घबड़ाओ नहीं···शांत रहिए।

तीसरी आवाज़ : क्या शांत रहिए ? कहीं ऐसे नाटक खेला जाता है ! हम भी नाटक खेलते हैं। मैं नाटक के बारे में लिखता भी हूं।

पहली आवाज़ : जी हां, खबरदार···सबसे बड़े ड्रामा क्रिटिक हैं !··· स्याह को सफेद और सफेद को स्याह करने वाले।

दूसरी आवाज़ : यह क्या तमाशा है ?

पहला दर्शक : आपको मालूम होना चाहिए···इत्ते बड़े-बड़े अफसरों का ड्रामा खेलना कितना खतरनाक है! पता नहीं कोई मुसीबत आ गई हो।

सीटियां और शोर। डाक्टर की भूमिका करने वाला अभिनेता दौड़ा आता है।

डाक्टर : बस·· बस शुरू कर रहे हैं। पहले अफसर की भूमिका करने वाला अभिनेता डर गया है···कहता है···वह नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

कई आवाज़ें : तो हम क्या करें ?

डाक्टर : थोड़ा नाटक में सुधार किया जा रहा है। मतलब काटा-छांटा जा रहा है।

दूसरी आवाज : इस वक्त ?कमाल है !

लेडी डाक्टर : (आती है।) आइए···आइए नाटक शुरू हो रहा है।

दोनों जाते हैं। तीसरा अफसर बहुत बड़ा सिगार पीता हुआ आता है। लग रहा है, जैसे दफ्तर में अपने स्टाफ से घिरा हुआ है।

तीसरा अफसर : नो···नो···नो······डोंट डिस्टर्ब मी। बिफोर ट्रेवुल एराइज़ेज, आप मिनिस्ट्री को एक डी० ओ० भेज दीजिए। क्या, यस यस···ज्वाइंट सेक्रेट्री को बोल देना, हम दोनों साउथ इंडियन हैं।···ह्वाट···पेपर साइन करने हैं ? सेक्रेट्री को मार्क करो। मेरा हाथ टायर्ड हो जाता है। दोसरा मंगाओ···दोसरा···! वेरी इम्पार्टेंट फाइल···ऐसा बोलो ना···ओअ···येन्दा !

जैसे तमाम फाइलों पर दस्तखत करने लगा है।

तीसरा अफसर : नेई···ओओ। बोलो, मैं किसी से नेई मिलना मांगता। (उबकाई आने लगती है।) ओअ···ओ···अ

डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर भागे आते हैं।

डाक्टर : बैठ जाइए···सर बैठ जाइए !

बैठ नहीं पाता। जैसे अकड़ गया है।

हर डाक्टर से मिलकर खबर देता है।

नौकर : नमस्ते, डाक्टर साहब···पहला अफसर, दूसरा, तीसरा, चौथा···पांचवां सीरियस सिच्यूएशन···क्रिटिकल···बुलाया है···यस, यस नर्सिंग होम···ब्लड प्रेशर हाई टू-फिफ्टी···लो···फिफ्टी···नमस्ते डा० सिंह शुगर···शुगर···प्वाइन्ट सिक्स पेशाब में···यस यस···एलार्मिंग···नमस्ते, डाक्टर चटर्जी···हैं हैं ब्लड शुगर···यस···यस···ब्लड शुगर प्वाइंट फाइव···नमस्ते···सर···नमस्ते, डाक्टर खन्ना साहब···हैं हैं फ्रीक्वेन्ट यूरीनेशन···गुड मार्निंग, डाक्टर पाल···नासिया वोमिटिंग···घोड़े की चाल माफिक दिल का धड़कना···कानों में चूहों की आवाज़···हाथी···घोड़ा···चूहा···!

यह कहता हुआ भागता है। आगंतुक का प्रवेश। उसकी पीठ, पेट, हाथ में छोटे डंडों में लगी तख्तियां बंधी हुई हैं। उन तख्तियों पर लिखा हुआ है :

ब्रिज।

गॉफ।

बागवानी। कुकिंग।

गीता दर्शन।

धर्म यात्रा।

यौगिक क्रिया।

तेल मालिश।

नौकर आगंतुक को देखता है। आगंतुक धीरे-धीरे मंच पर चलता

पहला अफसर : काश, मेरा डाइजेशन एक बार ठीक हो जाता !

दूसरा अफसर : काश, एक रात में साउंड स्लीप ले पाता !

तीसरा अफसर : इफ़ ओनली आई कुड गेट बैक माई [illegible] !

तीनों कुर्सियों पर गिरकर बैठते हैं।

पहला अफसर : डाक्टर, तुम्हें स्कालरशिप चाहिए विदेश जाने के लिए?

दूसरा अफसर : हेलो लेडी डाक्टर, तुम्हारा रेट क्या है ?

तीसरा अफसर : भयंकरम् ! जिसे बोलो एक्साइटमेंट होता !

डाक्टर लेडी डाक्टर से अलग बातें करता है।

डाक्टर : इनकी ताकत इनकी बीमारी है।

लेडी डाक्टर : इनकी बीमारी इनकी ताकत है !

डाक्टर : ये कुर्सियां इनके लिए एलर्जिक हैं।

लेडी डाक्टर : कुर्सियां एलर्जिक हैं !

डाक्टर : इनसे बोलो, कुर्सियां छोड़ दें।

लेडी डाक्टर : छोड़ दें !

डाक्टर : ये बीमार हैं···इन्हें चाहिए, टेक थिंग्स ईज़ी···नाट टू वर्क सो हार्ड···क्योंकि ये कुछ काम कर नहीं सकते··· इन्हें आराम चाहिए···कम्प्लीट रेस्ट···!

लेडी डाक्टर : क्यों ?

डाक्टर : दे सफर फ्रॉम वोकेशनल इनकम्पीटेंस !

लेडी डाक्टर : (लिख रही है) वोकेशनल इनकम्पीटेंस।

डाक्टर : शी···धीरे-धीरे !

सब एक-दूसरे को शक की निगाह से देखने लगते हैं।

लेडी डाक्टर : प्लीज़···सर, आप लोग कुर्सी छोड़ दीजिए !

पहला अफसर : क्या बोलता है ?

दूसरा अफसर : व्हाट ?

अण्डर सेक्रेट्री को मिलाओ···हेलो···ज्वाइंट सेक्रेट्री को दो···। हेलो···!

दूसरा अफसर : ब्रिंग माई फाइल्स !

तीसरा अफसर : आई कांट लिव विदाउट फाइल्स !

लेडी डाक्टर दौड़कर दोनों की फाइल्स लाकर देती है। पहला फोन पर न जाने क्या ऊटपटांग बोल रहा है और ये दोनों फाइलों में डूब गए हैं।

डाक्टर : इन पर अटैक पड़ सकता है।

लेडी डाक्टर : अटैक पड़ सकता है···!

डाक्टर : मेडिकल सुपरिंटेंडेंट ने इनकी मेडिकल रिपोर्ट मांगी है। नम्बर वन फोनोफीलिया···नम्बर दो···पेपीटोमीनिया···नम्बर तीन फीलियोफीलिया···। पहले पर हार्ट अटैक हो सकता है···दूसरे पर थ्रम्बोसिस···तीसरे पर पैरेलिसिस···। (चिल्लाता है) स्टॉप···स्टॉप···!

सन्नाटा।

पहला अफसर : ओह नानसेन्स···क्या बुरा टाइम आ गया। कोई हमारा तारीफ नहीं कोरता।

दूसरा अफसर : कोई हमारी मदद नहीं करता।

तीसरा अफसर : कोई नेहीं समझता···मेरे ऊपर कितना काम है···अउर नीचे का सारा स्टाफ कितना इनक्योरबिल इनकाम्पीटेंट है।

डाक्टर : बोलना बंद कीजिए···आराम कीजिए···कम्प्लीट रेस्ट!

डाक्टर 'स्टॉप स्टॉप' चिल्ला रहा है। तीनों अपनी बातें दुहरा रहे हैं। एक बिंदु पर आकर तीनों 'ओ ओ ओ'

डाक्टर : प्लीज़ कीप क्वायट···देखिए सिगार मत जलाइए···सर···! कुर्सी पर ही बैठे रहिए···यहीं इक्ज़ामिन कर लेंगे।

पहला अफसर : हे···पोस्टपोन इट !

दूसरा अफसर : कीप पैंन्डिग !

तीसरा अफसर : मेक इट टुमारो !

डाक्टर : नो सर···ऊपर रिपोर्ट देनी है···हो सकता है सरकार आप लोगों को विदेश भेजे···स्पेशल ट्रीटमेंट के लिए···।

पहला अफसर : नो-नो···मैं अपना देश एक दिन के लिए नहीं छोड़ सकता !

दूसरा अफसर : हम···विदेश···हर महीने हम विदेश जाते हैं !

तीसरा अफसर : वी आर ऑल राइट···हमको क्या हुआ है···वी आर हेल एंड हार्टी···!

तीनों तरह-तरह से हंसने लगते हैं।

पहली आवाज़ : क्या ही-ही कर रखा है···यह नाटक खत्म भी करो !

दूसरी आवाज़ : हे, बहुत हो गया !

पहला दर्शक : सब्र रखो भाई···बस, नाटक खत्म होने को है !

पहला अफसर : अच्छा-अच्छा चलो इक्ज़ामिन करो !

पहला दर्शक : वैसे नाटक में इतनी आसानी से अफसर लोग नहीं तैयार हो···तेबड़ी बहसें होतीं हैं।

तीसरी आवाज़ : अजी हमारे पास इत्ता वक्त नहीं !

डाक्टर : हमारे पास भी इत्ता वक्त नहीं।

पहली आवाज़ : ऐक्शन···घटना···क्लाइमेक्स !

पहला अफसर : मतलब हमारा हार्ट अटैक हो जाए !

पहला दर्शक : साइलेंस प्लीज़ !

नौकर दौड़ा आता है। उसके हाथ

में मेडिकल रिपोर्ट्स हैं। डाक्टर नर्स रिपोर्ट्स देखते हैं।

डाक्टर : दिस इज नम्बर वन ··नम्बर टू···नम्बर थ्री···। (सहसा) यह क्या ? ये किसके रिर्पोट्स है ? ये तो जानवरों के अस्पताल के कागजात है !

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर···!

नौकर : नहीं हुजूर···इन्हीं के हैं।

दोनों घबड़ाए हुए रिपोर्ट्स देखते हैं।

डाक्टर : ह्वाट ?

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर···नम्बर वन···घोड़ा···नम्बर दो··· चूहा···नम्बर तीन हाथी। आल एनिमल सिमटम्स···।

नौकर : जी सर, सारे डाक्टर लोग घबड़ा गए हैं !

डाक्टर : ओह···ह्यूमन सिमटम्स की जगह एनिमल सिमटम्स···!

डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर भयभीत होकर भागते हैं। किनारे छिपकर उन तीनों को देखते हैं।

पहला अफसर : क्या गोलमाल है ? सबको डिसमिस करा दूंगा !

दूसरा अफसर : नौकर !

तीसरा अफसर : डाक्टर !

डाक्टर, लेडी डाक्टर दोनों मिलकर नौकर को आगे ठेलते हैं।

नौकर : घोड़ा···चूहा···हाथी···!

तीनों : क्या ? ह्वाट ?···

नौकर : माई-बाप, मेरा कोई कसूर नहीं···आप लोगों का पैथालिजिकल मेडिकल रिपोर्ट्स··बताता है। जानवरों के सिमटम्स ! घोड़ा···चूहा···हाथी के लक्षण···!

तीनों हंसते हैं। फिर आवेश में उठते हैं। फिर अजीब ढंग से हंसने लगते हैं। फिर हंसते-हंसते तीनों क्रमशः घोड़ा, चूहा और हाथी जैसे व्यवहार करने लगते हैं। नौकर भागकर किनारे छिप जाता है।

तीनों : (सहसा) क्या ?

तीनों : हममें जानवरों के लक्षण !

वही आगंतुक तख्तियां लटकाए आता है। तीनों उसे पकड़ लेते हैं।

पहला अफसर : डाक्टर…लेडी डाक्टर !

दोनों डरे हुए आते हैं।

दूसरा अफसर : इक्जामिन हिम।

तीसरा अफसर : होल्ड हिम…!

डाक्टर नौकर उसे पकड़करटेबुल पर लिटाते हैं और परीक्षण करते हैं। रिपोर्ट देते हैं।

तीनों : (पढ़ते हैं)। मनुष्य के लक्षण ?

पहला अफसर : हाऊ ? ह्वाई ?

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर, हाऊ ह्वाई…हाऊ ह्वाई…हाऊ ह्वाई ?

नौकर : मुंह बंद करो बहनजी, सुनो, मैं बताता हूं…सन् उन्नीस सौ पचपन में इसने बी० ए० पास किया थर्ड डिवीज़न में…तब से यह बेकार है…कहीं कोई नौकरी नहीं मिली।

पहला अफसर : ओह यह बात…मैं देता हूं इसे नौकरी !

दूसरा अफसर : मैं अभी देता हूं अप्वाइंटमेंट लेटर !

तीसरा अफसर : यह लो नौकरी !

आगंतुक तीनों कागजों को मुंह में डालकर खाने लगता है।

सभी : (घबड़ा जाते हैं।) वह क्या करता है… क्या करता है?

नौकर : बीस साल का भूखा है साहब!

सभी : यह मर जाएगा… थूक दे!

आगंतुक में धीरे-धीरे घोड़े, चूहे और हाथी, तीनों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। सब भागते हैं।

नौकर : डरिए नहीं… कोई डर नहीं। उसे एक साथ तीनों नौकरी मिल गई है!

पहला अफसर : घोड़ा…घोड़ा!

दूसरा अफसर : चूहा…चूहा!

तीसरा अफसर : हाथी…हाथी!

पूरे मंच पर भगदड़ मच जाती है।

पहला अफसर : हे, मैंने तुझे नौकरी दी!

आगंतुक : यस सर! यस सर!

दूसरा अफसर : तुझे एल० डी० सी० बनाया!

आगंतुक : यस सर! यस सर!

तीसरा अफसर : बिहेव योरसेल्फ!

आगंतुक : यस सर…यस सर!

नौकर : हाय, कैसा बोले—यस सर, यस सर!

आगंतुक : हाथी…घोड़ा…

सभी : (समवेत) यस सर…यस सर!

आगंतुक : चूहा…हाथी…।

सभी : यस सर, यस सर…।

आगंतुक : प्यारा देश…।

सभी : यस सर···यस सर !
आगंतुक : यस सर···यस सर···!
सभी : यस सर···यस सर !

पर्दा ।

कॉफी हाउस में इन्तज़ार

पात्र

- पहला व्यक्ति
- दूसरा व्यक्ति
- बेयरा

मंच

कॉफी हाउस का एक कमरा। एक टेबल और एक ही कुर्सी। पृष्ठभूमि में तीन व्यक्तियों की परस्पर बातचीत। पहला व्यक्ति जिसकी आयु लगभग पैंतालीस साल है, पाजामा कुर्ता पहने हुए तेज़ी से आता है और दौड़कर कुर्सी पर बैठ जाता है। उसके पीछे ही दूसरा व्यक्ति आता है, अवस्था लगभग पच्चीस वर्ष है, पैंट कमीज़ में। देखते ही पहला व्यक्ति जल्दी-जल्दी टेबल पर अपने कागज-पत्र रखता है।

पहला व्यक्ति : (साधिकार) बेयरा !···

बेयरा : (आता है) जी, बोलिए···जी हुकुम कीजिए।

पहला व्यक्ति : एक कॉफी, तीन गिलास पानी··एक कॉफी तीन पानी···एक कॉफी तीन पानी···

बेयरा भी यही दुहराता है। दूसरा व्यक्ति इस इन्तज़ार में है कि बात खत्म हो तो वह बोले। पर बात खत्म नहीं हो पाती है। बेयरा बोलता हुआ जाता है।

पहला व्यक्ति : मैं यहां रोज़ बैठता हूं। मैं पिछले तेरह वर्षों से यहां बैठता आ रहा हूं—इसे सारी दुनिया जानती है। कोई एक न जाने तो मैं क्या करूं !

दूसरा व्यक्ति : आप झूठ बोलते हैं। पिछले छह दिनों से मैं यहां लगातार बैठता आ रहा हूं। यहां एक कुर्सी और हुआ करती है। मैं यहां बैठा उसका इन्तज़ार करता था। वह आती थी, फिर हम आमने-सामने बैठकर बातें किया करते थे।

पहला व्यक्ति टेबल पर अपने लिखने का सामान सजाता रहता है।

पहला व्यक्ति : मैं यहां बैठकर अपना काम करता हूं···

दूसरा व्यक्ति : मैं भी तो अपने काम से ही यहां आया हूं।

पहला व्यक्ति : बात करना कोई काम नहीं है।

दूसरा व्यक्ति : यहां बैठकर पढ़ना-लिखना करना भी कोई काम नहीं है।

पहला व्यक्ति : तुम अभी पढ़ते हो ?

दूसरा व्यक्ति : तुमसे मतलब ?

पहला व्यक्ति : अपने देश की तवारीख पढ़ी है ?

दूसरा व्यक्ति सिगरेट जलाता है और गुस्से से चुपचाप एक ओर देखने लगता है।

पहला व्यक्ति : अजीब बात है। आजकल के नौजवान अपने देश की तवारीख का नाम सुनते ही सिगरेट पीने लगते हैं। हमारी पीढ़ी में यह नहीं था। हमने इतिहास जिया और भोगा है, और इतिहास के एक महान् अध्याय की रचना की है। हमने स्वतंत्रता संग्राम···

दूसरा व्यक्ति : (काटकर) चुप रहो, यही सब सुनाने के लिए तुम रोज़ यहां आते हो ?

पहला व्यक्ति : (उठकर) और तुम यहां हम पर गुस्सा निकालने आते हो? (रुककर) एक सिगरेट मुझे नहीं दे सकते ? (लेकर) हे राम, कितनी तेज़ सिगरेटें तुम लोग पीते हो। हमारे ज़माने में इस तरह सिगरेट पीने का रिवाज़ नहीं था। हम इस उमर तक सत्याग्रही थे। हमारे सामने एक महान उद्देश्य था···कोई···कुछ ऐसा था, जो हर क्षण हमें इन्स्पायर किया रखता था।

यह कहता हुआ टेबल से टिक कर खड़ा हो जाता है। सिगरेट पीता है। धुआं छोड़कर उसमें देखता हुआ बोलता है।

पहला व्यक्ति : धुएं में असंख्य लकीरें हैं। सब अलग-अलग बिखरती, टूटती हुई वायुमंडल के मुंह में समाती जा रही हैं। यह परिवेश जैसे एक बहुत बड़ी छिपकली है और यह सारी लकीरों को मुंह से चाटती जा रही है।

दूसरा व्यक्ति : (सिगरेट मसलता हुआ) तुम्हें इस तरह बोर करने का कोई अधिकार नहीं है।

पहला व्यक्ति : हमने तब सिगरेट नहीं पी थी। कॉफी का नाम भी नहीं सुना था। १९४४ में पहली बार इसका नाम सुना था···हमारे सुराजी गुरु ने तेरह दिन का उपवास तोड़ा था···आत्मशुद्धि का उपवास···अंगरेज कलक्टर ने अपने हाथ से उन्हें कॉफी पिलायी थी।

वेयरा आता है।

वेयरा : एक कॉफी···तीन गिलास पानी···।

पहला व्यक्ति : अजीब लोग हैं—इनको कौन समझाए? इनसे कोई क्या कहे?···इनमें इतना वेमतलब गुस्सा आता है···!

दूसरा व्यक्ति : चुप रहो!

उसकी चिल्लाहट से जैसे सब झनझना कर टूट जाता है—एक ही क्षण में।

दूसरा व्यक्ति : यहां एक और कुरसी दो।

पहला व्यक्ति : थी···यानी, यह इतिहास की वात है। और, इतिहास में क्या नहीं है?

दूसरा व्यक्ति : यहां की वह कुर्सी कहां है?

वेयरा : भीतर है। उस पर एक सज्जन पुरुष बैठे हैं।

दूसरा व्यक्ति : उस सज्जन पुरुष से कहो···

वेयरा : सर, वह कम सुनते हैं।

दूसरा व्यक्ति : मैं लिख कर देता हूं···

वेयरा : सर, उन्हें बहुत कम दिखाई देता है।

पहला व्यक्ति कॉफी पी रहा है।

पहला व्यक्ति : दर असल आप उस सज्जन पुरुष को नहीं जानते, तभी आपको इतना गुस्सा है। मैं उन्हें पिछले पच्चीस वर्षों से जानता हूं।

दूसरा व्यक्ति : तो आप उन्हीं के पास जाकर क्यों नहीं बैठ जाते?

पहला व्यक्ति : मैं यही तो आपसे अर्ज करना चाहता हूं···आप उस

सज्जन पुरुष को नहीं जानते। यही तो वह सुराजी गुरु है। अब यह हर वक्त कॉफी पीता है और एक भीड़ से घिरा रहता है।

दूसरा व्यक्ति : मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानना चाहता।

पहला व्यक्ति : यही वह चाहता है।

दूसरा व्यक्ति : यह मेरी इच्छा है।...मुझे किसी की परवाह नहीं।

पहला व्यक्ति : उसे भी किसी की परवाह नहीं।

दूसरा व्यक्ति : मैं देखता हूं...

पहला व्यक्ति : वह हम में देख रहा ।

दूसरा व्यक्ति : मैं उसे जबरन उठाकर कुर्सी ले आता हूं। वह कुर्सी यहां की है। मैं उस पर पिछले छह दिनों से लगातार बैठता रहा हूं।

बेयरा : (रोककर) सर, वह पिछले बीस वर्षों से लगातार बैठे हैं।

दूसरा व्यक्ति : पिछले छह दिनों से यहां हम बैठते रहे हैं। तुम गवाह हो...तुमने हमें देखा है। यहां वह बैठती थी...मैं यहां बैठता था।

बेयरा : सही है। छह दिनों तक वह शहर से बाहर थे।

पहला व्यक्ति : (जिसने अब तक कॉफी समाप्त कर ली है।) भई, मैं छह दिनों मैडिकल चेकअप के लिए अस्पताल में था। मुझे ब्लड प्रेशर की शिकायत है। सुबह से दोपहर तक 'लो' और दोपहर से आधी रात तक 'हाई' मुझे नींद नहीं आती। तब मैं यौगिक क्रिया द्वारा ब्लड प्रेशर को बदल देता हूं! सुबह से दोपहर तक 'हाई' और दोपहर के बाद 'लो', फिर मैं सोता हूं।

दूसरा व्यक्ति : बन्द करो यह अपनी बकवास।...मुझे यहां बैठकर उससे बात करनी है।



'कॉफी हाउस में इन्तजार' का एक दृश्य। बायें से—दूसरा पुरुष (ओम पुरी), बेयरा (सुशील चौधरी) और पहला पुरुष (नसरुद्दीन शाह)।

पहला व्यक्ति : बेयरा ! साहब क्या कह रहा है ?

बेयरा : साहब अपनी गर्ल फ्रेंड का इन्तज़ार करना मांगता है। गर्ल फ्रेंड ! ···

दूसरा व्यक्ति : (क्रोध से) मुझे यहां बैठना है। हट जाओ···छोड़ दो ! ···

दोनों व्यक्तियों में कुर्सी के लिए युद्ध। बेयरा दौड़कर मेज़ पर से कप-प्लेट और गिलास उठाकर तेज़ी से चला जाता है। मेज़ गिर गई है। कुर्सी अब भी पहले व्यक्ति के हाथ में है। दूसरा व्यक्ति चोट खाकर नीचे गिरा है। बेयरा हाथ में दो गिलास पानी लिये आता है।

बेयरा : सज्जन पुरुष ने आप लोगों को शीतल जल पिलाने के लिए कहा है। जिसे ज़्यादा चोट आई है वह थोड़ा रुक कर पिएगा, जिसे कम आई है वह फौरन पिए।

पहला व्यक्ति पानी पीता है।

पहला व्यक्ति : आपके पास सिगरेट होगी···।

दूसरा व्यक्ति सिगरेट का पैकट उसके मुंह पर फेंकता है। वह लेकर सिगरेट मुंह में लगाता है।

पहला व्यक्ति : (उठकर कुर्सी पर बायां पैर रखकर) मैं स्वतन्त्रता संग्राम में लड़ा हूं। देश को आज़ाद कराने में मेरा योग है, हाथ है, पार्ट है। इन्कलाब ज़िन्दाबाद के बोल पर मुझ में खून बरसा है। भारत छोड़ो के नारे पर हमने बलिदान दिया है···।

बेयरा धीरे से ताली बजाता है।

दूसरा व्यक्ति : मैं यहां तुम्हारे लिए नहीं आया था। मुझे अगर पता होता कि यहां तुम्हारे जैसा बेहूदा आदमी बैठा है तो मैं यहां हरगिज नहीं आता। यह सच है कि मैं तुम्हारी तरह स्वतन्त्रता संग्राम में नहीं लड़ा, पर वह कोई संग्राम भी था। तुमने बलिदान दिया···जब विद्रोह ही नहीं तो संग्राम कैसा ?···

पहला व्यक्ति : अरे···स्वतन्त्रता संग्राम और कैसा होता है ! अरे···रे···रे···वाह रे वाह···मेरे मिट्टी के शेर···!

दूसरा व्यक्ति : स्वतन्त्रता संग्राम वह होता है जो नीचे से लड़ा जाता है···नीचे से ऊपर तक···। ऊपर से नीचे नहीं। जिस में मूलभूत परिवर्तन होता है···सुधार नहीं—'पावर का ट्रांसफर' नहीं। शक्ति की नई सृष्टि जो आजाद ज़मीन से पैदा होती है।

पहला व्यक्ति : अरे···रे···रे···अरे···बेयरा, इन्हें कॉफी पिला···!

दूसरा व्यक्ति : मेरा मज़ाक किया तो सिर तोड़ दूंगा···!

पहला व्यक्ति : दरअसल अभी आप को अनुभव नहीं है। आपमें इतना उत्साह है···यह काबिलेतारीफ है। और, मैं इसकी बड़ी इज़्ज़त करता हूं।

दूसरा व्यक्ति : मुझे पेट्रोनाइज़ करने की कोशिश मत करना, तुम जैसों ने हमारी जिन्दगी बरबाद की है।

पहला व्यक्ति : क्या कहा ! क्या···रुको···रुको···ज़रा, मुझे समझने दो···दरअसल मैं हाई स्कूल भी नहीं पास हूं। १९४२ में नवीं कक्षा में पढ़ता था···तभी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़ा···।

दूसरा व्यक्ति : कूद पड़े या किसी ने धक्का मार दिया !

पहला व्यक्ति : ज़रा समझने दो···समझने दो, यह बहुत अच्छा विषय है। देखिए न, कॉफी हाउस कितनी उम्दा जगह

है।···तो आपने कहा, कि मैंने आपकी ज़िन्दगी बरबाद की है। अर्थात् मैं भी कहूं, उस सज्जन पुरुष ने मेरी ज़िन्दगी बरबाद की। यह बहुत अच्छा निष्कर्ष है··· इस पर एक ज़ोरदार सौ रुपये वाली कहानी लिखी जा सकती है।

कागज़ पर तेज़ी से नोट करने लगता है। दूसरा व्यक्ति उस कागज़ को छीनकर फाड़ता है।

दूसरा व्यक्ति : तुम्हारे कल की दिलचस्पी केवल निष्कर्ष ढूंढ़ने में थी। उसी प्रक्रिया ने एक ओर सुभाष बोस को देश से बाहर निकाला, दूसरी ओर अरविन्द को योगी बनाया।

पहला व्यक्ति : यह सब मुझे लिख लेने दो, नहीं तो मैं भूल जाऊंगा।

इस बीच बेयरा दौड़ा हुआ अन्दर जाता है और तेज़ी से बाहर आता है।

बेयरा : सज्जन पुरुष ने आपसे विनम्र निवेदन किया है कि आप थोड़ा ज़ोर-ज़ोर से बोलें, ताकि वह आपकी स्पीच सुन सकें। उन्होंने आपके लिए काजू के साथ क्रीम कॉफी का आर्डर दे दिया है।

दूसरा व्यक्ति : वह आर्डर उसी के चेहरे पर दे मारो!

बेयरा : वह सचमुच बहुत सज्जन व्यक्ति हैं। उनमें ज़रा भी क्रोध नहीं है।

दूसरा व्यक्ति : मुझ में है···जाकर बोल दो उससे!

बेयरा : उन्हें सब पता है। वह सबके कल्याण के लिए हर वक्त चिन्तन करते रहते हैं।

दूसरा व्यक्ति : तू चुप रहता है कि नहीं?

बेयरा : जब तक वे यहां बैठे रहेंगे, यहीं खड़े रहने की मेरी ड्यूटी है।

दूसरा व्यक्ति : तो खड़ा रह !

बेयरा : सर, माफ कीजिए, वोलना भी मेरी ड्यूटी में शामिल है।

इस बीच पहला व्यक्ति अपने बैग से कुछ और लेरटहेड, पैड, पेपर, रसीद-बुक और मोहरदानी निकालता है। कुछ पत्र-पत्रिकाएं और हैण्डबिल भी।

पहला व्यक्ति : (**सहसा एक हैण्डबिल पढ़ता है।**) देवियो और सज्जनो! यह गहरी चिन्ता और दुःख का विषय है कि हमारी राष्ट्रीय चेतना दिनों दिन, उत्तरोत्तर, क्षीण होती जा रही है। वैयक्तिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर हमारे चरित्र का क्रमशः पतन हो रहा है। क्या परिवार, क्या घर, क्या दफ्तर, क्या शिक्षण संस्थाएं और क्या सार्वजनिक जीवन-क्षेत्र··· सर्वत्र एक इंडिसिप्लिन, इंडिसिप्लिन···ऐं···इंडिसिप्लिन का अनुवाद आप क्या करेंगे ?···

दूसरा व्यक्ति : अपना सिर !

पहला व्यक्ति : अपना सिर···ऐ बेयरा, सज्जन पुरुष से पूछो—इंडिसिप्लिन का हिन्दी अनुवाद क्या होगा ?

बेयरा तेजी से जाकर आता है।

बेयरा : सज्जन पुरुष ने कहा है यही इंडिसिप्लिन चलने दीजिए। उन्हें यह बहुत प्रिय है। इससे उनका मनोरंजन होता है।

पहला व्यक्ति : (**पढ़ता हुआ**) तो हां, सर्वत्र एक इंडिसिप्लिन छाई हुई है। इसके लिए यह परम आवश्यक है कि हम जगह-जगह, स्थान-स्थान···(सहसा दूसरे व्यक्ति की ओर

देखता है) क्यों, आपने कान क्यों बन्द कर रखे हैं? यह इश्तहार कैसा लगा आपको? यह मैंने तैयार किया है। देखिए, मुझे अभी बहुत काम करना है, घर से भागकर इसीलिए सुबह-सुबह मैं यहां आता हूं।

दूसरा व्यक्ति : आप से पहले मैं आया हूं।

पहला व्यक्ति : बन्धु, नाराज़ मत हो, हम दोनों की पीड़ा कहीं समान है। हम दोनों हमसफर हैं, हमदर्द हैं।

दूसरा व्यक्ति : मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता।

पहला व्यक्ति : ऐसा मत कहो, बात ही तो हमारा जीवन है। हम या तो व्यस्त रहते हैं या खाली रहते हैं, उसी खाली को भरने के लिए हम यहां आते हैं। इस तरह चुप मत हो। यह खामोशी मुझे घूरती है···बोलो···कुछ बोलो···। तुम तो बहुत अच्छा बोलते हो!

दूसरे व्यक्ति को स्नेह से छूता है।
वह उपेक्षा करता है।

पहला व्यक्ति : भई, मुझे बहुत काम करना है। इतना काम कि तुम उसकी कल्पना नहीं कर सकते। इस तरह मुझे अभी पांच इश्तहार और लिखने हैं। तीन के प्रूफ देखने हैं, दो के प्रिण्ट आर्डर देने हैं। ये सारे पैड रखे हैं न, ये सारी महत्त्वपूर्ण संस्थाएं हैं, मैं किसी का मंत्री, किसी का अध्यक्ष, किसी का कोषाध्यक्ष और किसी का संचालक हूं। पता नहीं, मुझे कितने-कितने पत्र लिखने हैं। यह देखो, मेरी आज की डायरी, इतने लोगों से मुझे स्वयं मिलना है। इतनी जगहों पर लोग खुद मुझ से मिलने आयेंगे। इतने लोगों को मुझे लोगों से मिलाना है।···मैं कितना व्यस्त हूं और कितनी-कितनी जिम्मेदारियां मेरे ऊपर हैं। पूछो इस बेयरा से, यहां नित्य

आने वाला वह पहला व्यक्ति मैं होता हूं और रात के सवा दस बजे यहां से जाने वाला वह आखिरी व्यक्ति मैं होता हूं···पहला और आखिरी! (कुर्सी पर बैठकर पैड पर लिखने में व्यस्त हो जाता है। लिखते-लिखते सहसा) क्या कहा था?···संग्राम···नीचे से होता है··· नीचे···याने?

दूसरा व्यक्ति : (गुस्से में डूबा है।) जूतों की ठोकरों से!

पहला व्यक्ति : (लिखता हुआ) जूतों की ठोकरों से। (फिर रुकता है।) नीचे से ऊपर···और ऊपर से नीचे···इन दोनों में कुछ फर्क है क्या?

दूसरा व्यक्ति : इस फर्क के अनुमान के लिए आपको शीर्षासन करना होगा!

पहला व्यक्ति : सच!···ओह तभी महापुरुष लोग हर सुबह शीर्षासन किया करते थे···जरूर इसमें कोई रहस्यशक्ति है। मैं अभी करता हूं।

शीर्षासन करने का प्रयत्न, वार-बार गिरता है। बेयरा ऊपर टांग संभालता है।

(घबरा जाता है) ओह, सारी दुनिया उलटी दिखाई पड़ रही है। जो ऊपर था वह नीचे हो गया, जो नीचे था वह ऊपर हो गया।

दूसरा व्यक्ति : और बीच में क्या है?

पहला व्यक्ति : (त्रस्त होकर) केवल शून्य···केवल शून्य। छोड़ दो, छोड़ दो मुझे। छोड़ दो! (घबराकर खड़ा हो जाता है, सांसें फूल रही हैं।) बेकार की बातें हैं ये। मुझे इन से क्या मतलब! मुझे कितना काम करना है। मैं तुम्हारी तरह बेकार नहीं। मेरे जीवन का अब भी एक

लक्ष्य है···मुझे अब भी आशा है। प्लीज़, एक सिगरेट दीजिए। (मुंह में पेन्सिल लगा लेता है। इसे सिगरेट समझ कर पीता है और लिखने लगता है।)

दूसरा व्यक्ति : (बेयरा से) आज कॉफी हाउस में इस तरह चौगुनी भीड़ क्यों है ?

बेयरा : सर, आधे लोग तो वही हैं जो यहीं रोज़ बैठते हैं, शेष लोग नए हैं। कल से ये लोग भी बैठने लगेंगे। सर, मतलब यह कि···आज दफ्तरों, स्कूल कालेजों में स्ट्राइक है।

दूसरा व्यक्ति : हम दोनों ने कल यहीं मिलबैठने का वायदा किया था। वह आएगी तो कहां बैठेगी···? तुम्हें पता होना चाहिए, वह मामूली लड़की नहीं है।

बेयरा : सर, वह बाहर सड़क पर आकर ही खड़ी हो गई होगी।

दूसरा व्यक्ति : वह किसी की परवाह नहीं करती। उसे किसी का डर नहीं है।

बेयरा : सर, वह कॉफी हाउस के भीतर आने की कोशिश कर रही होगी।

दूसरा व्यक्ति : उसे कोई नहीं रोक सकता !

पहला व्यक्ति : (चिल्लाता है।) डोंट डिस्टर्ब, देखते नहीं, मैं इस वक्त कितना व्यस्त हूं !

बेयरा : पर भीतर वह सज्जन पुरुष खाली बैठा है—मुझे उनके लिए बोलना ही होगा। यह नौकरी मुझे उन्हीं की वजह से मिली है।

दूसरा व्यक्ति : वह इधर से आएगी।

बेयरा : नहीं, इधर से, हाल में···से होती हुई !

दूसरा व्यक्ति : क्यों ?

बेयरा : इधर वह सज्जन पुरुष बैठा है !

दूसरा व्यक्ति : कहां बैठा है ? कौन है वह ? क्या है ? क्यों है ?

बेयरा : (रोकता है) सर, नहीं नहीं, आप उधर नहीं जा सकते !

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) ज्यादा बकवास किया तो उठाकर फेंक दूंगा।

बेयरा : सर, मार-पीट करने के लिए उधर उतना बड़ा हाल है।

दूसरा व्यक्ति बायें दरवाज़े पर खड़ा होकर हाल की ओर देखता है। हाल में झगड़ा हो रहा है। मार-पीट। एक प्लेट दूसरे व्यक्ति के पेट पर लगती है। वह चीख पड़ता है।

दूसरा व्यक्ति : (दर्द से) हाय मार डाला ! (बेयरा से) बत्तमीज़, तू यह दरवाज़ा बन्द क्यों नहीं रखता ?

बेयरा : सर, यह आप ही लोगों का कॉफी हाउस है।

दूसरा व्यक्ति : मुझे खामखाह इतनी चोट लगी है !

वह दरवाज़ा बन्द करना चाहता है। बेयरा उसे रोकता है।

बेयरा : मैं कहता हूं सर, यह दरवाज़ा इसी तरह खुला रहेगा।

दूसरा व्यक्ति : (क्रोध से) बत्तमीज़···नालायक !

पहला व्यक्ति : अ-ह ह ! मेरा वह तीसरा इश्तहार पूरा हो गया ! (पढ़ने लगता है।) पालतू कुत्तों की शानदार, भव्य प्रदर्शनी। आइए···आइए···बड़ी से बड़ी तादात में आइए। अपने पालतू कुत्तों को पकड़े हुए आइए ! ···

दूसरा व्यक्ति : अब दरवाज़ा बन्द होगा या नहीं ?

पहला व्यक्ति : रामलीला मैदान में करीब ढाई हज़ार कुत्तों के आने

की आशा है। (पढ़ते हुए) कुत्ता वह पहला जानवर है, जो मनुष्य के समीप आया। हज़ारों वर्ष से यह दोनों जीव साथ-साथ रहते आए हैं। दोनों ने समान रूप से एक-दूसरे को प्रभावित किया है। कुत्ते का हमारा सांस्कृतिक जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। चन्द्रलोक की परिक्रमा करने वाला पहला जीव यही कुत्ता था। कुत्ता एक धार्मिक जीव है···यह भौंकता भी है और पूंछ भी हिलाता है! (जैसे कुत्ते को बुलाया जाता है वैसे बेयरे से कहता है।) जा, एक कप कॉफी ला!

बेयरा : माफ कीजिए सर, मैं कुत्ता नहीं हूं। (बेयरा जाता है।)

दूसरा व्यक्ति : तुम्हें एक इश्तहार के कितने पैसे मिलते हैं?

पहला व्यक्ति : वह इस बात पर मुनहसर करता है कि इश्तहार का विषय क्या है।

दूसरा व्यक्ति : मसलन इसी कुत्ते के विषय का···?

पहला व्यक्ति : इसका पेमेंट तो सबसे ज़्यादा है···मसलन यही एक हफ्ते कॉफी हाउस में आने-जाने का पूरा खर्चा।

बेयरा आता है। दूसरा व्यक्ति दरवाज़े पर खड़ा उस सज्जन पुरुष को देखता है।

बेयरा : हां सर, वहां खड़े-खड़े आप उन्हें बेशक निहारिए··· देखिए···घूरिए···जो चाहें कीजिए।

दूसरा व्यक्ति : (नफ़रत से) छी···छी···इस तरह दोसा खा-खाकर अपने चारों ओर घिरे हुए लोगों के बीच बात कर रहा है जैसे चभर-चभर कोई कुत्ता खा रहा हो और कचर-कचर बेसिर-पैर की बातें कर रहा हो!

बेयरा : सर, धीरे-धीरे। वह सज्जन पुरुष इस वक्त प्रेस कांफरेंस कर रहे हैं!

दूसरा व्यक्ति : इस तरह चभर-चभर खाते हुए प्रेस कांफरेंस ?

बेयरा : हां, सर, प्रेस कांफरेंस—फूड प्रोब्लम पर !

दूसरा व्यक्ति : वह इतने गन्दे ढंग से खा-खाकर बातें कर रहा है कि मैं आज से अब कभी दोसा नहीं खा पाऊंगा।

बेयरा : इन्कलाब ज़िन्दाबाद !

पहला व्यक्ति : (सहसा लिखना बन्द कर) क्या कहा ? क्या कहा, फिर से तो कह, क्या कहा, फिर से तो कह !

बेयरा : हां क्या कहा ! पता नहीं क्या कहा, अभी मैंने क्या कहा था···हां क्या कहा था ?

दूसरा व्यक्ति : (दरवाजे पर) चला जा यहां से ! भाग जा !

पृष्ठभूमि में लोगों की हंसी।

पहला व्यक्ति : (बैयरा के संग सोचता-सा) तूने अभी कुछ कहा था। दो शब्द थे। बहुत अच्छे शब्द थे। तूने हाथ उठाकर कहा था···तेरे होंठ फड़क पड़े थे···तेरी आंखें चमकी थीं।

बेयरा : वह दरअसल मैंने कल रात फिलिम में देखा था सर, वहीं दोनों शब्द कहकर हीरो-हिरोइन के संग गाने लगा था !

पहला व्यक्ति : वह गाना क्या था···बता, फिर वह शब्द मुझे याद आ जाएगा।

बेयरा : कुछ इसी तरह था···तनु डोले रे, मनु डोले रे···

पहला व्यक्ति : (सोचने में डूब गया है) आगे···इसके आगे और क्या है ?

बेयरा : सर, मुझे शरम लगता है।

पहला व्यक्ति : (जैसे कोई स्वप्न देख रहा हूं।) उन्नीस सौ बयालीस के वे दिन···हम लोग अपने नेता के साथ जुलूस में जा रहे थे। वही शब्द आगे···वही शब्द पीछे···वही शब्द

आगे-पीछे···पूरे वातावरण में···वही शब्द। क्या था वह शब्द···तेरे मुंह से वही शब्द अभी-अभी निकला था···बता···याद···कर उस शब्द की मुझे सख्त ज़रूरत है···मुझे अभी लिखना है और उसमें उस शब्द का इस्तेमाल करना है !

दूसरा व्यक्ति : उसकी टेबलपर कई किताबें रखी हुई हैं। उन किताबों में शायद वह शब्द हो !

बेयरा : नहीं सर, वे किताबें ज्योतिष और हस्तरेखा की हैं।

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) उसकी टेबल उलट दो, तब शायद उसके नीचे वह किताब मिल जाए···जिसमें वह शब्द हो !

पहला व्यक्ति : तुम्हें भी वह शब्द भूल गया ?

दूसरा व्यक्ति : मुझे अब तक याद था···उस पिछले सेकंड तक, जब मैं यहां आकर खड़ा हुआ, पर उसे देखते ही मैं सब कुछ भूल गया···सबके बीच अकेले उस तरह खाना···और खाते-खाते उसका हर क्षण बोलते रहना ! (रुककर) एक मिनिट के लिए मुझे उसके पास जाने दो···मैं उसकी टेबल उलट दूंगा···उसे जमीन पर गिराकर उसकी कुर्सी छीन लूंगा···

बेयरा : सर, यह नहीं हो सकता।

पहला व्यक्ति : क्या कहा ?···यह नहीं हो सकता ?

बेयरा : हां सर, उस सज्जन पुरुष के पास यह सज्जन साहब नहीं जा सकते।

दूसरा व्यक्ति : (चिल्ला पड़ता है) मेरा नाम सज्जन नहीं !···मैं इस संज्ञा से नफरत करता हूं।

बेयरा : अच्छा, अच्छा, मैं जब तक यहां हूं यह साहब उस सज्जन पुरुष के पास नहीं जा सकते।

दूसरा व्यक्ति : मैं तेरा सिर तोड़ दूंगा।

भूल जाए, स्वदेशी... स्वदेशी...यानी इम्पोर्टेड...!

पहला व्यक्ति : हमने तब विदेशी माल में आग लगाई थी (दूसरे व्यक्ति से) तुम लिखते जाओ, मैं बोल रहा हूं...मैं बोलता जाऊंगा...एका कि सब कुछ भूल जाऊंगा।...स्वदेशी ...स्वदेशी...स्वदेश मन है, स्वदेश है। स्वदेश नाम की तब एक लड़की भी थी।

बेयरा : स्वदेश प्रसाद मेरे पिता का नाम था।

पहला व्यक्ति : तब भारतवर्ष ही स्वदेश था।

दूसरा व्यक्ति तेजी से लिखता जा रहा है। पैड के कागज भरते जा रहे हैं, वह फाड़-फाड़कर नीचे फेंकता जा है। पहला व्यक्ति बटोरता जाता है...समेटता है।

पहला व्यक्ति : हमारे उस स्वदेश में कैसे-कैसे नेता थे ! उन्होंने कितने कितने बलिदान दिए ! सारा स्वदेश एक महान् प्रेरणा में बंधा था...चारों ओर एक प्रकाश फूट रहा था...। ओह तुम लिखा क्यों नहीं रहे ? सारा गुड़ गोबर कर दिया...यह एक सम्पादकीय था...आज शाम को इसे मैं बीस रुपये में बेच देता...।

दूसरा व्यक्ति : (उठता हुआ) तुम इसे केवल बीस रुपये में बेचोगे। और यह देश ?

पहला व्यक्ति : सावधान, मैं अपने देश के गौरव के खिलाफ कुछ भी सुनना पसन्द नहीं करूंगा।

दूसरा व्यक्ति : इस देश की क्या कीमत है, इसका सही-सही हिसाब जोड़ा जा चुका है, बल्कि आधी रकम एडवांस में भी जा चुकी है।

पहला व्यक्ति : तेरी गर्ल फ्रेंड नहीं आई अभी तक, तेरा दिमाग ठीक

चढ़ तो नहीं गया ?

दूसरा व्यक्ति : अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में इसका भाव खुल चुका है। सट्टेबाज़ शेयर मार्केट में चिल्ला रहे हैं।

पृष्ठभूमि में अनेक स्वरों में 'आए राम', 'गए राम', 'गए राम !'

पहला व्यक्ति : (चीख पड़ता है।) चुप करो···चुप करो !

एक ठंडी खामोशी खिंच गई है।

बेयरा : सर, भीतर वह आ गई है !

दूसरा व्यक्ति : वह आ गई है !

बेयरा : गर्ल फ्रेंड !

दूसरा व्यक्ति : मिनी···! (दौड़ता है, दरवाजे पर रुक कर देखता है और पुकारता है।) मिनी !

बेयरा : सर, ज़रा धीरे पुकारिए, सज्जन पुरुष उससे कुछ बात कर रहे हैं।

दूसरा व्यक्ति : (गुस्से से) क्या बकता है ?···मिनी, सुना मिनी ! (रुक कर) ओह ! उसके लिए अब कुर्सी का इन्तज़ाम करना ही होगा। (आवेश में) मैं उसे कुर्सी से धक्का देकर अपनी दोस्त के लिए कुर्सी लाने जा रहा हूं।

बेयरा दौड़ कर पकड़ लेता है।

बेयरा : (पैर पकड़ कर) नहीं नहीं, सर, ऐसा करना गलत होगा। चारों ओर उपद्रव फैल जाएगा।

दूसरा व्यक्ति : अब मेरे बर्दाश्त के बाहर है।

पहला व्यक्ति : (दौड़कर रास्ता रोकता है।) हां, यह सही कहता है। सज्जन पुरुष को मत हटाओ। नहीं तो महा जुल्म हो जाएगा। चारों ओर केयास फैल जाएगा। यह सारी व्यवस्था भंग हो जाएगी। हमारा यहां रहना गैरमुमकिन हो जाएगा।

दूसरा व्यक्ति : कौन है तू ?

पहला व्यक्ति : मैं···मैं···मैं···मैं···एक व्यक्ति हूं।

दूसरा व्यक्ति : तू कुछ और है !

पहला व्यक्ति : मैं तुम्हारी ही तरह एक व्यक्ति हूं, इस देश का नागरिक हूं।

दूसरा व्यक्ति : नहीं, तू अंग्रेज़ है ! वही अंग्रेज़, जिससे शायद तू लड़ा था। उस अजीब लड़ाई ने तुझे उलटे वही बनने को मजबूर कर दिया जिससे तू लड़ रहा था। वह इतना आश्चर्यजनक दुश्मन था कि तू उसी के अनुसार संग्राम करने को विवश हुआ। तेरे संग्राम की सारी नीति उसी दुश्मन के हाथ में थी।

पहला व्यक्ति : तूने देखा था ?

दूसरा व्यक्ति : देख रहा हूं।

पहला व्यक्ति : असम्भव !

दूसरा व्यक्ति : मैं तेरा ही वर्तमान हूं···जैसे कि तू मेरा भूत है। (**विराम**) यहां की सारी लड़ाई व्यक्तिगत है···बिल्कुल निजी स्तर पर। बहुत छोटी-सी बात को हम बड़े रूप देने के आदी हैं। और बड़ी बात को हम न देख पाने के अभिशप्त हैं।

बेयरा : सर, तभी आप उस कुर्सी के लिए आज इतना परेशान हैं। कल से मैं यहां दो कुर्सी रखूंगा।

पहला व्यक्ति : रुको रुको, मुझे याद कर लेने दो···कितने पते की बात है यह, (**दौड़कर लिखने लगता है**) हम जिसके खिलाफ लड़ते हैं, एक दिन वही खुद बन जाते हैं···और···और क्या कहा ? (**सहसा**) ओह···सब कुछ मैं कितनी जल्दी भूल जाता हूं···लगता है मेरा लिवर खराब है।

बेयरा : सर, इस उमर में गेहूं नहीं खाना चाहिए।

पहला व्यक्ति : वह शब्द क्या है, सोच, तूने क्या कहा था ?

वेयरा : सर, फिलिम में है···जयहिन्द टाकीज में वह फिलिम चल रही है।

पहला व्यक्ति : मुझे अभी ज़रूरत है अभी, अपने लेख में उसे डालना है, इन्हें गर्ल फ्रेंड से उसी विषय पर बात करनी है।

दूसरा व्यक्ति : तुम लोग मुझे जाने क्यों नहीं देते ? मैं उस सज्जन पुरुष को कुर्सी से उलट दूंगा ! फिर वह शब्द अपने आप फूटेगा !

पहला व्यक्ति : (सोचता है) कुर्सी उलटने से ही वह शब्द फूटेगा तो मूल वही कुर्सी है। (लिखने लगता है) यह सारा चक्कर उसी के लिए है। (दौड़ता है) नहीं-नहीं, आप उस सज्जन पुरुष के पास नहीं जा सकते। कम से कम वह आदमी सीधा तो है, मैं उसे इतने दिनों से जानता हूं। अगर तू ने उसे कुर्सी से नीचे गिराने की कोशिश की तो उसके बाद यहां इस तरह मारपीट, लूट, डाके शुरू होंगे कि तू यहां खड़ा नहीं बचेगा।

दूसरा व्यक्ति : याद करो स्वतन्त्रता संग्राम के वे दिन···ठीक ऐसा ही उसने भी कहा था, कि हम स्वेज़ कनाल पार नहीं कर पाएंगे कि···।

दोनों मूर्तिवत् चुप हो जाते हैं।

वेयरा : (घबराया हुआ) कि···कि···कि···(सहसा दौड़ता है) यस सर !

दायीं ओर जाता है। दोनों व्यक्ति गुस्से से निःशब्द बातें कर रहे हैं। पहला व्यक्ति सत्याग्रही चेष्टाएं करता है दूसरा व्यक्ति क्रोध भरी आवेशजन्य मुद्राएं दिखा रहा है।

बेयरा थोड़ी देर बाद आता है।

बेयरा : सर···ओ मिस्टर ! ओ बाबू लोग···सज्जन पुरुष बहुत परेशान हैं, आप लोग इस तरह अचानक चुप क्यों हो गए ? आप लोगों की बातें, आप लोगों का गुस्सा, आप लोगों का सारा व्यवहार उन्हें बहुत प्रिय है। उनका प्रेस कांफरेंस खत्म हो गया है। स्ट्राइक वालों का एक डेलिगेशन उनसे मिलने आया है। वह भी थोड़ी देर में चला जाने वाला है। आप लोग बोलकर बातें कीजिए और सर···सर···ओ सर !

दोनों व्यक्ति उसी तरह बेयरा को निःशब्द पूछते हैं कि क्या उनके मुंह से बोल नहीं निकल रहा है।

बेयरा : अरे आप लोग बोल नहीं पा रहे हैं ? जी नहीं, मुझे तो कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा है। जी···कुछ नहीं···कोई आवाज़ नहीं। अच्छा अच्छा···जरा ज़ोर से हंसिए, शायद कुछ सुनाई पड़े।

दोनों हंसते हैं, पर वही निःशब्द।

बेयरा : अरे खिलखिला कर हंसिए···अरे, ठहाका मारकर हंसिए !

दोनों हंसते हैं।

बेयरा : (परेशान) नहीं, कुछ नहीं, कोई आवाज़ नहीं···कोई एक शब्द भी नहीं···क्या कहा ? मैं बहरा हूं, जी नहीं, आप दोनों गूंगे हो गए। आप के मुंह से कोई आवाज़ ही न निकले तो मैं क्या सुनूं ! देखिए न, दायीं ओर से आवाज़ आ रही है···मैं उसे सुनना भी न चाहूं तो मुझे सुनाई दे रही है। (कान लगाकर सुनता है) सज्जन पुरुष ने अभी आपकी फ्रेंड से कहा है, किसी

एक बड़ी नौकरी के लिए। (फिर सुनता है) ओह वह अपने फ्यूचर कैरियर के बारे में बात कर रही है। (कान लगाता है) उसके साथ इंटरप्रेटर बनकर विदेश-यात्रा पर जाएगी।

दूसरा व्यक्ति लगातार प्रयत्न करता हुआ इस बिन्दु पर आकर चीख पड़ता है।

दूसरा व्यक्ति : नहीं-नहीं, नहीं !

पहला व्यक्ति निःशब्द बोल रहा है।

बेयरा : ओह, अब विश्वास हो गया कि मैं बहरा नहीं हूं, मुझे भी विश्वास था कि आप लोग गूंगे नहीं हो सकते। (सहसा कान लगाकर सुनता है।) ओह ! सज्जन पुरुष कहता है कि हमें नित्य अपनी डायरी लिखनी चाहिए। (फिर सुनता हैं) और डायरी वह होनी चाहिए जिसके हर पृष्ठ पर किसी महापुरुष का धर्म-सन्देश छपा हो। (सुनता है) महापुरुष वही जो अपने व्यक्तिगत विश्वास के लिए लाखों करोड़ों आदमी की जान की ज़रा भ परवाह नहीं करता। (सुनता है) भावना प्रधान व्यक्ति ही महान होता है।

पहला व्यक्ति भी इस बिन्दु पर बोलने लगता है।

पहला व्यक्ति : नहीं, नहीं, नहीं, उसे कुछ पता नहीं। वह सब कुछ भूल गया है। वह अपनी बेहोशी में सो रहा है। अन्याय, अत्याचार का घड़ा मुंह तक भर गया है। लोग अब बर्दाश्त नहीं करेंगे। हर चीज़ की हद होती है। अब रात बीतने को है। नया सूरज उगने को है। हमारे बीच में से कोई एक सहसा उठ खड़ा होगा, और''और

और···और···।

बेयरा : और ··और···और···।

वही निःशब्द हंसी। वह स्वयं हंसने लगता है। उसी तरह निःशब्द वह भी बोलता है। न बोल पाने की असमर्थता पर बेहद दुखी होता है। संकेत से कह रहा है कि उसकी नौकरी चली जाएगी।

पहला व्यक्ति : अरे, तुझे क्या हो गया ?

दूसरा व्यक्ति : बस, इसे इसी तरह गूंगा रहने दो। इससे बात मत करो। अच्छा है, तेरी नौकरी छूट जाए···तू उसका आदमी था न ! जा, अब उसी के पास···हम से हाथ मत जोड़।···मुझे तुझ से कोई हमदर्दी नहीं।

बेयरा पहले व्यक्ति के पैर पर गिरता है।

पहला व्यक्ति : मुझे भी तुझ से कोई हमदर्दी नहीं (सहसा रुककर) शायद हम दोनों में भी कोई हमदर्दी नहीं है। उन दोनों में भी नहीं···। यह (बेयरा) महापुरुष है···इसमें अभी कुछ चमका है। यह अपनी गूंगी वाणी में कुछ कह रहा है···उसने हमारे भीतर से एक दूसरे के लिए हमदर्दी छीनकर हमें अलग-अलग बांट दिया है।

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) यह सारा फ्राड है, मैं उसे खत्म करके रहूंगा।

बेयरा इस विन्दु पर ठहाका मार कर हंस पड़ता है।

बेयरा : (उसी हंसी में) तुम दोनों · (पहले व्यक्ति से) तुम्हें कोई महापुरुष चाहिए (दूसरे व्यक्ति से) और तुम्हें

एक गर्ल फ्रेंड चाहिए···और मुझे वही सज्जन पुरुष···
ज़िन्दाबाद···!

भीतर भागता है।

पहला व्यक्ति : ज़िन्दाबाद···इसके पहले वाला शब्द क्या है ?

तेज़ी से दौड़ता है और सोचने लगता है। दूसरा व्यक्ति उसे बड़े गौर से देखता है। तभी बेयरा आता है। उसके हाथ में कुछ सामान है।

बेयरा : देखिए···सुनिए···सज्जन पुरुष ने आप दोनों के लिए यह उपहार दिया है। आप बड़े हैं, महान में विश्वास करते हैं, इसलिए आप को भेंट है यह एक महापुरुष की आत्मकथा। (**पहले व्यक्ति को भेंट करता है**) और आप बड़े उत्साही हैं। आपके विद्रोह भाव से सज्जन पुरुष बहुत प्रभावित हुए हैं। (**डिब्बा खोलता है**) आप के लिए उन्होंने यह मिनी सूट भेजा है।

दूसरा व्यक्ति : मिनी सूट, यह क्या बत्तमीजी है !

बेयरा : आपकी गर्ल फ्रेंड को सज्जन पुरुष ने मिनी साड़ी प्रेज़ेन्ट की है।

दूसरा व्यक्ति : (**फेंकता है**) ले जाओ, उसके सिर पर फेंक दो !

बेयरा : सज्जन पुरुष ने कहा है, यदि आप एक मिनिट में इस सूट को पहन कर तैयार हो जाएंगे तो आप भीतर जा सकते हैं।

दूसरा व्यक्ति नफरत से उस मिनी सूट को पहनने का प्रयत्न करता है।

बेयरा : (**पहले व्यक्ति से**) आप इस पुस्तक में वही शब्द ढूंढ़िए। यदि एक मिनिट में ढूंढ़ लेंगे तो अन्दर जा सकते हैं।

एक सूट पहन रहा है। दूसरा पुस्तक

में कुछ ढूंढ रहा है।

वेयरा : जल्दी कीजिए, वह एक मिनिट खत्म हो जाएगा !

दूसरा व्यक्ति : यह मुझसे नहीं पहना जाता।

पहला व्यक्ति : इस पुस्तक में मुझे कुछ नहीं सूझ रहा है।

वेयरा : जल्दी कीजिए···।

दूसरा व्यक्ति : इसका पहनना असम्भव है !

पहला व्यक्ति : इसके पृष्ठ कोरे हैं !

वेयरा : जल्दी कीजिए, वह एक मिनिट बीतने जा रहा है।

पहला व्यक्ति : मुझे कुछ नहीं सूझता···मैं क्या पढ़ूं ?

वेयरा : ढूंढ़िए···ढूंढ़िए। आप पहनने की कोशिश कीजिए।

पहला व्यक्ति : यहां सब कुछ निजी स्तर पर है—ऊपर-नीचे···नीचे-ऊपर···जो जिसका विरोध करता है, वह वही होना चाहता है !

वेयरा : जल्दी, जल्दी···समय खत्म हो रहा है।

वेयरा यही बोल रहा है। पहला व्यक्ति अपनी बात एक बिन्दु पर पहुंचाता है। तीनों मूर्तिवत् रह जाते हैं।

पर्दा।

० ० ०

1292

'केवल तुम और हम' का पहला प्रस्तुतीकरण 'पराग' की ओर से जानकीदेवी महिला महाविद्यालय, नई दिल्ली की छात्राओं द्वारा कालेज के मंच पर हुआ। निर्देशन : डॉ० हेम भटनागर

'कॉफी हाउस में इन्तजार का पहला प्रदर्शन सेंट स्टीफेंस कालेज, दिल्ली, के मंच पर वहां के छात्रों द्वारा प्रस्तुत हुआ। निर्देशन : सुरेश शर्मा

इसी नाटक का एक अन्य प्रदर्शन नेशनल स्कूल आफ ड्रामा, नई दिल्ली, के छात्रों द्वारा त्रिवेणी मंच पर प्रस्तुत हुआ। निर्देशन : देवेन्द्र राज 'अंकुर'

अन्य नाटक भी विभिन्न शौकिया रंगकर्मियों द्वारा सफलतापूर्वक प्रस्तुत किये जा चुके हैं।